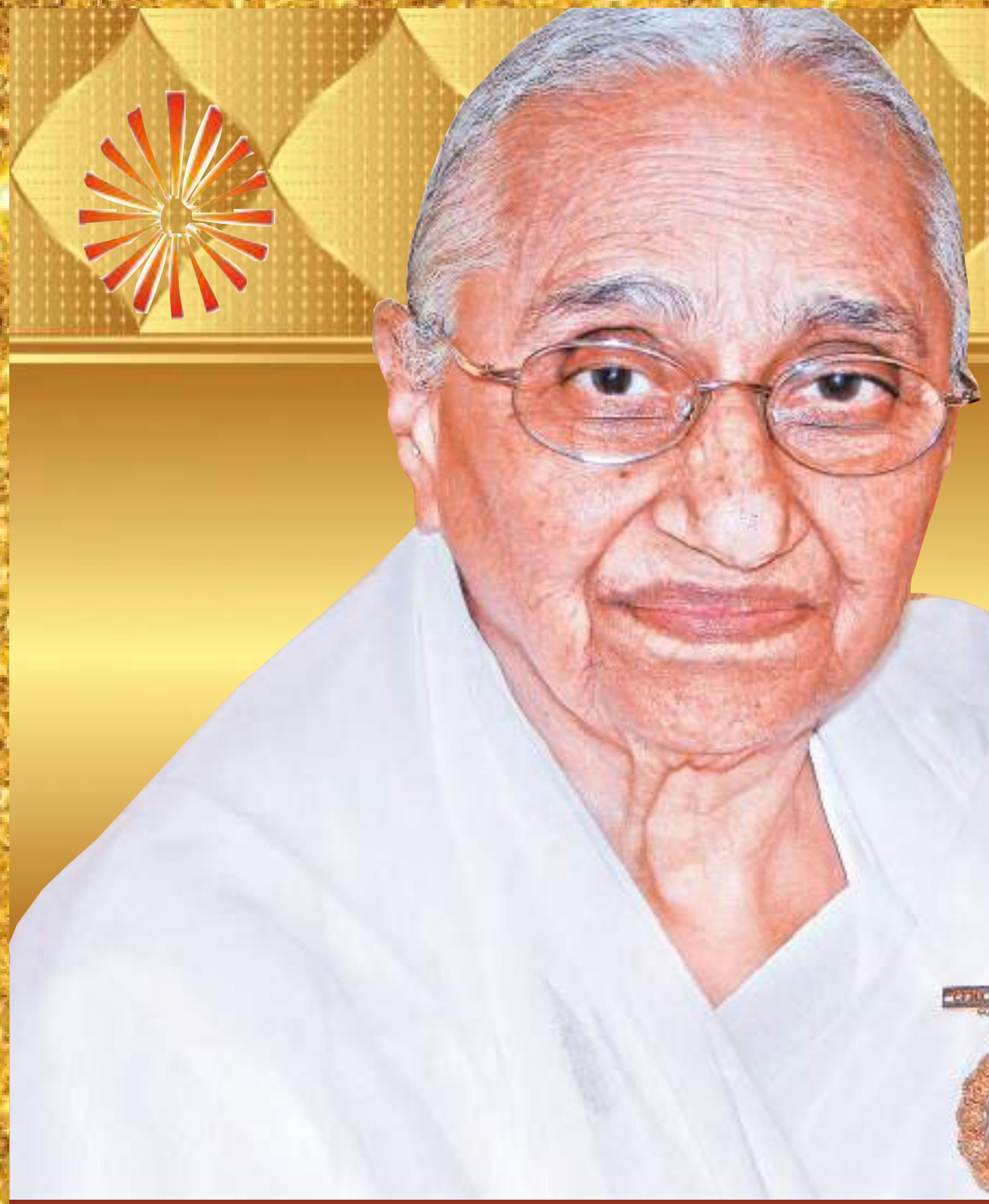
100

शताब्दी की प्रकाशमय विरासत

राजयोगिनी डॉ. दादी रतन मोहिनी जी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़



जीवन यात्रा... 1925 से अब तक का दिव्य सफर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू रोड, राजस्थान

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विश्व सेवाओं को सादर समर्पित



विशेष प्रेरणा



डॉ. बीके मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव,
ब्रह्माकुमारीज़

समन्वयक



बीके कोमल
पीआरओ, ब्रह्माकुमारीज़
एडिटर इन चीफ, मधुबन न्यूज

संपादक



बीके पुष्पेंद्र
वरिष्ठ पत्रकार व संयुक्त संपादक,
शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़

संकलन



बीके चुनेश
शिक्षा प्रभाग, शांतिवन

कला निर्देशन



भूपेंद्र दंडोतिया
डिजाइनर
इंदौर, मप्र

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के 100वें जन्मदिवस पर विशेष

ब्रह्माकुमारी परिवार की अनमोल रतन, परमात्मा की

मोहिनी



नारी शक्ति के सबसे बड़े संगठन ब्रह्माकुमारीज़ की मुखिया राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी स्थापना से लेकर आज वटवृक्ष बनने की रहीं हैं साक्षी

- युवा प्रभाग की अध्यक्षा और टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम की हैं निदेशिका
- दादी के नेतृत्व में युवाओं के लिए अनेक देशव्यापी अभियान चलाए गए, लिम्का बुक में दर्ज हुआ नाम

फैक्ट

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद में जन्म

12 वर्ष की आयु में 1937 में ब्रह्मा बाबा से मिलीं

1950 से माउंट आबू में रहकर दे रहीं हैं सेवा

50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों की हैं नायिका

5600 सेवाकेंद्र दादी के मार्गदर्शन में संचालित

1956 से 1969 तक मुंबई में दीं सेवाएं

1954 जापान में विश्व शांति सम्मेलन में किया संस्थान का प्रतिनिधित्व

100वें वर्ष में प्रवेश कर चुकीं दादीजी की आज भी राजयोग ध्यान से शुरू होती है दिनचर्या

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही लक्ष्मी बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को ज्ञान धन से रोशन करेगी। लक्ष्मी की बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह के चलते मात्र 12 वर्ष की उम्र में विश्व शांति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया। जीवन के 99 बसंत पूर्ण कर चुकीं और 100वें वर्ष में प्रवेश करने के बाद भी आज भी उतने ही उमंग और उत्साह से परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने में वह समर्पित हैं। हम बात कर रहे हैं ब्रह्माकुमारी संगठन की मुखिया, 50 हजार ब्रह्माकुमारियों की नायिका और लाखों लोगों की प्रेरणास्रोत, परम आदरणीया, शक्ति स्वरूपा, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की। दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। आपके व्यक्तित्व, गुण और विशेषताओं को देखते हुए संस्थापक ब्रह्मा बाबा ने आपको दिव्य अलौकिक नाम रतनमोहिनी दिया। ब्रह्मा बाबा ने जिस उम्मीद और भरोसे के साथ आपको जो भी जिम्मेदारी सौंपी आप उसमें सौगुणा खरी उतरीं।

राष्ट्रपति ने किया आध्यात्मिक सशक्तिरण से स्वर्णिम भारत का उदय सम्मेलन का उद्घाटन









राजयोग मेडिटेशन ने मुझे जीवन में नई दिशा प्रदान की: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

आबू रोड/राजस्थान| ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर जो आध्यात्म शक्ति प्राप्त होती है उसका ज्वलंत उदाहरण यह है कि राजयोग से मुझे जीवन में नई दिशा मिली है। उक्त उद्गार राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेकों संस्थान कार्यरत हैं लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसा संस्थान है जो बहनों द्वारा संचालित किया जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सफलता यह सिद्ध करती है कि अवसर मिलने पर महिलाएं पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं।

प्रधानमंत्री ने लिया दादी रतन मोहिनी से आशीर्वाद

मैं जब भी ब्रह्माकुमारीज़ में आता हूं तो एक नई आध्यात्मिक अनुभूति होती है: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

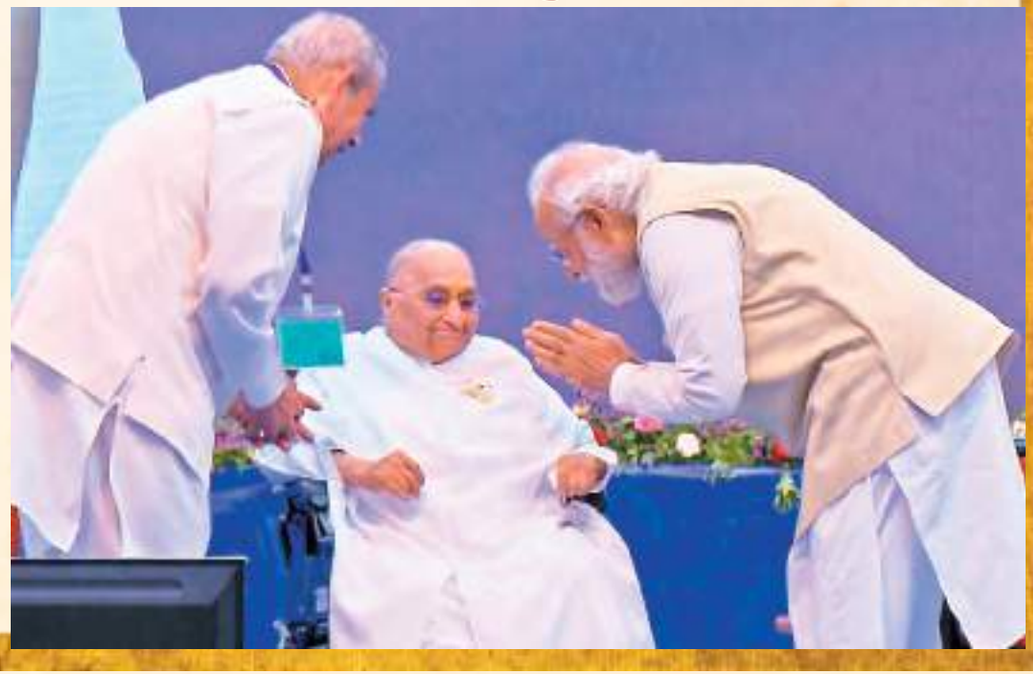




मोदी बोले- आज ब्रह्माकुमारीज़ जन आंदोलन बन गया है, आपने राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान से मेरे विश्वास को कई गुना कर दिया है

आबू रोड/राजस्थान| प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन आबू रोड में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मैं जब भी ब्रह्माकुमारीज़ में आता हूं तो आपके बीच एक नई आध्यात्मिक अनुभूति होती है। परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद और दादियों के स्नेह में लगातार वृद्धि होती है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सामाजिक कल्याण के लिए कई अभियान चलाए जा रहे हैं। स्वच्छता अभियान में दादी जानकी जी ने स्वच्छता ब्रांड एंबेसेडर के रूप में और बहनों ने कमान संभालकर लोगों को प्रेरित किया है। ब्रह्माकुमारी बहनें स्वास्थ्य जागरूकता से लेकर जल जन अभियान, आजादी के अमृत महोत्सव, नशा मुक्त भारत अभियान में प्रेरणास्त्रोत बनकर सामाजिक कल्याण में जुटी हैं।









ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की ओर से चलाए गए आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान ने तोड़े सारे रिकार्ड

दादी के नेतृत्व में देशभर में रिकार्ड कार्यक्रम आयोजित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व परिवर्तन में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की सेवाओं को सराहा

सेवा अस्माकं धर्म: की पृष्ठभूमि, सर्वे भवंतु सुखिन: की भावना और वसुधैव कुटुम्बकम् की नींव पर आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर महा अभियान की संकल्पना को आकार दिया गया। स्वर्णिम भारत की छवि को धरातल पर साकार करने के लिए मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में 15 लाख से अधिक राजयोगी भाई-बहनों ने अमृत काल के इस महायज्ञ में स्वयं को झोंक दिया। महाअभियान के तहत 15 हजार कार्यक्रम के लक्ष्य के साथ आगे बढ़े थे लेकिन तपस्वियों के अपार उत्साह के परिणामस्वरूप एक साल में 55 हजार से अधिक कार्यक्रम कर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इतिहास में नया अध्याय जोड़ दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20 जनवरी 2022 को अभियान का वर्चुअली शुभारंभ किया। समापन पर अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में ग्लोबल समिट आयोजित की गई। इसमें विश्वभर से जानी-मानीं शख्सियतों ने भाग लिया।



03 करोड़ लोगों तक पहुंचाया देशभक्ति और आध्यात्म का संदेश

15 लाख से अधिक बीके भाई-बहनों ने सेवा में बढ़ाए हाथ

55 हजार से अधिक रिकार्ड कार्यक्रम आयोजित

05 हजार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के बैनर तले हुए आयोजन

15 हजार कार्यक्रम देशभर में करने का रखा था लक्ष्य

30 से अधिक देशव्यापी अभियान देशभर में चलाए गए

- लोगों में देशप्रेम की भावना का जागरण करना।
- मेरा भारत, स्वर्णिम भारत, सशक्त भारत का संदेश।
- भावी पीढ़ी और राष्ट्र निर्माण।
- युवाओं में चरित्र निर्माण।
- खुशहाल, संपन्न अन्नदाता।
- युवाओं को नशामुक्ति का संदेश।
- मेरा भारत-भ्रष्टाचारमुक्त, अपराध मुक्त भारत।
- सांप्रदायिक एकता, सौहार्द्र और शांति का संदेश देना।

दादी जी से अनुशासन, दृढ़ता और अपनी स्थिति को एकरस रखने की प्रेरणाएं मिलती हैं

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मोहिनी दीदी, न्यूयॉर्क
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

हमारी अति प्यारी आदरणीया रतन मोहिनी दादी जी 100वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। दादी जी बहुत महान आत्मा हैं जो कि इतने वर्षों तक तन व मन से स्वस्थ रहीं और सदा ही अपने को एक अच्छा स्टूडेंट मानकर चले। अच्छे स्टूडेंट की तरह विशेष रूप से दोनों ही बातें एक तो स्टडी बहुत निरंतर करती थीं और दूसरा उस स्टडी को व्यावहारिक रूप में लाना, धारणा रूप में लाना और अपनी जीवन को पूर्ण रूप से ईश्वरीय अनुशासन के अनुसार चलाना ये उनकी विशेषता रही। दादी जी का नाम रतन है और अपने व्यक्तिगत अनुभव के अनुसार हम कहेंगे कि दादी जी वास्तव में हमारे इस ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अमूल्य रतन हैं। दादी जी उदाहरण हैं। दादी जी संग में रहकर दूसरे के अन्दर भी अनुशासन, दृढ़ता और अपनी स्थिति को सदा निरंतर और एकरस रखना यह सब प्रेरणाएं मिलती है।



आप बचपन से ही लगन से ईश्वरीय सेवाएं करती रहीं। दादी प्रकाशमणि जी के साथ जापान में आयोजित कॉन्फ्रेंस में जाने का अवसर मिला तो वहां जाकर भी रतन मोहिनी दादी जी ने बहुत सेवाएं की। इसके बाद दादी जी ने लंदन में बहुत समय तक रहकर बहुत अच्छी सेवाएं की। दादी जी ने विश्वभर में कई देशों में ईश्वरीय सेवाएं की। देश-विदेश में दादी जी की सेवाएं बहुत ही महिमा योग्य हैं, उदाहरणमूर्त हैं।

हम सभी की अति स्नेही आदरणीया रतन मोहिनी दादी जी को उनके 99 वर्ष पूरे होने पर हम सभी बहुत-बहुत बधाइयां देते हैं। हमारी शुभकामना है कि आप पूरे संगम तक हम सभी के साथ रहें, आपकी दिव्य मुस्कान और दिव्य जीवन हम सभी को प्रेरणा देती रहे। हम सभी में दृढ़ता बढ़ती रहे ऐसी हमारी शुभभावना है। दादी रतन मोहिनी जी के इस जन्मदिवस पर हम सभी बहुत-बहुत शुभकामनाएं एवं बधाइयां देते हैं।

मुझे वर्षों से दादी जी के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी दीदी,
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मैं बहुत भाग्यशाली समझती हूं कि जब से ब्रह्माकुमारीज़ में आई हूं तभी से परम आदरणीया राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला है। शुरू से पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के साथ यज्ञ कारोबार की जिम्मेदारी संभालने का मौका मिला। तभी से दादी रतन मोहिनी का भी परम सान्निध्य मिला है। मैंने देखा है कि दादी में नम्रता इतनी है कि कोई भी भाई-बहन उनके पास कोई समस्या लेकर आता है तो वह शांति से उसकी बात सुनकर उचित समाधान बताती हैं। साथ ही बड़प्पन इतना है कि हमेशा अपने से छोटों को आगे बढ़ाती रही हैं। निर्माणता की तो आप देवी हैं। कभी भी अपने ज्ञान, पद का अभिमान छू तक नहीं सका। सदा हर कार्य और सेवा में प्यारे शिव बाबा को आगे करतीं हैं। दादी से मुझे छोटी-छोटी बातें सीखने को मिली। इसके साथ ही आप वक्त की बहुत पाबंद हैं। हर काम टाइम पर एक्यूरेट करती हैं। अनुशासन प्रिय होने के साथ ही आप हर कार्य और हर चीज को बहुत ही सलीके और व्यवस्थित तरीके से करना पसंद करती हैं। आपका प्रयास रहता है कि आपसे जुड़े लोग सदा खुश रहें। दादी को देखकर मुझे भी प्रेरणा मिलती है कि इतनी उम्र में भी बिना थके, बिना रुके सेवाएं करती



रहीं हैं। दादी जी 90 साल की उम्र तक अपने दैनिक जीवन से जुड़े कार्य खुद करतीं थीं यह अपने आप में बड़ी बात है। दादी से हमें सीखने को मिलता है कि यदि हमें अपने आप को तन-मन से तंदुरुस्त रखना है तो कैसे रख सकते हैं। आज आपकी उपस्थिति मात्र से ही ब्राह्माण परिवार में खुशी की लहर छा जाती है। आपकी दिव्य मुस्कान, आध्यात्मिक ऊर्जा से संपन्न व्यक्तित्व हर किसी को खींच लेता है। दादीजी का साथ सदा ऐसे ही बना रहे और हम सभी को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे यही शुभकामना है।

दादी रतन मोहिनी बनीं मार्गदर्शक

वर्ष 1969 में दादीजी के साथ लंदन में सेवाएं करने का मिला अवसर

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी जयंती दीदी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़,
(यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका)

जून 1969 में दादी रतनमोहिनी मेरे लिए मार्गदर्शक बनीं, जब ज्योति बेन अपने माता-पिता के पास कंबोडिया जाने के लिए छुट्टी ले रही थीं और मैं अपने माता-पिता के पास लंदन जाने के लिए छुट्टी ले रही थी। हम दोनों के मन में यह सवाल था कि हम उन जगहों पर सेवा कैसे करेंगे, जहां कोई सेवाकेंद्र ही नहीं है। यह जनवरी 1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के तुरंत बाद की बात है और उस समय भारत के बाहर कोई सेवाकेंद्र नहीं था। दादी रतनमोहिनी जो स्नेह के लिए जानी जाती हैं, उन्होंने हमें बस यह याद रखने के लिए कहा कि सर्वोच्च शक्ति शिव ने ब्रह्मा बाबा के माध्यम से ज्ञान का सार दिया है और अगर हम केवल इसे याद रखें तो लोगों द्वारा पूछे गए किसी भी प्रश्न का उत्तर हमें पता चल जाएगा कि उत्तर कैसे देना है। सबसे बढ़कर, उन्होंने हमें खुद पर भरोसा रखने के लिए प्रेरित किया, ताकि हम भगवान की शिक्षाओं को साझा करने के निमित्त बन सकें।

दादीजी 1954 में जापान के पहले राजदूतों में से एक थीं, जब उन्होंने दादी प्रकाशमणि और दादा विश्व किशोर के साथ विश्व शांति सम्मेलन के लिए वहां की यात्रा की थी। एक ऐतिहासिक यात्रा, यह भारत के बाहर उनकी पहली यात्रा भी थी। सम्मेलन के बाद 'त्रिमूर्ति राजदूतों' ने एशिया के कई देशों की यात्रा की, जहां वे परमात्मा के प्रकाश, प्रेम और शिक्षाओं को सांझा करते रहे। वर्ष 1971 में भारत के बाहर पहला केंद्र लंदन में खुला और अक्टूबर में डॉ. निर्मला दीदी वहां रहने आईं और वो भारत के बाहर पहले केंद्र में पहली शिक्षिका बनीं। वर्ष 1972 के बसंत



मौसम की बात है जब विशेष रूप से पूर्वी अफ्रीका के लोगों से कई निमंत्रण मिलने के बाद डॉ. निर्मला ने अफ्रीका और फिर भारत की यात्रा करने का निर्णय लिया। सितंबर 1972 में लंदन में दादी रतनमोहिनी के प्रवास के दौरान हम उनका स्वागत करते हुए बहुत रोमांचित थे। दादीजी के लिए यह बहुत नया और अलग अनुभव था। वह भगवान को अपने साथी के रूप में लेकर अकेली आईं थीं और वह हमारे छोटे से केंद्र में अकेली रहती थीं। दादी जी कभी भी कहीं भी अकेली नहीं रहीं, इसलिए उनके लिए यहां सबकुछ नया और अजीब था। लेकिन दादीजी ने अपनी खूबसूरत मुस्कान और हमेशा हंसकर सब कुछ संभाला। उन्होंने हमेशा कहा- 'सब कुछ ठीक है!'

दादी जी दरवाजे पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ भगवान की शिक्षाओं और ब्रह्मा बाबा और मम्मा के साथ अपने अनुभवों को सांझा करती थीं। कुछ लोग जो उपनगर में थे वे बहुत मजबूत, प्रतिबद्ध राजयोगी बन गए। वे दूसरों को भी ले आए। ऐसा ही एक जोड़ा हर शाम काफी दूर से आता था और दादी जी ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से परमात्मा का परिचात्मक कोर्स और एडवांस कोर्स दिया और वे बहुत दृढ़ राजयोगी बन गए। दादीजी को तीन महीने के लिए रुकना था, लेकिन जब प्रस्थान का समय करीब आया तो इस दंपती ने उन्हें उनका और दूसरों के खाने-पीने का खर्च वहन कर वहां ही रुकने के लिए मना लिया। उन्होंने कहा कि जब भी उन्हें भारत वापस जाने की ज़रूरत होगी, वे उसका प्रबंधन करेंगे और उनकी अन्य सभी यात्राओं के लिए भी व्यवस्था करेंगे।

यूके में यह हमारा सौभाग्य था कि दिसंबर 1973 तक दादी जी हमारे साथ थीं। दादी जी ने लेस्टर की यात्रा की, जहां युगांडा और केन्या से बड़ी संख्या में नए शरणार्थी आए हुए थे। उस वक्त तक डॉ. निर्मला दीदी भी यूके लौट चुकी थीं और वो गुजराती भाषा अच्छी तरह से बोलती थीं, जिसे वहां आए शरणार्थी अच्छी तरह समझते थे। दादी रतनमोहिनी की आध्यात्मिक शक्ति और डॉ. निर्मला की धाराप्रवाह गुजराती की पकड़ दोनों ने मिलकर लोगों को (आत्माओं को) प्रेरित किया, जहां लोग रोज राजयोग सीखने के लिए आ सके। दादी जी की आत्मिक चेतना की गहरी और स्पष्ट व्याख्याएं और कराची के दिनों के व माउंट आबू के शुरुआती दिनों की उनकी खूबसूरत यादें तो बेहद प्रेरणादायक थीं। जिससे कई आत्माएं तो इन शिक्षाओं का पालन करने के लिए बहुत प्रतिबद्ध हो गईं। इनमें से उभर कर आए मजबूत समूह और परिवारों में से एक ने प्रतिदिन सुबह की क्लास कराने की मेजबानी के लिए अपने घर के दरवाजे खोल दिए। वह परिवार और दूसरा कोई नहीं बल्कि बीके बाबू भाई, बीके भूपेन भाई और बीके दीपिका बेन का परिवार था जो अभी भी हमारे साथ हैं और न केवल लेस्टर में बल्कि मिडलैंड्स में भी कई स्थानों पर आत्माओं का मार्गदर्शन कर रहा हैं और जहां आज तक सेवा हो रही है।

भारत में की व्यापक सेवाएं

दिसंबर 1973 में भारत लौटने के बाद दादीजी ने पूरे भारत में व्यापक सेवाएं की। फिर उन्हें टीचर्स ट्रेनर के तौर पर माउंट आबू में बसने के लिए कहा गया, लेकिन इसके अलावा भी उन्होंने कई अन्य भूमिकाएं और गतिविधियां निभाईं। दादीजी ने बाद में लंदन, अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और कई अन्य देशों की यात्राएं कर वहां का दौरा किया, हालांकि जून 2014 में दादीजी ने लेस्टर में एक सुंदर सेवाकेंद्र हार्मनी हाउस का उद्घाटन करने के लिए विशेष यूके की यात्रा की। जब भी विदेश से कोई समूह मधुबन में उनसे मिलने आता था, दादीजी उनसे अंग्रेजी में इस तरह से बात करती थीं कि सभी को उससे बेहद लाभ होता था।

हम आभारी हैं कि 100 वर्ष की आयु तक पहुंचने पर, दादी जी अभी भी हमारे साथ हैं और मौन की शक्ति के माध्यम से, अपने दिव्य नेत्रों से परमात्मा की रोशनी बिखेरते हुए, अपनी सुंदर मुस्कान के माध्यम से और अपने द्वारा सांझा किए जाने वाले संदेशों के माध्यम से बहुत कुछ देने में सक्षम हैं। हम आशा करते हैं कि दादी जी अपने खजाने को हम सभी के साथ सांझा करने के लिए भौतिक संसार में भी हमारे साथ बनी रहेंगी।

मैं सुनहरे लाल प्रकाश की दुनिया में खो गई: दादी

बाबा से पहली मुलाकात में ही दिव्य अनुभव हुआ

12 वर्ष की उम्र में पहली बार ओम मंडली के सत्संग में पहुंची लक्ष्मी

एक साक्षात्कार में दादी ने बताया था कि वर्ष 1937 की बात है। तब लक्ष्मी (दादी रतनमोहिनी के बचपन का नाम) 12 वर्ष की थीं। स्कूल की छुट्टियों के दौरान मां के साथ भागवत गीता के सत्संग में गईं। वहां मैं पहली पंक्ति में बैठ गईं। बाबा (ब्रह्मा बाबा) आए और वह भी बैठ गए। ओम् ध्वनि के साथ सत्संग की शुरुआत हुई। जैसे ही मैंने ब्रह्मा बाबा के मुख से ओम् ध्वनि सुनी तो गहरी आंतरिक शांति का अनुभव किया। ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया में नहीं हूं। मेरा शरीर नहीं है। मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं कहां बैठी हूं। हाथ-पैर का एहसास नहीं रहा कि इस शरीर में हैं भी कि नहीं। मैं सुनहरे लाल प्रकाश की दुनिया में चली गई। जहां तक मुझे याद है मैं अपनी चेतना को आसपास के वातावरण से अलग कर चुकी थी। उस वक्त मैंने अनुभव किया कि बाबा के माध्यम से कोई ऊंच, दिव्य और अलौकिक शक्ति बोल रही है।



ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा के साथ दादी रतनमोहिनी व अन्य दादियां।

बाबा से मिलने पर हर बार दिव्य अनुभव होते थे

दादी ने बताया कि लगभग एक घंटा सत्संग चला। इस दौरान मैं पूरे समय बाबा को निहारती रही। बाबा ने मुझे देखा और उठाया। मेरी मां मुझे हिला कर होश में लाई और मैं बाबा के पास गई और उनसे सत्संग के बारे में कई प्रश्न पूछे (क्योंकि मुझे कुछ याद नहीं था)। मैंने बाबा को बताया कि उनके साथ मैंने पिता के संबंध को अनुभव किया। तब से धीरे-धीरे मेरी आध्यात्मिक यात्रा आरंभ हुई। उस पहली मुलाकात के बाद जब भी बाबा से मिलते तो हर बार दिव्य और अलौकिक अनुभव होते थे। बाबा को देखते ही लगता था कि कोई दिव्य शक्ति उनके शरीर में प्रवेश कर गई है। बाबा का तेजस्वी मुखमंडल, दिव्य व्यक्तित्व और आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न व्यक्तित्व हर किसी को नई अनुभूति कराता था। बाबा का जीवन सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर था। जब भी बाबा से मिलती तो बाबा प्यार से बच्ची कहकर पुकारते थे तो ऐसा लगता था कि वर्षों से बिछड़े अलौकिक पिता से मिल रही हूं।

बचपन से ही दादी बाबा की विशेष स्नेह पात्र रहीं

ब्रह्मा बाबा ने लक्ष्मी में दिव्य विशेषताएं देखते हुए अलौकिक नाम दिया 'रतनमोहिनी'



त्याग-तपस्या, लगन और मेहनत के कारण सैकड़ों बहनें होने के बाद भी दादी को अहम जिम्मेदारी मिली

बचनप से ही दादी का स्वभाव धीर-गंभीर और व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से संपन्न होने के कारण ब्रह्मा बाबा ने दादी को इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संचालन और सेवाओं की अहम जिम्मेदारी सौंपी। परमात्मा पर अटूट आस्था, उनकी शिक्षाओं को यथार्थ रूप जीवन में शिरोधार्य कर आत्मसात करने के कारण आप ओम मंडली से जुड़ने से लेकर आज तक ब्रह्माकुमारीज़ के विशाल वटवृक्ष बनने के सफर में सभी की चहेती रहीं हैं। ब्रह्मा बाबा की दूरदर्शी बुद्धि के कारण उन्होंने जान लिया था कि भविष्य में यह बच्ची इतिहास लिखेगी। इस पर बाबा ने लक्ष्मी में अनेक गुण, विशेषताएं और प्रतिभा को देखते हुए अलौकिक नाम दिया रतनमोहिनी। तब से लेकर सभी लक्ष्मी को दादी रतनमोहिनी के नाम से जानते हैं।



माउंट आबू, पांडव भवन में ब्रह्मा बाबा के साथ सभी दादियां।



ब्रह्मा बाबा के साथ पहाड़ी पर दादियां योग करते हुए।

बचपन से ही एकांत, अध्ययन, अध्यात्म और ध्यान में थी रुचि

पढ़ाई में होशियार और शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थी थी



बचपन से ही थे भक्तिभाव के संस्कार



दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे हैं। छोटी सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज्यादा वक्त गुजारती थीं। स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा संपन्न रहीं हैं। दादी बचपन में बहुत शर्मीले और संकोची स्वभाव की थीं। क्लास में हमेशा समय पर जाना और पूरा होमवर्क करने के कारण आप अपने समय में शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थी में से एक थीं। दादी के विनम्र स्वभाव, सरल स्वभाव और मेधा को देखकर शिक्षक कहते थे कि यह बालिका तो जैसी देवी है। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बालिका आगे चलकर दुनिया के नारी शक्ति के सबसे बड़े और वैश्विक संगठन की मुखिया का दायित्व निभाएगी।







वर्ष 1937 से 1969 तक ब्रह्मा बाबा के साथ साए की तरह साथ रहीं दादी

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर तय किया

दादीजी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने (वर्ष 1969) तक साए की तरह साथ रहीं। इन 32 साल में आप बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता शुरू से ही थी। बाबा जो शिक्षाएं भाई-बहनों को देते तो दादी अक्षरश: उन्हें अपने जीवन में शिरोधार्य करतीं। यही कारण है कि सैकड़ों भाई-बहन होने के बाद भी आप विशेष स्नेही और भरोसेमंद रहीं। बाबा ने जिस आस से आप को जो जिम्मेदारी सौंपी आपने उससे कई गुना बेहतर करके उसे साबित कर दिखाया। बाबा के तपस्वी, वैरागी और त्यागी जीवन की छाप आप पर शुरू से ही देखने को मिली। सैकड़ों भाई-बहनों के बाद भी आप बाबा की विशेष स्नेह की पात्र थीं। बाबा के जीवन का एक-एक कर्म एक दिव्य अलौकिक फरिश्ते की तरह था उन्हीं पद चिंह्नों पर चलते हुए दादीजी ने भी अपना जीवन ऊंच,श्रेष्ठ और महान बनाया।

350 भाई-बहनों के साथ बाबा के सान्निध्य में 14 साल तक एकांत में की राजयोग ध्यान साधना



दादी रतनमोहिनी उन अनमोल रत्नों में से एक हैं जिन्हें साकार ब्रह्मा बाबा के साथ और परमात्मा के मार्गदर्शन में पूरे 14 वर्ष तक गहन योग साधना करने का परम सौभाग्य मिला। चूंकि परमात्मा ने विश्व परिवर्तन और नव निर्माण का कलश नारी शक्ति के सिर पर रखा। इसलिए उन्हें ज्ञान और योग की शक्ति से भरपूर करने के लिए एकांत में तपस्या करने का आदेश दिया। परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए भाई-बहनों को 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। ज्ञान और योग की भट्टी में तपाया। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं-बहनें और भाई (करीब 350) 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

मम्मा की आंखों का तारा थीं दादी

प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) से था विशेष प्रेम

ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) से राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को विशेष प्रेम था। मम्मा की विशेष स्नेही और सहयोगी होने के कारण आपको महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे जाते थे। मम्मा की तरह दादी में गंभीरता का गुण था। शुरुआत में 14 वर्ष तक एक साथ 350 से अधिक भाई-बहनों के होने बाद भी कभी भी आपस में मनमुटाव नहीं हुआ। दादी का स्वभाव मिलनसार होने से हमेशा सभी के स्नेह का पात्र रहीं।



मैंने कभी सोचा नहीं था कि भगवान मेरे शिक्षक बनेंगे: दादी रतन मोहिनी

एक साक्षात्कार में दादीजी ने बताया था कि मेरा परिवार राधे-कृष्ण का अनन्य भक्त था। मैं सुबह स्कूल जाने से पहले पूजा करती थी। एक बच्चे के रूप में मुझे अंदाजा नहीं था कि भगवान क्या है? ना ही मैंने कभी सोचा था कि स्वयं भगवान मेरे शिक्षक होंगे। लेकिन परमात्मा का कमाल है कि मुझे अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनाया, अपनी भुजा बनाकर मुझे सेवा का सौभाग्य दिया। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने अपने कल्प-कल्प के सृष्टि परिवर्तन के कार्य में मुझे सहयोगी बनाया, मुझे अपना जीवन सफल करने का परम सौभाग्य मिला। इस जीवन से संतुष्ट हूं कि पूरा जीवन ईश्वरीय कार्य में सफल हो गया। जो पाना था सो पा लिया।











मुख्यालय में होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन में लिया भाग

अलग-अलग प्रदेश के मुख्यमंत्री ने दादी से लिया आशीर्वाद

ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में हर साल होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलनों में अलग-अलग प्रदेशों के मुख्यमंत्री ने भाग लिया। असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्वा सरमा, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल, तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेमकुमार धूमल ने राजयोगिनी दादी से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया।







रशिया में दादी सम्मानित

2014 में संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतन मोहिनी को

ग्रैंड डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की मानद उपाधि से नवाजा

वर्ष 2014 में रशिया, सेंटपीटर्सबर्ग में नेटवर्क अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक ऑक्सफोर्ड की ओर से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतन मोहिनी को ग्रैंड डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की मानद उपाधि से नवाजा गया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ फंडामेंटल स्टडीज (आईयूएफएस) के रेक्टर प्रोफेसर शांति पुष्प कुमार जयसेकरा ने आईयूएफएस, ऑक्सफोर्ड एजुकेशनल नेटवर्क, इंटरनेशनल पार्लियामेंट फॉर सेफ्टी एंड पीस और कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी एफसीई, सीए के फैसले को पढ़ कर सुनाया। दादी को ग्रैंड डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (मनोविज्ञान में) की मानद उपाधि उनके द्वारा आध्यात्मिकता के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य, नारी सशक्तिकरण और जीवन पर्यंत मानव कल्याण के लिए की गईं सेवाओं को देखते हुए यह सम्मान दिया गया। रशिया यात्रा के दौरान दादीजी ने रूस, सीआईएस और बाल्टिक राज्यों में ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग की रजत जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कई कार्यक्रमों में भी भाग लिया। इस मौके पर रशिया देशों के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके चक्रधारी दीदी, सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका बीके संतोष दीदी भी मौजूद रहीं।










ಗುಲಬರ್ಗಾ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಗುಲಬರ್ಗಾ

Gulbarga University

GULBARGA - KARNATAKA - INDIA

೨೦ನೇ ಫೆಬ್ರುವರಿ, ೨೦೧೪ ರಂದು ನಡೆದ ಮೂವತ್ತೆರಡನೆಯ ವಾರ್ಷಿಕ ಘಟಿಕೋತ್ಸವದಲ್ಲಿ

ರಾಜಯೋಗಿನಿ ಬ್ರಹ್ಮಕುಮಾರಿ ದಾದಿ ರತನ್ ಮೋಹಿನಿ

ಅವರಿಗೆ

ಡಾಕ್ಟರ್ ಆಫ್ ಲಾಸ್

(ಗೌರವ)

ಪದವಿಯನ್ನು ನೀಡಲಾಗಿದೆಯೆಂದು ಪ್ರಮಾಣೀಕರಿಸಲಾಗಿದೆ.

This is to certify that the Degree of

Doctor of Laws

(Honoris Causa)

has been conferred on

Rajayogini Brahmakumari Dadi Ratan Mohini

at the Thirty second Annual Convocation held on the 20th February 2014

ಕುಲಪತಿ
Vice Chancellor

ಕುಲಾಧಿಪತಿ
Chancellor

32वां दीक्षांत समारोह

गुलबर्गा विश्वविद्यालय ने दादी रतनमोहिनी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की

दादी की देश-विदेश में की गईं उल्लेखनीय मानव सेवाओं को देखते हुए प्रदान की उपाधि



गुलबर्गा विश्वविद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की तत्कालीन संयुक्त मुख्य प्रशासिका, युवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा और राजस्थान जोन की निदेशिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी को गुलबर्गा विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। तत्कालीन कुलपति ने उपाधि प्रदान करते हुए दादी का सम्मान किया।

दादी को यह उपाधि उनके द्वारा जीवन पर्यंत भारत सहित विश्व के अनेक देशों में भारतीय पुरातन संस्कृति आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार करने, राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा से लाखों लोगों का जीवन बदलने, युवा प्रभाग की अध्यक्षा रहते हुए लाखों युवाओं को मूल्यनिष्ठ जीवन जीने के लिए प्रेरित करने और अपने वक्तव्य से लोगों को सकारात्मक दिशा प्रदान करने के उल्लेखनीय समाजसेवी कार्य करने पर प्रदान की गई।



मानवाधिकार रत्न पुरस्कार से किया सम्मानित



ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका और युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी को मुख्यालय शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में 8 जनवरी 2017 को नई दिल्ली के केंद्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा मानवाधिकार रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार मानवता की रक्षा, मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान और नारी सशक्तिकरण के लिए सराहनीय कार्य करने पर प्रदान किया गया। इस मौके पर संगठन की टीम के पदाधिकारी सहित कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई विशेष रूप से मौजूद रहे।

रंगोली ने बनाया एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स



युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी के नेतृत्व में 26 नवंबर 2010 को महाराष्ट्र के अहमदनगर सेवाकेंद्र द्वारा अशोकभाऊ फिरोदिया स्कूल मैदान में 2,500 प्रतिभागियों की मदद से 9,028 वर्ग मीटर (97,176 वर्ग फीट) में विशाल रंगोली बनाई गई। इसमें नौ रंगों में 19,000 किलोग्राम रंगों का उपयोग किया गया। इस रंगोली का एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज किया गया और सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

यूके में दादी को भारत गौरव अवार्ड से नवाजा



यूके ब्रिटिश पार्लियामेंट (द हाउस ऑफ कॉमन्स) की ओर से जुलाई 2015 में राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी द्वारा विश्वभर में की गई आध्यात्मिक सेवाएं को देखते हुए भारत गौरव अवार्ड से नवाजा गया। दादी की प्रतिनिधि के तौर पर यह अवार्ड ब्रह्माकुमारीज़ की यूके में स्थानीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी जेमिनी बहन ने प्राप्त किया।

द संत ऑफ मॉडर्न इंडिया अवार्ड से दादी रतन मोहिनी सम्मानित

राष्ट्रीय सम्मान समारोह में वरिष्ठ पदाधिकारियों का पुणे के संस्थान की ओर से किया गया सम्मान

आबू रोड/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन परिसर के डायमंड हॉल में राष्ट्रीय सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों का पुणे के संस्थान की ओर से अलग-अलग चार कैटेगिरी में अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को देश-विदेश से आए 20 हजार से अधिक लोगों के बीच पुणे के सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूट्स द्वारा द संत ऑफ मॉडर्न इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया।

वहीं संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी और हिल्लोक ग्रुप की डायरेक्टर गीता अग्रवाल को सूर्यभूषण नेशनल अवार्ड प्रदान किया गया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी, कार्यकारी सचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, ग्लोबल हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. बीके प्रताप मिड्ढा और मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी डॉ. बीके बनारसी लाल भाई को नेशनल लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। स्त्री शक्ति नेशनल अवार्ड से ग्लोबल हॉस्पिटल की वेलनेस एक्सपर्ट बीके सुजाता बहन को नवाजा गया। कार्यक्रम में पुणे के सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूट्स के संजय चौरड़िया और सुषमा चौरड़िया द्वारा सभी पदाधिकारियों का सम्मान किया गया।



वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन की ओर से दादी सम्मानित



आबू रोड। 3 अप्रैल 2019 को मुख्यालय शांतिवन में आयोजित गरिमामय समारोह में वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन की टीम की ओर से दादी रतन मोहिनी को सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान विश्वव्यापी सेवाओं को देखते हुए प्रदान किया गया।

एक बार दादी ने कहा था- मोहिनी अपने रतन से कभी जुदा नहीं हो सकती

राजयोगी ब्रह्माकुमार बृजमोहन भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड



मेरे ब्राह्मण जीवन का अधिकांश समय दिल्ली में बीता, जहां बाबा ने मुझे ईश्वरीय सेवा पर रखा था। दादी रतन मोहिनी जी का दिल्ली आना कभी-कभी ही होता था। जब उनसे सम्मुख मिलने का अवसर मिलता था। दादी जी के लिए तो बाबा ही रतन हैं और उन्होंने इस बात का जिक्र माउंट आबू स्थित म्यूज़ियम में अनेक वर्ष पूर्व एक कार्यक्रम में किया। दादी जी ने कहा- मोहिनी अपने रतन से कभी जुदा नहीं हो सकती। इस वाक्य में दादी जी का बाबा के लिए अटूट प्यार और रिगार्ड झलकता है। हमने दादी जी की निर्माणता भी अनेक बार देखी। यज्ञ की मीटिंग में दादी कभी मंच पर नहीं बैठती थीं। सामने सभा में ही बैठती थीं और बुलाए जाने पर ही मंच पर आती थीं। आपकी गंभीरता का परिचय इस बात से मिलता है कि वे मीटिंग में पूछे जाने पर ही किसी विषय पर अपनी राय दिया करती थीं। दादी जी की अभी कर्मातीत अवस्था है। वह सदा न्यारी और प्यारी रह कर, मुस्कुराकर सबसे मिलती हैं तथा मौन रहकर ही अपनी दृष्टि से सबको सकाश देती हैं। जब कोई विशिष्ट व्यक्ति दादी जी से मिलने आते हैं तो मुझे भी दादी जी के पास जाने का निमंत्रण मिलता है।

स्टूडेंट लाइफ में सदा नंबर वन रहीं

राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

आदरणीया दादी रतनमोहिनी जी 25 मार्च को 99 वर्ष पूर्ण कर 100वें वर्ष में प्रवेश कर जाएंगी। यह हम सबके लिए खुशी की बात है कि हमारी दादी 13 साल की उम्र से ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग और दिव्य गुणों की धारणा का अभ्यास स्वयं भी करती रहीं और फिर लगभग 20 वर्ष की आयु से दूसरों को भी ईश्वरीय ज्ञान देना शुरू किया। हैदराबाद से कराची में अपने लौकिक माता जी के साथ बाबा के पास सवेरे-सवेरे मुरली सुनने के लिए जाती थीं और इनके परिवार में से और सदस्य भी स्नेही सहयोगी रहे हैं, जिन्हें हमने बॉम्बे में देखा। मैंने जब सेवा केंद्र पर जाना शुरू किया तो लगभग तीन सप्ताह के बाद हमारी क्लास जो है वह दादी रतनमोहिनी जी ने मुरली पढ़कर सुनाना शुरू किया था और दादी जी की वाणी में बहुत सरलता एवं गहराई और बिल्कुल टू द प्वाइंट बात करने की कला रही है।

भारत से पहली बार ईश्वरीय सेवा के लिए जब ब्रह्माकुमारीज़ की डेलिगेशन जापान गया था उस समय अनानाइक इंस्टीट्यूशन की तरफ से निमंत्रण था और उस डेलिगेशन में दादी प्रकाशमणि, दादी रतनमोहिनी जी जापान गए और छह महीने तक जापान में ही सेवा करते रहे। जापान के अलावा, इंडोनेशिया, हॉगकॉन्ग में छह महीना सेवा की और एक साल सेवा करने के बाद वापस भारत आए थे। उस समय भारत आने पर उनके द्वारा बाबा ने बहुत स्थानों पर ईश्वरीय सेवा कराई थी। दादी रतन मोहिनी जी स्टूडेंट लाइफ में नंबर वन रहीं क्योंकि जब बाबा के महावाक्य सुनते थे तो आप डायरी और पेन ले करके उसमें अपने नोट्स लिखते रहते थे। अभी तक भी अगर उनको चांस मिले तो वह लिखेंगी। दादी सिंधी में लिखती थी। अगर कोई उसको पढ़े तो पता चले कि कितना स्पष्ट लिख सकती हैं। दादी रतनमोहिनी जी ने अपने जीवन काल में बहुत सारी सेवाएं की और उनमें विशेष कुमारियों का ट्रेनिंग प्रोग्राम, उस पर उनका बहुत ध्यान रहा, क्योंकि एक भाई को किसी को



ज्ञान मिले तो एक को मिलेगा और वहीं एक कुमारी को अगर ज्ञान मिल जाए तो कई परिवारों को मिल जाएगा। इस लक्ष्य से उन्होंने कुमारियों को ट्रेनिंग से, ब्रह्माकुमारी का स्वरूप क्या होता है? ब्रह्माकुमारी की दिनचर्या क्या होती है? ब्रह्माकुमारी की धारणाएं क्या होती है? वह सभी बातें दादी रतनमोहिनी जी द्वारा सीखने को मिलती थीं। दादी रतनमोहिनी जी ने एक बार नहीं अनेक बार भारत के कोने-कोने में और विदेश में जाकर ईश्वरीय सेवाएं कीं। उसके फलस्वरूप अनेकानेक भाई-बहनें ज्ञान मार्ग पर चले हैं और ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। वर्तमान समय दादी रतनमोहिनी जी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका हैं। थोड़ा समय पहले तक तो सवेरे की मुरली क्लास भी दादी जी सुनाती रही हैं और भाषण भी करती रही हैं। इन दिनों में ज्यादातर मुस्कुराकर आप सभी का अभिनंदन करती हैं और प्रसाद रूप में टोली खिलाकर सबका मन खुश करती हैं।

1954
में पहली बार विदेशी जमीं पर रखा कदम









सिंगापुर, मलेशिया आदि देशों में राजयोग मेडिटेशन का दिया संदेश

वर्ष 1950 में संस्था के माउंट आबू राजस्थान स्थानांतरण के बाद पूरे भारत वर्ष में ईश्वरीय सेवाओं का विस्तार हुआ। 14 वर्ष की घोर ध्यान-साधना में तपकर जो भाई-बहनों ने अध्यात्म बल, ज्ञान बल और योग बल जमा किया था अब उसे समाज में बांटने का समय आ गया था। 1950 के बाद पहले भारत के महानगरों और फिर छोटे शहरों में आध्यात्मिक और सहज राजयोग की शिक्षा देने के लिए ब्रह्मा बाबा ने शिव शक्तियों को भेजा। कम पढ़ी-लिखी होने के बाद भी इन्होंने खुद को ज्ञान और योग से इतना परिपक्व बना लिया था कि जब यह शिव शक्तियां ज्ञान गंगा बनकर बरसती थीं तो लोग देखते रह जाते थे। लोगों को आश्चर्य होता था कि इन छोटी-छोटी बहनों में इतना गहराई पूर्वक, दिव्य और अलौकिक ज्ञान कहां से आया है। कौन इन्हें सिखा रहा है? कौन इनका पालक है? यह ज्ञान पहले तो कभी सुना नहीं था। एक ओर जहां भारत में धीरे-धीरे राजयोग ज्ञान का प्रचार-प्रसार हो रहा था वहीं विदेशी सरजमीं पर भी भारतीय पुरातन संस्कृति अध्यात्म और राजयोग की शिक्षा देने के लिए ब्रह्मा बाबा ने ब्रह्माकुमारियों को प्रतिनिधि बनाकर विदेश यात्रा पर भेजा।

जापान में विश्व शांति सम्मेलन में लिया भाग

वर्ष 1954 में जापान में आयोजित विश्व शांति सम्मेलन में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के साथ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया था। दोनों दादियों ने एक वर्ष तक एशिया के देशों में सेवाएं दीं। इस दौरान सिंगापुर, मलेशिया आदि देशों में राजयोग की शिक्षा और उसका जीवन में महत्व लोगों को बताया।





दादी प्रकाशमणि के साथ विश्व सेवाओं को दिए नए आयाम...

वर्ष 1937 से वर्ष 2007 तक दादी प्रकाशमणि के साथ हर पल रहीं साथ





पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि, राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के साथ आपने ताउम्र कदम से कदम मिलाकर ईश्वरीय सेवाओं को नए आयाम दिए। त्याग और तपस्या को जीवन का ध्येय मानकर खुद को सेवा में समर्पित कर दिया। जीवन के इस पड़ाव पर भी आप पूरे उमंग-उत्साह के साथ सेवा में जुटी हैं। राजयोग ध्यान से आज भी दिनचर्या की शुरुआत होती है। वर्ष 1937 से वर्ष 2007 तक ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय की पूर्व प्रशासिका रहीं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के साथ दादी रतनमोहिनी ने इस विश्व विद्यालय की सेवाओं को विश्व फलक तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कर्मठ, लगनशील, जुझारु और मेहनती होने के कारण दादी प्रकाशमणि हमेशा दादी रतनमोहिनी को बड़े महोत्सव और आयोजनों की जिम्मेदारी सौंपती, जिसे वह पूरी तत्परता के साथ पूरा करतीं थीं। दादी की ख़ास भरोसेमंद होने का साथ एक साथी के रूप में हमेशा हर पल साथ रहीं। पिछले 40 से अधिक वर्ष से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्षा की भी जिम्मेदारी संभाल रही हैं।

दो साल लंदन में दिया राजयोग ध्यान का संदेश

वर्ष 1972-73 में लंदन में ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ाया







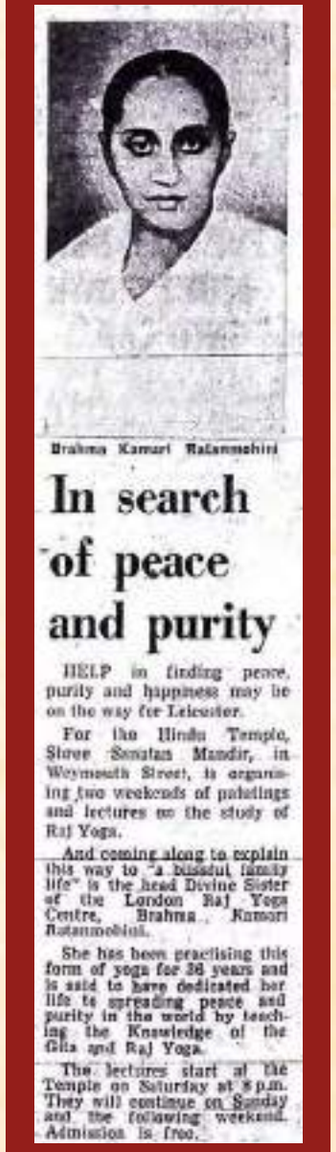
राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी वर्ष 1972 में परमात्म संदेश लेकर लंदन पहुंचीं, जहां दो साल तक लोगों को भारतीय पुरातन संस्कृति अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया। इस दौरान वहां के सामाजिक संगठन, सरकारी दफ्तर, क्लब, चर्च आदि में कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया। साथ ही संदेश दिया कि भारत भूमि पर परमात्मा का दिव्य अवतरण हो चुका है। राजयोग मेडिटेशन के जरिए कैसे हम परमात्मा से मिलन मना सकते हैं। ज्ञान बल और योग बल का ही कमाल है कि कम पढ़ी-लिखी होने के बाद भी दादी जब मंच से संबोधित करतीं तो लोग सुनते रह जाते थे। अध्यात्म के बातें उनके लिए बिल्कुल नईं थीं। ऐसे में लोगों ने रुचि के साथ इस ज्ञान को समझा और जीवन में शिरोधार्य किया।



लंदन के समाचार पत्र में दादी रतनमोहिनी का लेख प्रकाशित

वर्ष 1973 में सेवा के दौरान लंदन के प्रसिद्ध समाचार पत्र लीसेस्टर मर्करी में दादी रतनमोहिनी द्वारा लिखित लेख प्रकाशित हुआ।





Brahma Kumari Ratanmohini

In search of peace and purity

HELP in finding peace, purity and happiness may be on the way for Leicester.

For the Hindu Temple, Shree Sanatan Mandir, in Weymouth Street, is organising two weekends of paintings and lectures on the study of Raj Yoga.

And coming along to explain this way to "a blissful family life" is the head Divine Sister of the London Raj Yoga Centre, Brahma Kumari Ratanmohini.

She has been practising this form of yoga for 36 years and is said to have dedicated her life to spreading peace and purity in the world by teaching the Knowledge of the Gita and Raj Yoga.

The lectures start at the Temple on Saturday at 8 p.m. They will continue on Sunday and the following weekend. Admission is free.



जापान में मनाई ब्रह्माकुमारीज़ की स्वर्ण जयंती

वर्ष 2005 में दादी ने जापान, फिलीपींस और हांगकांग का दौरा किया



ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा वर्ष 2005 में पूरे विश्व में धूमधाम से स्वर्ण जयंती मनाई गई। इस मौके पर देश-विदेश के सभी सेवाकेंद्रों पर बड़े स्तर पर महोत्सव आयोजित किए गए। दादी रतनमोहिनी ने संस्थान के प्रतिनिधि के तौर पर जापान, फिलीपींस और हांगकांग सेवाकेंद्र पर आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव में भाग लिया।





सामाजिक कार्यक्रमों में लिया भाग

मलेशिया में किया ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र का लोकार्पण



मलेशिया यात्रा के दौरान राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र का उद्घाटन किया। वहां स्थानीय सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर लोगों को अध्यात्म और राजयोग ज्ञान के बारे में बताया। बीके सदस्यों को आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन दिया।















दुबई में नेताओं को भारत आने का दिया निमंत्रण

वर्ष 2011 में दुबई यात्रा पर पहुंचीं दादी

वर्ष 2011 में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी दुबई की यात्रा पर गईं जहां स्थानीय नेताओं को अध्यात्म का संदेश दिया। अल्प प्रवास के दौरान दादी ने कई वीआईपी से मिलकर उन्हें परमात्मा संदेश दिया और माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।











ईश्वरीय परिवार में जगाया उमंग-उत्साह

वर्ष 2011 में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड यात्रा पर पहुंचीं दादी



वर्ष 2011 में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की यात्रा पर पहुंचीं। इस दौरान वहां स्थानीय क्लब, संगठन के कार्यक्रमों में भाग लिया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े सदस्यों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए शिक्षाएं दीं। साथ ही राजयोग ध्यान के माध्यम से जीवन जीने की कला के बारे में बताया। दादी के साथ उनकी निज सचिव बीके लीला दीदी विशेष रूप से मौजूद रहीं।



नेपाल में बिखेरी अध्यात्म की आभा...



राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल द्वारा आयोजित स्नेह मिलन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस दौरान नेपाल की निदेशिका बीके राज दीदी द्वारा दादी का विशेष रूप से सम्मान किया गया।





अफ्रीका, केन्या की यात्रा के दौरान बीके सदस्यों से मुलाकात कर उन्हें जीवन जीने की कला के बारे में बताया।



नैरोबी सेवाकेंद्र पर ब्रह्माभोजन ग्रहण करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, नेरोबी देशों की निदेशिका बीके वेदांती दीदी, निज सचिव बीके मीरा दीदी।

रशिया में दादी...

दादी रतनमोहिनी का रशिया से विशेष लगाव रहा है। रशिया के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके संतोष दीदी ने दादी के आगमन पर उनका जोरदार स्वागत किया। साथ ही जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान दादी ने राजयोग ध्यान का संदेश दिया।









दादी रतनमोहिनी के रशिया पहुंचने पर बीके सदस्यों द्वारा दादी के सम्मान में विशेष आयोजन किया गया। दादी का पारंपरिक रूप से स्वागत किया गया।







दादी के रशिया आगमन पर निदेशिका बीके संतोष दीदी के मार्गदर्शन में किया गया भव्य स्वागत

रशिया में सोल कॉन्शियसनेस सम्मेलन को किया संबोधित

वर्ष 2014 में दादी रतनमोहिनी रशिया की यात्रा पर पहुंचीं। यहां ब्रह्माकुमारीज़ सेंट पीटर्सबर्ग रशिया की निदेशिका राजयोगिनी संतोष दीदी और यूरोप के देशों की निदेशिका राजयोगिनी जयंती दीदी के नेतृत्व में दादी का जोरदार स्वागत किया गया। यहां दादी ने सेवाकेंद्र पर शिव ध्वजारोहण कर सभी को संकल्प दिलाया। साथ ही सोल कॉन्शियसनेस सम्मेलन को संबोधित किया।



खुद को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करें: दादी

यूएसए में बीके सदस्यों को किया संबोधित, राजयोग के राज बताए

यूएसए की यात्रा के दौरान राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने बीके सदस्यों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्लासे कराई। इस दौरान दादी ने कहा कि अध्यात्म का मतलब है आत्मा का अध्ययन। जब तक हम खुद को आत्मा समझकर परमपिता परमात्मा से अपना संबंध नहीं जोड़ेंगे हम अध्यात्म की गहराई को नहीं समझ सकते हैं। राजयोग मेडिटेशन आत्मा का परमात्मा से मंगल मिलन कराता है। हम सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता शिव परमात्मा हैं। परमात्मा कहते हैं कि मेरे बच्चों तुम मन को मेरे में लगाओ। जब हम व्यर्थ से दूर रहेंगे तो परमात्मा की याद रहेगी।













दादी जी की पालना को बहुत नजदीक से अनुभव किया है

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शशि दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, पांडव भवन, माउंट आबू

दादी का जीवन बाबा, मम्मा व सभी दादियों के समान बहुत ही प्रेरणादायक रहा है। दादी का जीवन हरेक को कुछ न कुछ सिखाता है। जो भी दादी के सम्मुख आता है, अनेक प्रेरणाएं एवं दुआएं लेकर ही जाता है। मुझे दादी से पहली बार मिलने का अवसर 1966 में मिला, जब प्यारे बाबा ने मधुबन में पहली बार आध्यात्मिक संग्रहालय के स्थान पर प्रदर्शनी लगाई थी। दादी के साथ दो महीने रहने का अवसर मिला। उस समय दादी जी को निर्वैर भाई व अन्य वरिष्ठ भाइयों के साथ विशेष जिम्मेवारी थी। हम वहां गाइड बनकर जाते थे दादी बहुत महीनता से सभी को सुनती और बहुत प्यार से डायरेक्शन देती थीं। कहती थीं कि समझाते समय ज्ञान की हर पॉइंट एक्यूरेट होनी चाहिए। समझाने का ढंग भी अच्छा होना चाहिए जो सुनने वाले के दिल में बैठे और वह कुछ अनुभव अवश्य करके जावे। उस समय बाबा के साथ-साथ हम दादी जी को भी मिलते तो बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव होते थे।

वर्ष 1970 में दादीजी जब चंडीगढ़ में आईं तो उस समय हम भी वहां सेवाएं दे रहे थे। दादी जी का व्यक्तित्व चुम्बकीय रहा। उन दिनों जब भी कभी उनके सम्मुख आने का मन होता परन्तु हम छोटे होने के कारण संकोच होता था कि कैसे जाएं। परन्तु दादी जी का प्यार ऐसा था जो चुम्बक की तरह से हमें अपनी ओर आकर्षित कर



लेता था। मधुबन में दादी जी की स्नेह भरी पालना को बहुत नज़दीक से अनुभव किया है।

दादीजी सदैव एक्टिव रह हर कार्य को एक्यूरेट रीति से अपने हाथ से करतीं थीं। सदैव हमें भी यही कहतीं कि कोई भी कार्य करो वह एक्यूरेट हो। हर कार्य करने के पूर्व अच्छे से मंथन करती, त्रिकालदर्शी स्थिति से देखती और उसके अन्दर एक्यूरेसी लातीं। हर कार्य पहले स्वयं करके हमें सिखलाती थीं। आज भी हम दादी जी को देखते हैं कि इतनी आयु होने पर भी सदा हर्षितमुख चेहरा और वरदानी स्वरुप अनेकों को विशेष अनुभव कराता है। दादी के पास जाना ही माना वरदानों की खान के पास जाना है।

हमेशा युवाओं जैसी एनर्जी के साथ सेवाएं कीं हैं

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ (निदेशिका, मुंबई, महाराष्ट्र जोन)

यज्ञ रक्षक, यज्ञ स्नेही, रूहानी कोहिनूर, प्यारी रतन मोहनी दादीजी हैं। हमें बेहद खुशी है भगवान के दिशा-निर्देश से रचित इस आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका रतन मोहिनी दादी जी का शताब्दी जन्मोत्सव मनाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भगवान की सिरताज दादी जी के जीवन की क्या विषेशता सुनाऊं, हमारी दादी जी बहनों की श्रेष्ठ प्रेरणाप्रद, आदर्श जीवन की प्रेरणास्त्रोत हैं। जब हम मुंबई में आपके सम्पर्क में आए तब से आज तक आपको सदा उमंग-उत्साह, सदा सर्व को आगे बढ़ाते विशेष रूप से समर्पित बहनों को ईश्वरीय सेवा के लिए प्रोत्साहित करना, हिम्मत का हाथ देकर शक्तिशाली योग्य टीचर, विश्व सेवाधारी हजारों बहनों को आपने तैयार किया। अभी भी सेवा कर रहे हैं। दादी जी के दिव्य संकल्प से ही आदर्श राजयोग शिक्षिका बनाने के लिए आदरणीया राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया। इस दिव्य आध्यात्मिक कार्य का श्रेय दादीजी को जाता है। आज देश-विदेश में हजारों सेंटर खुलते गए। दादी जी का विषेश ध्यान रहता है और भी बहनें तैयार हों इसीलिए टीचर्स ट्रेनिंग के प्रोग्राम बनाते रहते हैं। इतनी उम्र के बाद भी आपका हर कार्य-व्यवहार युवाओं जैसा ही रहा। इसीलिए आप युवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा हैं। दादीजी की विशेषता है कि सदैव अपने बड़ों का रिस्पेक्ट और छोटों से प्यार, यह महामंत्र आपके विशाल व्यक्तित्व का एक विशेष रत्न है। हिम्मते बच्चे-मददे बाप, त्याग, तपस्या और सेवा, एवररेडी, अलर्ट और एक्यरेट यह रत्न भी हमने आप में पाए हैं। सदा ही हर बात, हर संकल्प में, हर संस्कार में, यज्ञ के नियमों और संयम में फॉलो फादर का पाठ पक्का हैं। कभी भी लूज नहीं रहे, न ही लूज होने देते। दादीजी को सदा ही बालक सो मालिक सो बालक रूप में देखा। मीठी स्नेही दादी जी को मैं अनुभव करती कि आप संस्था की, ब्राह्मण परिवार की, मधुबन की विशेष, सर्व श्रेष्ठ बापदादा के गले का हार- शृंगार हैं। शताब्दी जन्मोत्सव का शत्-शत् अभिवादन अभिनंदन।



दादी का पूरा जीवन अनुशासित और सहज-सरल रहा

राजयोगिनी, ब्रह्माकुमारी स्वदेश दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़, (जर्मनी के सेवाकेंद्रों की निदेशिका)

आज मुझे दादी जी के साथ लगभग 55 साल से भी ज्यादा हो गए हैं। मधुबन में भी बाबा के समय भी मिलना हुआ। उसके बाद जब भी मधुबन में आए तो दादी जी से मिलना होता रहा है। लंदन में जब दादी ने जाकर अध्यात्म को जो बीज बोया है उसकी बदौलत आज भी भाई-बहनें ज्ञान मार्ग पर चल रहे हैं। उस प्यार से, शुभभावना से, उमंग उत्साह से जो पालना की वह आज भी उन्हें इस मार्ग पर आगे बढ़ा रही है। उस समय जो फूल खिले, चाहे वह पहले ज्ञान में आए हुए बच्चे थे, उन्हों के अन्दर आज भी दादी जी को सामने पाकर उमंग-उत्साह भर जाता है। मैं दादी जी के साथ जापान गई। एक दृष्टि से देखें तो ये जो विश्व सेवा का बीज डाला, चाहे जापान में, चाहे ईस्ट में, चाहे वेस्ट में दोनों सेवा के निमित्त दादी जी बनीं और उनकी विशेष भूमिका रही।

लौकिक में अलौकिक रीति से सेवा करना भी एक कला है...

दादी जी की गंभीरता, लाईटनेस और इजीनेस सब सीखने लायक है। मैंने नोट किया है कि दादी जी के साथ उनकी लौकिक माता जिनका नाम डेरी माता है, उनकी भी उन्होंने बहुत अच्छी तरह से सम्भाल की थी। उनकी नेचर को समझकर के वृद्ध व्यक्ति की विशेषताओं के साथ-साथ उनकी आवश्यकता पूरी करना बड़ी बात है। उन्होंने बहुत अच्छी तरह से, साक्षी दृष्टा होकर देखा और उनकी संभाल की। सेवा पर भी बहुत अच्छी तरह से ध्यान दिया। अच्छा उमंग रहा और बैंलेस रखा। लौकिक को अलौकिक बनाया। डेरी माता बाबा की अनन्य गोपिका थीं। परन्तु अपने लौकिक भान से न्यारे होकर अलौकिक रीति से सेवा करना और संतुष्ठ करना, ये भी एक कला है।

दादी सदा ही उमंग-उत्साह में रहने वाली बाबा की दिल तख्तनशीन विशेष आत्मा हैं। जैसे मिलिट्री के भाई वॉक करते



हैं वैसे ही आप रोज शांतिवन में अमृतवेले के बाद फास्ट वॉक करती थीं। उस समय आपको देखकर लगता था कि जैसे उड़ रही हैं। चल नहीं रही हैं लेकिन जैसे उड़ रही हैं। एक स्वाभाविक रीति से भोजन पर भी ध्यान, वॉकिंग पर भी ध्यान, दिनचर्या पर भी ध्यान और भोजन पर भी ध्यान देना, यह विशेष बात आपके जीवन में शुरू से रही है। हर चीज को डिसिप्लिन में रखा है। इसीलिए शरीर की संभाल भी बिल्कुल ठीक से की है। प्रकृति की भी मालिक बनकर रही हैं। ये भी एक कला है जो अपने शरीर को भी अच्छी रीति से सम्भाल सकें। अपनी आत्मिक स्थिति को भी एकदम स्टेबल रखें। आपका हर कर्म एक आदर्श कर्म की तरह रहा है। जिससे हम सभी को बहुत सीखने को मिला है। आपके निर्देशन में हजारों ब्रह्माकुमारी बहनें तैयार हुई हैं।

कोई बात नहीं अच्छी लगी तो गंभीरता से समां लेती हैं...

मैंने देखा दादी जी को अगर कोई बात नहीं अच्छी लगी, तो बड़ी गम्भीरता से उसको समां लेती हैं। कुछ कहना है और वातावरण ऐसा नहीं है जो स्वीकार हो आपकी बात, आप जैसे ड्रामा में जो हैं वैसे ही होना हैं, उसमें एकदम साक्षी-दृष्टा होकर रहने वाली आत्मा हैं। फिर ये भी देखा कि आप यूथ की हेड हैं। यूथ की सेवा में भी उत्साह भरने वाली, उमंग भरने वाली, आप भी जैसे यूथ के साथ यूथ बनकर रहीं। 90 साल की उम्र तक आपने, अपने आप को यूथ ही समझा। दिखाया भी ऐसे, बताया भी ऐसे, बनाया भी ऐसे। फिर देखो जो कुमारियां ट्रेनिंग करने वाली, कितनी बड़ी जिम्मवारी है। कुमारियां तो घर से आने वाली हैं और उनको ट्रेन्ड करना, उनके माइन्ड सेट को डिवाइन बना देना। उनके अन्दर वो उमंग-उत्साह भरकर के ये भावना भर देना कि ये बाबा का घर ही हमारा घर है। अब लौकिक घर वापस नहीं जाना है। आपकी दी हुई ट्रेनिंग एक ऐसा सुन्दर फाउण्डेशन है, दादी प्रकाशमणी जी ने आपको ये बहुत अच्छा स्थान भी ट्रेनिंग सेन्टर दिया, जो सेवा के निमित्त बना। सरस्वती भवन भी आपकी सेवा के निमित्त बना। आपमें सरस्वती मां की तरह ज्ञान गंगा बनकर, ज्ञान की देवी बनकर, गुणमूर्त, गुण चुगने वाली और गुण चुगाने वाली हंस वाहिनी बनकर कुमारियों को ट्रेनिंग दी है, वो कमाल की है। वो ज्ञान गंगायें पूरे विश्व के अनेक सेन्टरों पर जा रही हैं। ऐसी ज्ञान गंगा तैयार करने वालीं आप मास्टर सागर हैं।

आप मुस्कुराहट से, दृष्टि से भी ब्लेसिंग देते हैं...

बाबा ज्ञान का सागर है। आप भी ज्ञान की सागर हैं। गंगा भी हैं तो सागर भी हैं। तो मैंने क्या नोट किया कि अभी भी आपके अन्दर उमंग-उत्साह बहुत है। अभी 99 साल की एज तक सोलार फार्म हाउस में बग्गी में जाना और बॉल फेंकना और बॉल पकड़ना तो आप भाईयों को भी जीतने वाली बन गईं। इतना उमंग-उत्साह है आपमें। देखने में आता है कि ये अन्दर से एक गहराई और ऊपर दिखाई देती है गम्भीरता। और सागर जैसे नीचे गहरा होता है ऊपर उछलता है। आप अन्दर उछलते हैं और सागर गहरा है। ऐसी सुन्दर ये विशेषता आपकी बैलेंस और ब्लिस की है। उसी आधार पर आप मुस्कुराहट से, दृष्टि से ब्लेसिंग भी देते हैं और आनन्द के सागर में भी गोता लगाते हैं। दादी के महान व्यक्तित्व का जितना गुणगान किया जाए, उतना कम है। क्योंकि आप सो गुणों की खान, ईश्वरीय वरदान हैं। आपकी ममतामयी पालना में पलकर आज हजारों बहनें ज्ञान गंगा बनकर विश्व में ज्ञान वर्षा कर रहीं हैं।
ऐसी हैं हमारी मीठी दादी जी। आपको जन्मदिन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।







पूर्व उप प्रधानमंत्री ने लिया सम्मेलन में भाग

पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी ने मुख्यालय शांतिवन में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। वहीं माउंट आबू ज्ञान सरोवर में आयोजित सम्मेलन में केंद्रीय यूनियन मिनिस्टर किरण रिजिजू, छत्तीसगढ़ के तत्कालीन मुख्यमंत्री रमन सिंह, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने सम्मेलन में भाग लिया और दादीजी से मुलाकात की।







राष्ट्रीय सम्मेलनों का राज्यपाल के साथ शुभारंभ...

असम के तत्कालीन राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने दादी को मंदिर की प्रतिकृति भेंट की







राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने मुख्यालय में होने वाले सम्मेलनों में अलग-अलग प्रदेश के राज्यपाल के साथ शुभारंभ किया। साथ ही स्नेह मुलाकात कर आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा की और स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मानित किया।







राज्यपालों के साथ दादी की स्नेह मुलाकात



मुख्यालय शांतिवन में होने वाले सम्मेलनों में गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल ओपी कोहली, सीजेआई दीपक मिश्रा, कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल थावरचंद गहलोत, कर्नाटक के तत्कालीन राज्यपाल वजूभाई वाला और नेपाल से पधारे विशेष मेहमान के आगमन पर दादी रतन मोहिनी ने स्मृति चिंह्न भेंट कर स्वागत किया।









वैश्विक शिखर सम्मेलन में पहुंचीं देश-विदेश की जानीं-मानी हस्तियां

अंतराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में हर वर्ष आयोजित होने वाले वैश्विक शिखर सम्मेलन (2018) में देश-विदेश की जानीं-मानीं हस्तियां, राजनेता, कलाकार, मंत्री-मुख्यमंत्री, राज्यपाल भाग लेते हैं। तत्कालीन रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने वैश्विक शिखर सम्मेलन में भाग लिया। दादी रतनमोहिनी ने परमात्मा का स्मृति चिंह भेंटकर स्वागत किया।

मुख्यालय में हर साल आयोजित किया जाता है वैश्विक शिखर सम्मेलन





राष्ट्रीय सम्मेलन में लिया भाग



सीडीएस जनरल विपिन रावत पहुंचे आबू



ब्रह्माकुमारीज़ के अंतराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में आयोजित सम्मेलन में वर्ष 2018 में तत्कालीन चीफ डिफेंस ऑफ स्टाफ (सीडीएस) जनरल विपिन रावत पत्नी के साथ शामिल हुए। इस दौरान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी द्वारा उनका विशेष रूप से सम्मान किया गया। इसके अलावा समय प्रति समय शांतिवन में होने वाले सम्मेलनों में पधारे मेहमानों का दादी द्वारा मोमेंटो, शील्ड प्रदान कर स्वागत, सत्कार किया गया।













प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे पहुंचे शांतिवन

समाजसेवा, मीडिया, राजनीति, की हस्तियों का किया सम्मान

मुख्यालय शांतिवन में आयोजित सम्मेलन में सुप्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे शांतिवन पहुंचे। साथ ही राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी, क्रिकेटर शिखर धवन, सीबीआई के पूर्व निदेशक और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व महानिदेशक डीआर कार्तिकेयन, साउथ के सुप्रसिद्ध अभिनेता टतोटेमपुडी गोपीचंद के पधारने पर दादी रतन मोहिनी द्वारा सम्मान किया गया। इस दौरान अन्ना हजारे ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मानवता की सेवा कर रहा है। ब्रह्माकुमारी बहनें समाज सुधार के लिए समर्पित रूप से सेवाएं कर रही हैं। यह सराहनीय कार्य है।









योगगुरु बाबा रामदेव का किया सम्मान







सभी धर्मों के गुरुओं से की मुलाकात

माउंट आबू के ज्ञान सरोवर परिसर में संत सम्मेलन में योग गुरु बाबा रामदेव ने भाग लिया। इस दौरान दादी जानकी और दादी रतन मोहिनी ने शॉल, स्मृति चिंह भेंटकर बाबा का सम्मान किया। तीन दिन चले सम्मेलन में देशभर से अलग-अलग संत-महात्मा पहुंचे। सभी ने एक स्वर में कहा कि दुनिया में शांति, एकता और खुशहाली अध्यात्म की शक्ति से ही आएगी। जब हम खुद के अंदर बदलाव लाएंगे तभी दुनिया बदलेगी। ब्रह्माकुमारीज़ ने यह साबित कर दिखाया है कि नारी शक्ति में अपार शक्तियां मौजूद हैं।











संतों के बीच दादी मां..

98वें जन्मदिन पर संतों ने किया दादी का सम्मान



दादी रतनमोहिनी का संत-महात्माओं से विशेष स्नेह रहा है। यही कारण है कि समय प्रति समय संतों से ज्ञान चर्चा का वह कोई अवसर नहीं छोड़ती हैं। दादी कहती हैं कि संत-महात्माओं के कारण ही यह दुनिया पवित्रता के बल से टिकी है। संत-महात्माओं का दुनिया को चलाने में बहुत बड़ा योगदान है। ब्रह्माकुमारीज़ संगठन की ताकत भी पवित्रता का बल है।







संत हृदय नवनीत समाना...

शांतिवन मुख्यालय में आयोजन



शांतिवन मुख्यालय में हर वर्ष होने वाले संत सम्मेलन में देशभर से आए संत-महात्मा और महामंडलेश्वर को दादी रतन मोहिनी द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया जाता है। वर्ष में दो बार मुख्यालय में संत सम्मेलन का आयोजन होता आ रहा है। संत-महात्मा ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय आकर यहां की व्यवस्थाओं और आध्यात्मिक ज्ञान से प्रभावित होकर मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं।





उज्जैन कुंभ मेले में दादी ने की संतों से भेंट

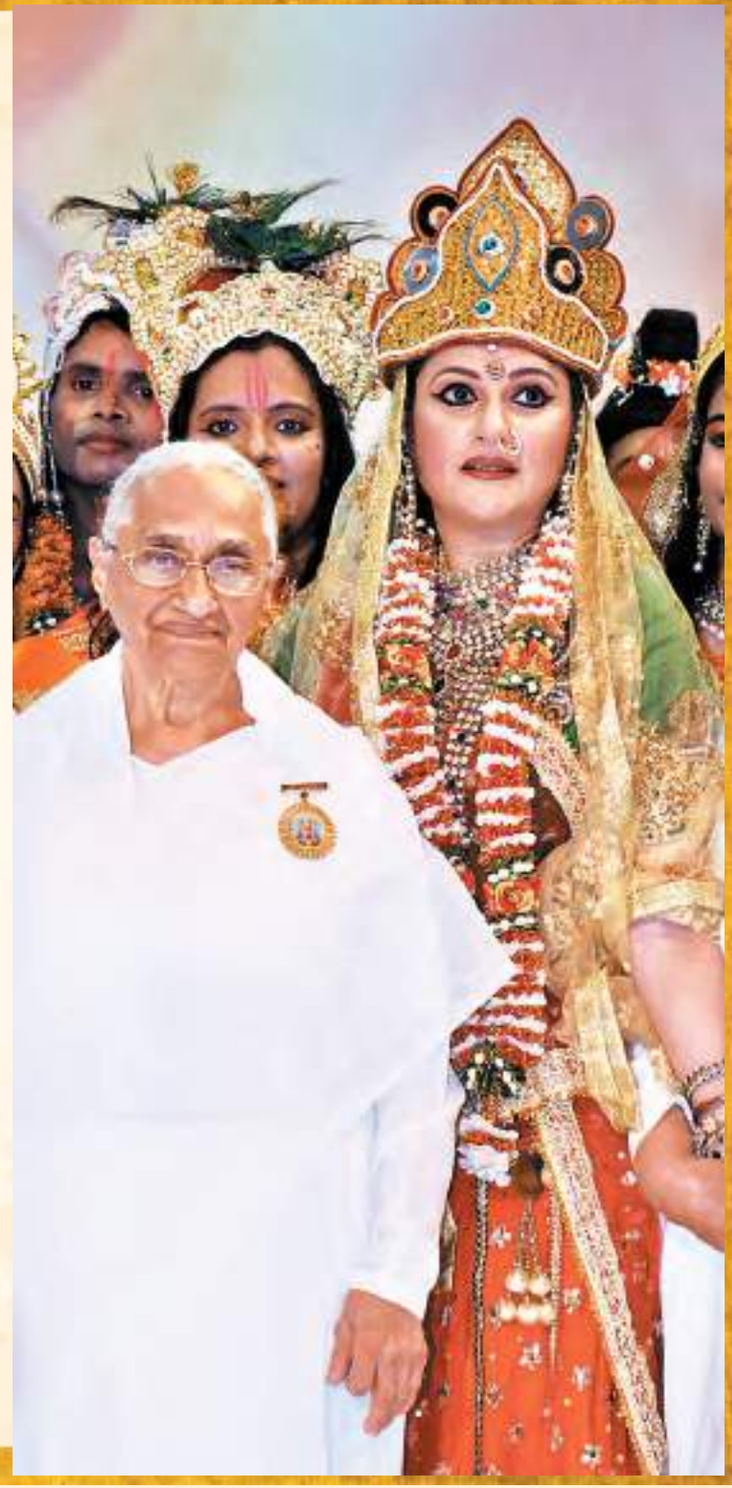
मप्र के उज्जैन में वर्ष 2016 में आयोजित कुंभ मेले में ब्रह्माकुमारीज़ उज्जैन की ओर से विशाल आध्यात्मिक मेला आयोजित किया गया। इसमें संत समागम और आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी, थ्रीडी शो आदि के माध्यम से परमात्मा के अवतरण का ज्ञान दिया गया। मेले का शुभारंभ राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी, राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, विधायक पारस जैन, राजयोगी बीके मृत्युंजय भाई ने किया।

संत सम्मेलनों में लिया भाग, संतों के त्याग-सेवा को सराहा









ग्रैमी अवार्ड प्राप्त रिकी केज का किया सम्मान



तीन बार के ग्रैमी अवार्ड प्राप्त संगीतकार और पर्यावरणविद् रिकी केज का ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से विशेष लगाव है। वह समय प्रति समय मुख्यालय शांतिवन कार्यक्रम में भाग लेने आते हैं। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में पधारे रिकी केज का मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मान किया। बॉलीवुड की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री ग्रेसी सिंह ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाए जाने वाले राजयोग मेडिटेशन का नियमित रूप से अभ्यास करती हैं। अनेक सम्मेलनों में टीम के साथ प्रस्तुति दे चुकी हैं। अहमदाबाद में आयोजित युवा प्रभाग के सम्मेलन में बॉलीवुड अभिनेता उपेन पटेल का दादी ने सम्मान किया।

दादी को अंतर्मुखी रहकर सेवा करते अनुभव किया है

राजयोगी ब्रह्माकुमार करूणा भाई, मल्टी मीडिया चीफ, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

ज्ञान रत्नों की शंख-ध्वनि कर सर्व के अंतर हृदय को मोहने वाली परमात्मा पिता की दुलारी, हम सभी की प्यारी आदरणीया डॉ. रतन मोहिनी दादी जी के शतायु होने पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं... बधाई।

वर्ष 1960 में जब मैं मधुबन में पहली बार आया तो सबसे पहले छोटी दादी राजयोगिनी रतन मोहिनी जी को देखा। परंतु उनकी प्योरिटी और बाबा के प्रति श्रद्धा का हमें तब अनुभव हुआ जब बाबा ने दादी जी को फॉरेन में आरंभ होने वाली सेवाओं के पहले डेलिगेशन के साथ जापान में सेवा के लिए भेजा गया। जैसे मम्मा के लिए हम कहते हैं कि वह अंतर्मुखी होकर सेवा करतीं थी। वैसे ही दादी रतन मोहिनी जी को हमने अंतर्मुखी रहकर सेवा करते अनुभव किया है।

जैसे-जैसे यज्ञ का विस्तार होता गया तो हमने आने वाले कुमार या कुमारियों के लिए टीचर्स ट्रेनिंग एवं रिट्रीट की सेवाएं भी दादी जी के साथ बहुत प्यार से संभाली। आज दादी जी के कुशल नेतृत्व व गाइडेंस में हजारों समर्पित बहनें सारे विश्व में सेवा करते हुए देख रहे हैं।

जब प्रोफेशनल विंग्स बनी तो ख़ास युवा वर्ग की सेवा के लिए दादी जी को अध्यक्ष



बनाया गया। दादी जी का पूरा जीवन ही अपने आप में प्रेरक, आदर्श और ऊर्जावान रहा है। हम सभी दादी जी का शतायु उत्सव मना रहे हैं, परंतु उनके अंदर युवाओं जैसी ही तेजस्विता को अनुभव कर रहे हैं। दादीजी के प्रति सारे यज्ञ के निमित्त दादियों का भी स्नेह हमने देखा है। जैसे बाबा ने संगम युग को सौ साल का कहा है। मैं यही आशा करता हूं कि हमारी दादी जी संगमयुग का भी सौ साल पूरा करेंगी ऐसी हमारी दादी जी के प्रति शुभकामनाएं हैं।

ज्ञानरत्न मूर्त, गुण मूर्त, स्नेह मूर्त दादी का तपस्वी जीवन प्रेरणास्त्रोत है...

राजयोगी ब्रह्माकुमार डॉ. मृत्युंजय भाई, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

संगमयुग में दादी जी हम सभी के लिए प्यारे बाबा की ओर से विशेष रत्न स्वरुप उपहार हैं, वरदान हैं। ज्ञानरत्न मूर्त, गुण मूर्त, स्नेह मूर्त दादी जी का दिव्य अलौकिक तपस्वी जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि ड्रामा में हमें दादी जी के सानिध्य में रहकर 50 वर्षों तक सेवा का पार्ट मिला। दादी जी के साथ में हैदराबाद, सिकंदराबाद, काकीनाड़ा, शांति सरोवर हैदराबाद, आंध्रा के विजयनगर, विजयवाड़ा, वाइज़ेक, कर्नाटक के बैंगलुरु, मैसूर, गुलबर्गा, राजस्थान तथा भारत के अन्य कई राज्यों व शहरों में अनेक मेगा कार्यक्रमों में साथ जाने का सौभाग्य मिला। दादी जी ने ज्ञान के सागर परमात्मा के ज्ञान को स्वयं में समाकर विश्वभर की आत्माओं को ज्ञान रत्नों द्वारा लाइट और माइट देकर उन्हें नवजीवन प्रदान किया है।

मैंने दादी जी को गॉडली स्टूडेंट से लेकर एक गंभीर अनुभवी शिक्षक के रूप में बहुत नजदीक से देखा। ब्रह्माकुमारी टीचर्स बहनों के लिए दादी जी ने ट्रेनिंग कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान, नियमों व धारणाओं से सम्पन्न बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत किया। आपकी स्नेहिल प्रेरणा पाकर आज बहनें भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में ईश्वरीय ज्ञान द्वारा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का महान कार्य कर रही हैं। सदा उमंग उत्साह में रहकर अथक सेवारत दादी जी प्रसन्नचित्त, हर्षितमुख, समाधान स्वरूप रहे हैं। छोटे और बड़े सभी को आदर और सम्मान देते हुए सभी को आगे रखना, प्रोत्साहन देना यह दादी जी की दिव्यता व हृदय की विशालता को दर्शाता है। यह दादी जी का स्वाभविक गुण होने के कारण वह सर्व की प्रिय बनीं। मधुबन में दादी जी के साथ रहकर अनेक प्रेरणाएं लीं। सदैव ही हमें ज्ञान रत्नों के मंथन द्वारा हर बात के समाधान स्वरूप बनने की शिक्षा दी। वह सदा कहतीं कि संकल्पों की इकोनॉमी करते हुए ज्ञान का मंथन करने से निर्णय शक्ति में निखार आता है, जिससे हर कार्य में सफलता मिलती है। सदा ही उनके चारों ओर एक शक्तिशाली



अलौकिक आभामंडल को अनुभव किया है। जो इतना शक्तिशाली होता है कि जो सम्मुख आता वह तृप्त होकर जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका बनने के बाद भी दादी जी का सर्व के प्रति स्नेह- प्यार, समभाव रहा। वे सभी को बड़े ही स्नेह भाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे हैं। वार्षिक मीटिंग में अध्यक्षता करते हुए प्रस्तुत योजनाओं को समझकर सहमति व आशीर्वाद देकर यज्ञ के कार्य को सम्पन्नता की ओर ले जाने के लिए दादी जी सभी का उत्साह-वर्धन करते रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि दादी जी को राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, अनेकानेक मंत्रीगण, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, व्यापारी, मीडिया जगत के दिग्गज हस्तियों से मिलाने के निमित्त बनें। दादी जी ने सभी को ईश्वरीय महावाक्य सुनाकर वरदानों की वर्षा की।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ... जन्म शताब्दी की बहुत-बहुत बधाई।

संस्थान में आने वाली बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति की कमान दादी के हाथ में





वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत बेटियों को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी को ट्रेनिंग प्रोग्राम की हेड नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक आपके ही मार्गदर्शन में प्रतिवर्ष 500 से अधिक बेटियां ब्रह्माकुमारीज़ की ट्रेनिंग लेकर अपना जीवन समाजसेवा और विश्व कल्याण के कार्य में समर्पित करती हैं। बहनों की नियुक्ति का कार्य भी शुरू से लेकर दादी जी के हाथों में रहा है। संस्थान में विधिवत ट्रेनिंग लेने के बाद उन्हें आईकार्ड जारी करने का कार्य आपके ही जिम्मे रहा है। दादी जी के नेतृत्व में अब तक 5600 सेवाकेंद्रों की 50 हजार से अधिक बहनों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

दादी के मार्गदर्शन में हजारों बेटियों ने लिया विश्व सेवा का संकल्प...

बेटियों ने ईश्वरीय सेवा के लिए शिव को जीवन साथी के रूप में स्वीकारा





प्रभु से ऐसा प्रेम कि सीए,डॉक्टर, शिक्षिका, फैशन डिजाइनर, इंजीनियर बनने के बाद विश्व कल्याण और ईश्वरीय सेवा में खुद को अर्पण कर दिया। संयम के पथ पर चलते हुए साधना का यह दुर्गम मार्ग अपनाने वालीं एक दो नहीं बल्कि पूरी 50 हजार बेटियां हैं। 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा में दिन-रात समर्पित भाव से सेवारत हैं। दादी के मार्गदर्शन में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इतिहास में पहली बार सितंबर 2023 में मुख्यालय शांतिवन में बालब्रह्मचारिणी बेटियों का विशाल महासमर्पण समारोह आयोजित किया गया। इस दिव्य महोत्सव में देशभर से आए 15 हजार लोग साक्षी बने। श्वेतवस्त्रों में सुनहरी चुनरी, गले में माला, बिंदी के साथ दुल्हन की तरह सजधजकर जब यह बेटियां डायमंड हॉल पहुंचीं तो तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इन्हें खुशी में नाचते देख हर कोई भावुक हो उठा। अपनी बेटी को संयम के पथ पर चलने का संकल्प लेते देख माता-पिता की आंखों से खुशी में छलक आए। इस दौरान माता-पिता ने अपनी लाड़लियों का हाथ मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी, राजयोगिनी संतोष दीदी के हाथों में सौंपा।



वैश्विक शिखर सम्मेलन: विश्व शांति का अग्रदूत भारत विषय पर किया गया सम्मेलन का आयोजन

देश-विदेश से आईं हस्तियों ने लिया दादी का आशीर्वाद



आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन परिसर में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन (सितंबर 2022) आयोजित किया गया। इसमें देश-विदेश से 50 से अधिक जानीं-मानीं शख्सियतों ने मंथन-चिंतन कर ये निष्कर्ष निकाला कि योग और आध्यात्म से ही विश्व में शांति आएगी। भारत आदिकाल से शांति का पक्षधर रहा है। हमने कभी दुनिया जीतने के नहीं खुद को जीतने के प्रयास किए हैं। हमारी यात्रा



स्व पर विजय और आंतरिक जगत की है। दुनियाभर में आध्यात्मिक संदेश से ही विश्व शांति की संकल्पना साकार हो सकेगी। सम्मेलन का आयोजन विश्व शांति का अग्रदूत भारत विषय पर किया गया था। इसमें विश्व के कई देशों से पांच हजार से अधिक लोकतंत्र के चारों स्तंभ व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया के दिग्गजों ने भाग लिया।



वैश्विक शिखर सम्मेलन में नामचीन हस्तियों ने लिया भाग







मुख्यालय शांतिवन में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में देश की नामचीन हस्तियों ने भाग लिया। इनमें तत्कालीन केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा ने भाग लिया। इन सभी सम्मेलनों में दादी रतन मोहिनी ने आशीर्वचन देते हुए वैश्विक शांति, एकता और भाईचारा बढ़ाने का संदेश दिया। साथ ही अध्यात्म की राह दिखाई।







आजादी का अमृत महोत्सव

स्वर्णिम संसार की ओर...

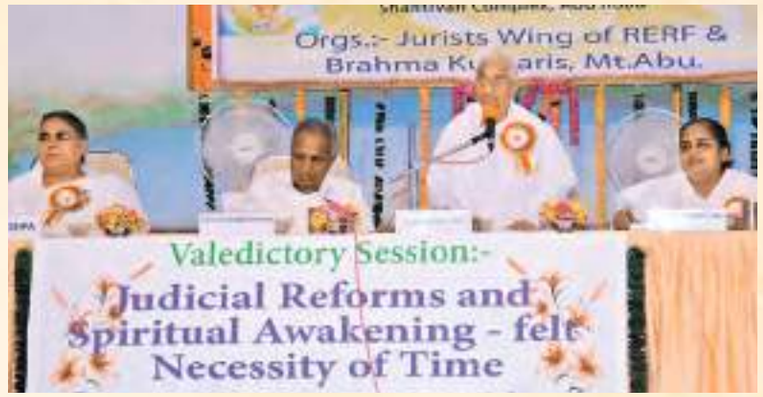


मुख्यालय शांतिवन में आयोजित प्लेटिनम जुबली समारोह में देशभर से नामी-गिरामी संत-महात्माओं ने भाग लिया। वहीं संस्थान के 80 वर्ष पूर्ण होने पर मेगा सम्मेलन आयोजित किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत वैश्विक शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया।









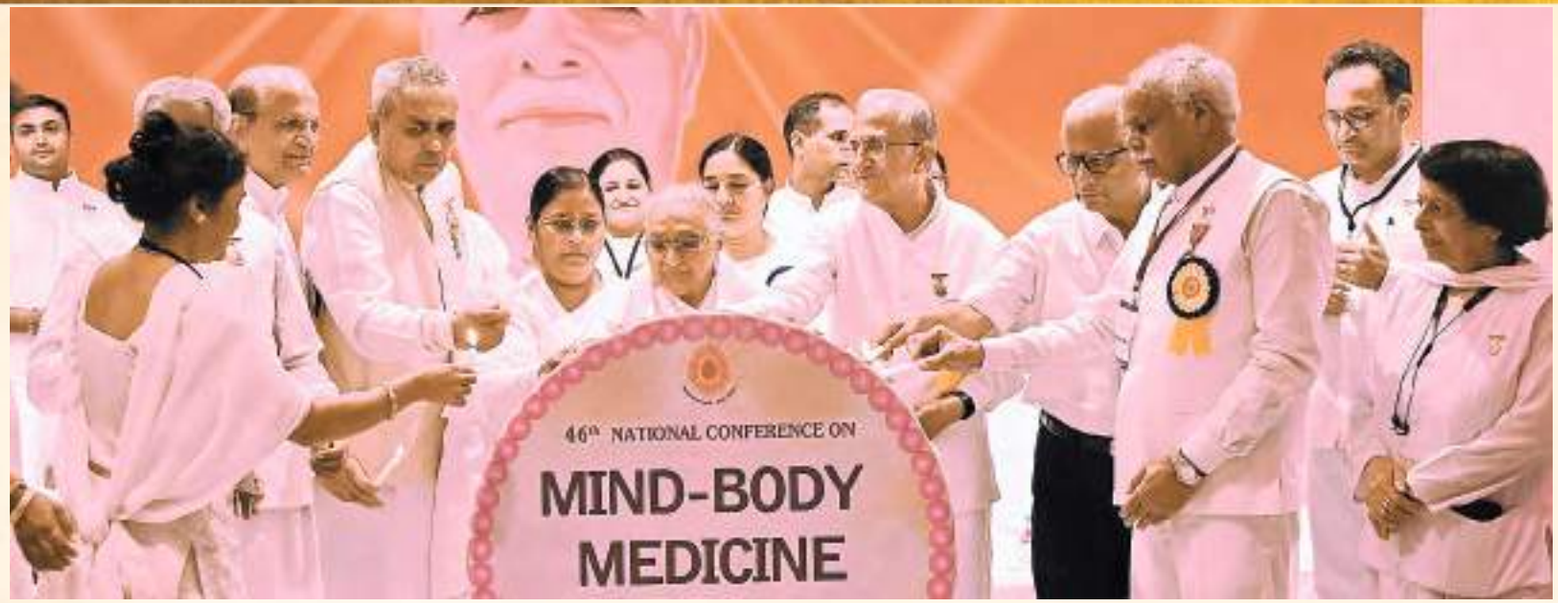
राष्ट्रीय सम्मेलनों में दादी ने दिए आशीर्वचन







शांतिवन में शिक्षा प्रभाग की ओर से मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा स्वच्छ और श्रेष्ठ भारत का पुनर्निर्माण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने शुभारंभ किया। राष्ट्रीय मीडिया कॉन्फ्रेंस में देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रानिक और रेडियो से जुड़े पत्रकारों ने भाग लिया। जूरिस्ट विंग के राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में संबोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी व मंचासीन अतिथिगण। कृषि एवं ग्राम विकास के राष्ट्रीय सम्मेलन का दादी, उप्र के कृषि मंत्री ने किया शुभारंभ। मीडिया विंग सम्मेलन। शिक्षा प्रभाग के सम्मेलन में दादियां।









दादी ने बढ़ाई कार्यक्रमों की गरिमा...

ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन में हर वर्ष होने वाले राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी की गरिमामय उपस्थिति मात्र से सम्मेलन की शोभा बढ़ जाती है। आपकी एक झलक पाने के लिए देश-विदेश से आए लोग पलक बिछाए इंतजार करते हैं। दादी के आशीर्वचन सुनकर लोग खुद को धन्य महसूस करते। दादी का संबोधन लोगों में उमंग-उत्साह भर देता है। इतनी उम्र के बाद भी आप हर कार्यक्रम में जरूर भाग लेते हैं।



14 साल मुंबई में आध्यात्मिक सेवाओं को आगे बढ़ाया

सैकड़ों सभा-सम्मेलन आयोजित कर लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान से कराया रुबरु




मुंबई में सम्मेलन का शुभारंभ करते दादी जी।

ब्रह्मा बाबा के आदेश पर राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने वर्ष 1956 से 1969 तक मुंबई में रहकर ईश्वरीय सेवाओं के विस्तार में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह वह दौर था जब समाज में नारी को हेय दृष्टि से देखा जाता था। नारी को पुरुषों के समान सम्मान प्राप्त नहीं था। ऐसे समय में नारी शक्ति द्वारा यह दिव्य, अलौकिक परमात्म ज्ञान सुनकर लोग चौंक जाते थे। वह ब्रह्माकुमारियों के तार्किक ज्ञान के आगे नतमस्तक हो जाते थे। दादी ने 14 साल तक मुंबई में रहकर अथक मेहनत की। त्याग-तपस्या और समर्पण भाव के चलते बहुत कम समय में यहां बड़ी संख्या में लोग इस ईश्वरीय ज्ञान को सुनने के लिए जुड़ने लगे। धीरे-धीरे सेवाकेंद्र खुलते गए और ब्रह्माकुमारीज़ का विस्तार होता गया। इस दौरान दादीजी के नेतृत्व में महाराष्ट्र में बड़े-बड़े धर्म सम्मेलन, सेमीनार, पब्लिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में मंच से शिव शक्तियां ज्ञानबल की शक्ति से उद्बोधन देतीं तो सब देखते रह जाते थे।




दादी जी के साथ बीके नलिनी और बीके मीरा दीदी।

दो लाख बालब्रह्मचारी युवाओं की आदर्श, प्रेरणामूर्त हैं दादी रतनमोहिनी



40 साल से युवा प्रभाग की संभाल रहीं हैं कमान

- दादी के नेतृत्व में युवा प्रभाग ने रचे कई कीर्तिमान
- देश में निकाले गए अभियानों से प्रेरित होकर हजारों युवाओं की बदली जिंदगी

आबू रोड (राजस्थान)। जीवन के 100वें बसंत में प्रवेश कर रहीं ब्रह्माकुमारीज़ संगठन की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने अपना पूरा जीवन खासकर युवाओं के सशक्तिकरण और नवनिर्माण में लगा दिया। दादीजी के कुशल नेतृत्व, अथक मेहनत, त्याग-तपस्या और सेवा साधना का परिणाम है कि आज ब्रह्माकुमारीज़ में दो लाख से अधिक बालब्रह्मचारी, निव्यर्सनी युवा अध्यात्म के मार्ग पर चल रहे हैं। ये युवा भाई-बहनें कदम से कदम मिलाकर विश्व शांति, विश्व एकता और विश्व बंधुत्व के भाव के साथ दिन-रात ईश्वरीय सेवा में समर्पित हैं। संयमित जीवन और योग साधना इनके जीवन का लक्ष्य है।







फैक्ट

1985 में निकाली गई भारत एकता युवा पदयात्रा

12 यात्राएं एक साथ देशभर से निकालीं गईं

3300 किमी की सबसे लंबी पद यात्रा कन्याकुमारी से दिल्ली के बीच निकाली गई

12550 किमी का पद यात्रियों ने सफर तय किया

24 अक्टूबर 1985 को किया गया समापन

भारत एकता युवा पद यात्रा ने किया 12550 किमी का सफर

तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया था यात्रा का शुभारंभ

वर्ष 1985 में ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के तहत संचालित युवा प्रभाग द्वारा दादी रतनमोहिनी के नेतृत्व में देशव्यापी भारत एकता युवा पद यात्रा निकाली गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया। इस दौरान उन्होंने पदयात्रियों से आह्वान किया कि लोगों को अंधविश्वास, नशाखोरी, बुरी आदतों आदि से मुक्ति दिलाने में यह यात्रा मील का पत्थर साबित होगी। देशभर में एक साथ 12 यात्राएं निकालीं गईं। इनमें से सबसे लंबी पद यात्रा कन्याकुमारी से दिल्ली (3300 किमी) की यात्रा थी। इतनी लंबी यात्रा होने के बाद भी पद यात्रियों का उमंग-उत्साह देखते ही बनता था। भारी बारिश और तूफान के दौरान भी राजयोगी भाई-बहनों के कदम नहीं रुके और रेगिस्तान, जल, जंगल, पर्वत को लांघते हुए मिशन पूरा किया। 24 अक्टूबर 1985 को दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में भारत एकता युवा पद यात्रा का गरिमामय समापन किया गया। सभी यात्राओं ने देशभर में 12550 किमी का सफर तय किया। इस दौरान रास्ते में आने वाले गांवों, स्कूल-कॉलेज, संगठनों में बीके राजयोगी युवाओं ने लोगों को धूम्रपान, शराब और अन्य किसी भी तरह का नशा छोड़ने का संकल्प कराया। यात्रा का परिणाम रहा कि हजारों की संख्या में लोग ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा से प्रभावित होकर जुड़ते गए।

दादी ने बढ़ाया यात्रियों का उमंग-उत्साह

पद यात्रा के दौरान राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने देश के अलग-अलग हिस्सों में चल रहीं यात्राओं में शामिल होकर पद यात्रियों का उमंग-उत्साह बढ़ाया। दादी उन्हें प्रेरित करतीं कि युवा शक्ति कैसे देश-दुनिया को बदल सकती है। दादी अपने दिव्य उद्बोधन से युवाओं में नया जोश भर देती थीं। सबसे बड़ी बात इन यात्राओं में भाग लेने वाले सभी युवा भाई-बहनें ब्रह्मचारी, राजयोगी और व्यसन-विकारों से मुक्त थे। जब यह युवा लोगों से व्यसन, विकार छोड़ने का आह्वान करते तो उनमें गहरी छाप पड़ती, क्योंकि वह खुद इन सबसे दूर थे। विद्यार्थी भी उनके समान बनने का संकल्प लेते थे।

सर्दी, गर्मी, बारिश भी नहीं रोक पाई राह...

सर्दी, गर्मी और भीषण बारिश के बीच ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े निव्यर्सनी, बालब्रह्मचारी युवा भाई-बहनें स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा में शांति और स्वर्णिम भारत का संदेश लेकर निकले। देश के अलग-अलग हिस्सों से एकसाथ सैकड़ों यात्राएं निकालीं गईं। रास्तेभर में आने वाले स्कूलों-कॉलेजों, गांवों में कार्यक्रम, रैली, प्रदर्शनी के माध्यम से युवाओं को राष्ट्र निर्माण के लिए जागरूक करने का संदेश दिया गया। यात्रा का परिणाम है कि हजारों युवाओं ने नशा छोड़ आध्यात्मिक जीवनशैली को अपनाने का दृढ़ संकल्प किया।

अखिल भारतीय नैतिक जागृति अभियान

युवा प्रभाग द्वारा वर्ष 1989 में राष्ट्रीय अध्यक्ष राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के नेतृत्व में अखिल भारतीय नैतिक जागृति अभियान चलाया गया। देशभर से 67 मेटाडोर वाहन रैली निकाली गईं। आध्यात्मिक चित्रों से सुसज्जित इन मेटाडोर रैली में रास्ते में आने वाले स्कूल- कॉलेज, गांवों में लोगों को नशे के हानिकारक दुष्प्रभाव, स्वस्थ जीवनशैली, अंधविश्वास, कुरीतियां छोड़ने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम के दौरान लिखित में युवाओं से संकल्प पत्र भरवाए गए। सालभर चले पूरे अभियान के दौरान देशभर से 1,36,734 लोगों ने स्वेच्छा से व्यसन छोड़ने, अंधविश्वास से दूर रहने का संकल्प पत्र भरा। अभियान में समर्पित रूप से 778 लोगों ने अपनी सेवाएं दीं। 20,85,144 लोगों को नशामुक्ति, व्यसन-विकार छोड़ने और अध्यात्म-राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया गया। जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाने पर भी जोर दिया गया। अनेक स्थानों पर बेहतर दुनिया के लिए वैश्विक सहयोग विषय पर मेगा सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया। समापन 24 सितंबर 1989 को नई दिल्ली में हुआ।



20 लाख लोगों को दिया राजयोग का संदेश, डेढ़ लाख लोगों से भरवाए नशामुक्ति के प्रतिज्ञा पत्र

फैक्ट

1989 में देशभर में चलाया गया अभियान

1,36,734 लोगों से भरवाए नशामुक्ति के संकल्प पत्र

67 मेटाडोर रैली निकाली गईं

20,85,144 लोगों को दिया संदेश

778 प्रतिभागियों ने लिया भाग

1903 गांवों को किया गया कवर



प्रदर्शनी, सेमीनार से युवाओं को किया प्रोत्साहित...

अभियान के तहत सैकड़ों स्कूलों, कॉलेजों, युवा क्लब और सामाजिक सेवा संस्थानों में प्रदर्शनियां, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। कई राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्रियों ने इनमें भाग लिया। इसी वर्ष विश्व परिवर्तन में युवाओं की भूमिका विषय पर देशव्यापी राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता आयोजित कराई गई। इस दौरान प्रदर्शनी, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

सद्भाव का संदेश लेकर देशभर के 3009 गांव में पहुंचे साइकिल यात्री

सद्भाव के लिए युवा साइकिल रैली



एक रैली में 25-30 साइकिल यात्रियों को किया गया शामिल

वर्ष 1993 में युवा प्रभाग की ओर से अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के नेतृत्व में देशव्यापी सद्भाव के लिए युवा साइकिल रैली निकाली गई। रैली का मकसद था लोगों में आपसी सद्भाव, भाईचारा, एकता और सौहार्द्र का संदेश देना और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करना। देश के मेगा शहरों से एक साथ कई रैलियां निकाली गईं। प्रत्येक रैली में बालब्रह्मचारी, निर्व्यसनी, राजयोगी 25-30 युवा भाई-बहनों ने भाग लिया। जो गांव, शहर, कस्बा होते हुए अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचे। रास्तेभर यात्रियों का जगह-जगह जोरदार स्वागत किया गया। देशभर में सभी रैलियों ने 3009 गांव को कवर किया। साथ ही 9,66,508 लोगों को आपसी एकता, भाईचारा, अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया गया।



फैक्ट

- **1993** में निकाली गई सद्भाव के लिए युवा साइकिल रैली
- **9,66,508** लोगों को दिया संदेश
- **3009** गांव को किया गया कवर
- **25-30** युवा एक साइकिल रैली में संदेश लेकर निकले
- **02** अक्टूबर 1993 को दिल्ली में किया गया समापन

यहां से निकलीं आठ राष्ट्रव्यापी रैलियां

मुख्य रूप से चेन्नई, मुंबई, बैंगलुरु, मुजफ्फरपुर, इलाहाबाद, पोरबंदर, वैष्णो देवी और हुसैनीवाला से आठ राष्ट्रव्यापी 'सद्भाव के लिए युवा साइकिल रैली का शुभारंभ किया गया। रैली में शामिल युवाओं का उत्साह इतना था कि सर्दी, गर्मी, बारिश भी इन साइकिल यात्रियों का उत्साह कम नहीं कर पाई।

बेहतर समाज के निर्माण में युवाओं की भागीदारी

पहला युवा महोत्सव: ज्ञान सरोवर अकादमी में आयोजन, देशभर से पहुंचे युवा

ब्रह्माकुमारीज़ के माउंट आबू स्थित एकेडमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड ज्ञान सरोवर परिसर में युवा प्रभाग की ओर से राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में 1 से 5 अक्टूबर 1997 तक युवा महोत्सव आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य युवाओं को एक बेहतर समाज बनाने और अपनी कला के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित करना था। महोत्सव के दौरान छह प्रतियोगिताएं और आठ कार्यशालाएं, सेमिनार सत्र, सकारात्मक परिवर्तन पाठ्यक्रम के सत्र, नुक्कड़ नाटक, मूल्य खेल आयोजित किए गए। महोत्सव में 17 विश्वविद्यालय और 9 युवा संस्थानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। महोत्सव का उद्घाटन वोरा, गुजरात विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर एसबी ने किया। ज्यूरिस्ट विंग के तत्कालीन अध्यक्ष रमेश शाह, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के कुलपति विनोद त्रिपाठी उपस्थित रहे।





फैक्ट

1 से 5 अक्टूबर 1997 तक चला महोत्सव

06 प्रतियोगिताएं हुईं

08 कार्यशालाओं का आयोजन

17 विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने लिया भाग



इन्हें किया पुरस्कृत : सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तीन विश्वविद्यालयों को पुरस्कृत किया गया - इंदिरा कला संगीत विश्व विद्यालय खैरागढ़, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय जबलपुर और सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर।



दूसरा युवा महोत्सव-1998

दस विधाओं में 1200 युवाओं ने दिखाई प्रतिभा



युवा प्रभाग की ओर से राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में 16 से 20 सितंबर 1998 को दूसरा राष्ट्रीय युवा महोत्सव ज्ञान सरोवर माउंट आबू में आयोजित किया गया। इसमें 31 विश्वविद्यालय, संस्थानों और संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले युवा और प्रोफेसर एवं 20 न्यायाधीशों और 1200 युवाओं ने भाग लिया था। इसमें भाषण, निबंध लेखन, कविता, पेंटिंग, बेस्ट फ्रॉम वेस्ट, पोर्ट्रेट और लोक नृत्य जैसी 10 अलग-अलग प्रतियोगिताएं शामिल थीं। उद्घाटन पंजाब के तत्कालीन युवा सेवा राज्य मंत्री गोविंद सिंह कांजला ने किया था। आंध्र प्रदेश के तत्कालीन युवा सेवा मंत्री एस. चंद्रमोहन रेड्डी ने समापन सत्र में भाग लिया। पुरस्कार वितरण अरुणाचल प्रदेश विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष वाई. रामकृष्णुडु द्वारा किया गया। तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने आशीर्वचन प्रदान किए।

तीसरा युवा महोत्सव-1999

युवाओं की जागरूकता से साकार होगा स्वर्णिम भारत का सपना



युवा प्रभाग की ओर से 30 अगस्त से 3 सितंबर 1999 को तीसरा राष्ट्रीय युवा महोत्सव ज्ञान सरोवर माउंट आबू में आयोजित किया गया। युवाओं में आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से 1500 युवाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने कहा अपने अंदर छिपी आध्यात्मिक क्षमता के बारे में जागरूकता के साथ, आपको आज के भारत को कल के स्वर्णिम भारत में बदलने के लिए आगे आना होगा। फिल्म अभिनेता सुदेश बेरी और कलाकार भैरवी रायचुरा ने भी भाग लिया। समापन और पुरस्कार वितरण सत्र की अध्यक्षता संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन भाई ने की।





युवा प्रभाग के 25 वर्ष होने पर सिल्वर जुबली मनाई

मुख्यालय शांतिवन में भव्य समारोह आयोजित, देश-विदेश से दस हजार से अधिक युवाओं ने लिया भाग



युवा प्रभाग की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में मुख्यालय शांतिवन में धूमधाम से सिल्वर जुबली समारोह आयोजित किया गया। इसमें देश-विदेश से दस हजार से अधिक युवाओं ने भाग लिया। इसके अलावा युवा प्रभाग द्वारा देशभर में सेवाकेंद्रों पर सिल्वर जुबली कार्यक्रम आयोजित किए गए।





स्वर्णिम भारत युवा पद यात्रा

30 हजार किमी की विश्व की सबसे लंबी पद यात्रा का रिकार्ड

फैक्ट

20 अगस्त 2006 को मुंबई से शुभारंभ

29 अक्टूबर 2006 को तीनसुकिया आसाम में समापन

1.25 करोड़ लोगों को दिया शांति, प्रेम, एकता और विश्व बंधुत्व का संदेश



ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के नेतृत्व में वर्ष 2006 में देशव्यापी विशाल स्वर्णिम भारत युवा पद यात्रा निकाली गई। इस पद यात्रा को विश्व की सबसे लंबी पद यात्रा का भी गौरव प्राप्त है। इसे लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड में भी शामिल किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ के देशभर में स्थित रिट्रीट सेंटर, सेवाकेंद्रों से एक साथ अलग-अलग यात्राओं की शुरुआत की गई। प्रत्येक यात्रा ने 375 किमी का सफर तय किया। 20 अगस्त 2006 को मुंबई से यात्रा का शुभारंभ किया गया और 29 अक्टूबर 2006 को तीनसुकिया असम में समापन किया गया। स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा द्वारा पूरे देश में 30 हजार किमी का सफर तय किया। इसमें पांच लाख ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। सवा करोड़ लोगों को शांति, प्रेम, एकता, सौहार्द्र, विश्व बंधुत्व, अध्यात्म, व्यसनमुक्ति और राजयोग ध्यान का संदेश दिया गया।

देशभर में युवा शांति, सौहार्द्र और खुशहाली का संदेश लेकर निकले



शांतिदूत

युवा साइकिल यात्रा से दिया शांति का संदेश

एक यात्रा में 25-30 युवाओं ने भाग लिया

युवा प्रभाग की ओर से अध्यक्षा दादी रतनमोहिनी के नेतृत्व में वर्ष 2013 में शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा देशभर में धूमधाम से निकाली गई। ब्रह्माकुमारीज़ के रिट्रीट सेंटर से इन यात्राओं का शुभारंभ किया गया। यात्रा में बालब्रह्मचारी, निर्व्यसनी युवाओं ने भाग लिया। एक यात्रा में 25-30 युवाओं ने भाग लिया। इस दौरान रास्ते में आने वाले गांवों, स्कूल, कॉलेज में युवाओं को शांति, एकता और सौहार्द्र का संदेश दिया। साथ ही युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनने, अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाने, लक्ष्य पर फोकस करने के लिए प्रेरित किया गया। युवाओं को संकल्प कराकर जीवन में सदा सभी तरह के नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई गई। रास्तेभर साइकिल यात्रा का लोगों ने जोरदार स्वागत किया।











राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में युवाओं में जगाया उमंग-उत्साह

देशभर से युवा लेते हैं भाग, युवाओं के सशक्तिकरण पर दिया जाता है जोर



वर्ष 1985 में ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के तहत युवा प्रभाग की स्थापना की गई। तब से लेकर आज तक संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में हर वर्ष साल में दो बार राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। इसमें हर क्षेत्र से जुड़े युवा भाग लेते हैं। इन सम्मेलनों में अब तक लाखों युवाओं ने भाग लेकर अपने जीवन को सकारात्मक दिशा दी है। साथ ही राजयोग मेडिटेशन सीखकर सफलता के नए आयामों को छुआ है।

युवाओं को नई दिशा देती... मेरा भारत,
स्वर्णिम भारत यात्रा



03 साल देशभर में निकाली पीस मैसेजर बस

55230 किमी का किया भ्रमण

5900 कार्यक्रम हुए

893275 लाभांवित

733505 युवाओं को दिया राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्म का संदेश

दादी रतनमोहिनी के मार्गदर्शन में अहमदाबाद से ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ विंग द्वारा युवाओं को आध्यात्मिकता से जोड़ने, व्यसनमुक्ति का संदेश देने, मोटिवेट करने और भारतीय पुरातन संस्कृति से रुबरु कराने के उद्देश्य को लेकर अहमदाबाद के सबजोन सेवाकेंद्र महादेवनगर से मेरा भारत, स्वर्णिम भारत यात्रा की शुरुआत वर्ष 2017 में की गई। इसके तहत पीस मैसेंजर बस एक्जीविशन से युवाओं को जागरूक किया जा रहा है।

- कॉलेजों में जाकर युवाओं को किया मोटिवेट
- **यात्रा में बालब्रह्मचारी व निर्व्यसनी युवा रहे शामिल**
- अहमदाबाद से 2017 में शुरुआत













दादी के नेतृत्व में मेगा सम्मेलन आयोजित

दादी ने देश के कोने-कोने में दिया अध्यात्म का संदेश

राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी के नेतृत्व में देश के कोने-कोने में राष्ट्रीय मेगा सम्मेलन, महोत्सव आयोजित किए गए। इनमें मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता के रूप में दादी ने राजयोग मेडिटेशन और परमात्म अवतरण का गीता ज्ञान दिया। इन सम्मेलनों में दादी की एक झलक पाने के लिए बड़ी संख्या में लोग उमड़ते। दादी को सफलता का वरदान प्राप्त था यही कारण है कि आपने जहां-जहां कदम रखे, वहां ईश्वरीय सेवाओं को नए आयाम मिले। आपने जीवन पर्यंत पूरी लगन, समर्पण भाव, मेहनत, सेवा, त्याग-तपस्या और साधना के आधार पर हर जिम्मेदारी को निभाया है। आपका एक-एक कर्म सदा आदर्श रहा है।











पेंटिंग एक्जीबिशन

कलाकारों का सम्मान से बढ़ाया मान

मुख्यालय शांतिवन में हर वर्ष आयोजित राष्ट्रीय पेंटिंग कॉम्पटिशन में देशभर से कलाकार, चित्रकार भाग लेते हैं। अलग-अलग विधाओं में सिलेक्टेड पेंटिंग्स के लिए पुरस्कृत किया जाता है। इनमें भाग लेने वाले कलाकारों का दादी रतन मोहिनी ने सम्मान कर सभी का उत्साह बढ़ाया। एक कलाकार ने दादी की खूबसूरत हूबहू पेंटिंग्स बनाकर भेंट की।











राजस्थान और गुजरात के कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधन

दादी रतन मोहिनी शुरू से ही राजस्थान जोन की निदेशिका का भी दायित्व संभाल रहीं हैं। इसलिए राजस्थान में सेवाओं के प्रति उनका विशेष लगाव था। समय प्रति समय उन्होंने बड़े-बड़े शहरों में आयोजित मेगा सम्मलनों में सभा को संबोधित किया।



ब्रह्माकुमारीज़ के 75 साल पूर्ण होने पर इंदौर में महोत्सव में लिया भाग





ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित मेगा सम्मेलन में दादी रतन मोहिनी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने संस्थान के सफर, सेवा और ज्ञान को सभी के समक्ष रखा। दादी के आगमन पर इंदौर में जोरदार स्वागत किया गया।









हैदराबाद में द वर्ल्ड यूनिटेड सम्मेलन को किया संबोधित





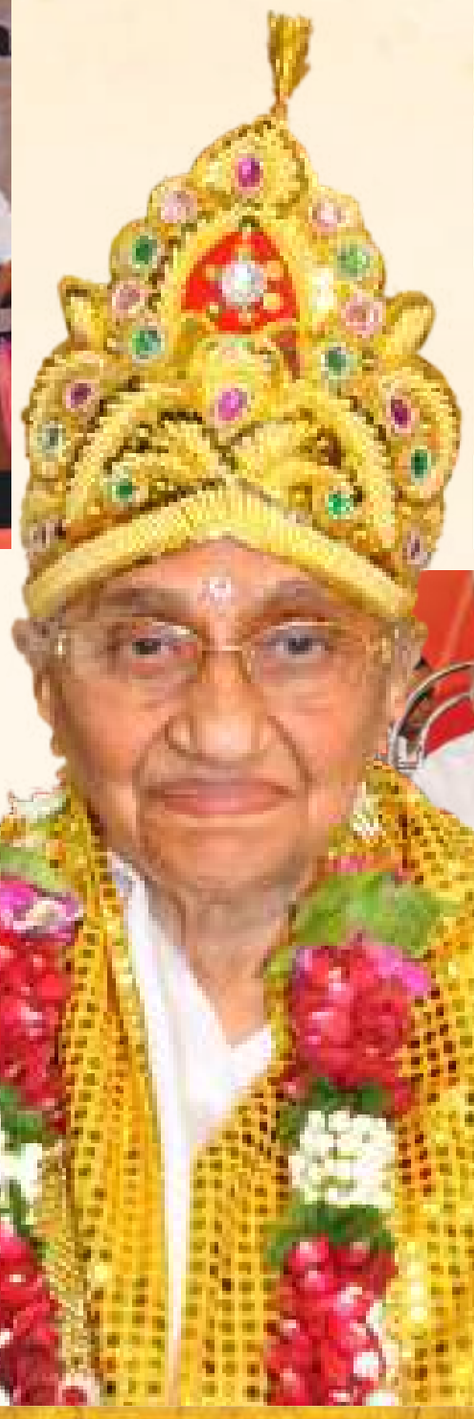






हैदराबाद में आयोजित द वर्ल्ड यूनिटेड सम्मेलन में दादी रतन मोहिनी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए विश्व एकता और विश्व शांति पर जोर दिया। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके कुलदीप दीदी के नेतृत्व में दादीजी का भव्य स्वागत किया गया। वहां बीके सदस्यों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए दादीजी ने विशेष रूप से सभी को प्रेरित करते हुए उमंग-उत्साह बढ़ाया।







वन गॉड वन फैमिली

महोत्सव में मुंबई पहुंचीं दादी

ब्रह्माकुमारीज़ के प्लेटिनम जुबली समारोह में मुंबई पहुंचीं दादी रतन मोहिनी ने वन गॉड वन फैमिली महोत्सव में भाग लिया। इस दौरान मुंबई में अलग-अलग स्थानों पर कई महोत्सव आयोजित किए गए। जहां दादी ने लोगों को वन गॉड वन फैमिली का संदेश देते हुए ईश्वरीय ज्ञान दिया। इसके पूर्व दादी ने 14 साल तक मुंबई में रहकर ईश्वरीय सेवाओं को नए आयाम दिए थे।







कोलकाता में अनेक कार्यक्रमों में लिया भाग, जोरदार स्वागत...







दादी रतन मोहिनी के कोलकाता आगमन पर सबजोन निदेशिका बीके कानन दीदी के नेतृत्व में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान संत सम्मेलन आयोजित किया गया। वहीं ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में दादी का चुनरी, मुकुट पहनाकर बीके सदस्यों द्वारा विशेष रूप से सम्मान किया गया।



सिकंदराबाद और नागपुर में युवा प्रभाग की सिल्वर जुबली मनाई











ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी के नेतृत्व में देशभर में युवा प्रभाग की सिल्वर जुबली मनाई गई। इस दौरान दादी ने सिकंदराबाद और नागपुर में आयोजित समारोह में भाग लिया। साथ ही देश के अन्य हिस्सों में आयोजित कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और युवाओं को जीवन में एक लक्ष्य के साथ आगे बढ़ने, अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाने के लिए प्रेरित किया। सम्मेलनों में स्थानीय क्लब और संगठनों द्वारा दादी का सम्मान किया गया।





उदयपुर और वारंगल में शिवरात्रि महोत्सव में लिया भाग







उदयपुर में आयोजित शिवरात्रि महोत्सव और मेले का उद्घाटन राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने किया। इस दौरान संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई सहित मधुबन मुख्यालय से पहुंचे सैकड़ों भाई-बहन भी मौजूद रहे। वहीं तेलंगाना वारंगल में आयोजित समारोह में दादी का विशेष रूप से सम्मान किया गया।



शांतिवन में सोलार सिस्टम का उद्घाटन





तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के साथ दादी रतनमोहिनी ने थर्मल पावर प्लांट के पास स्थापित नवीन सोलार पावर पैनल सिस्टम का उद्घाटन किया। साथ ही इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन शिव ध्वजारोहण कर किया। बीके बुजुर्गों के लिए बनाए गए शिवमणि होम का दादी ने उद्घाटन किया।











बच्चों की प्यारी दादी मां...







दादी को शुरू से ही बच्चों से विशेष प्रेम रहा है। इसलिए कार्यक्रमों में प्रस्तुति देने वाले बच्चों का सम्मान करना कभी नहीं भूलती हैं। साथ ही उनके साथ बच्चा बनकर हंसी-मजाक करना बच्चों को अपनी दादी मां का अहसास कराता है।



ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के साथ दादी

दादियों संग दीपावली और होली उत्सव के यादगार पल









अंतराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में भारतीय संस्कृति से जुड़े दीपावली पर्व से लेकर होली, दशहरा, रक्षाबंधन, शिवरात्रि, नवरात्रि, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि त्योहार-पर्व बड़े ही धूमधाम और उमंग उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। सभी वरिष्ठ दादियां और भाई-बहनें आपस में मिलकर हर साल इन त्योहार-पर्व को मनाते हैं। भाई-बहनों में उमंग-उत्साह का संचार करते हैं। सभी दादियों का आपस में गहरा स्नेह और आदर भाव सदा रहा है।





सभी दादियों का आपस में है गहरा स्नेह-प्यार...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की स्थापना से लेकर जीवन पर्यंत राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी मोहिनी दीदी और दादी ईशु का आपस में गहरा स्नेह-प्यार रहा। दादी जानकी के 99वें जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में सभी दादियों ने मिलकर केक काटा और बधाई दी। इस मौके पर सभी वरिष्ठ दादियां, दीदियां व अन्य भाई-बहन मौजूद रहे।







ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनिया का एकमात्र और सबसे बड़ा ऐसा संगठन है जो नारी शक्ति द्वारा संचालित किया जाता है। संस्थान में चौथी पास से लेकर पीएचडी होल्डर, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शिक्षक, साइंटिस्ट, फैशन डिजाइनर बेटियां समर्पित रूप से तन-मन-धन से अपनी सेवाएं विश्व कल्याण के लिए दे रही हैं। जिनके जीवन का एक ही मकसद है विश्व शांति और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना। इन बेटियों के लिए संस्थान की सभी वरिष्ठ दादियां प्रेरणास्रोत, आदर्श और पालनहार हैं। दादियों की बदौलत आज इस संस्थान की सेवाएं विश्व स्तर पर हैं।







राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी का सभी दादियों से रहा है गहरा स्नेह-प्यार

ईश्वरीय परिवार की प्यारी हैं दादी मां...









धूमधाम से मनाया जन्मदिवस

दादी के जन्मोत्सव की झलकियां...



राजयोगिनी डॉ. दादी रतन मोहिनी का जन्म दिवस हर वर्ष शांतिवन मुख्यालय में बड़े ही उमंग-उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। हर वर्ष ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को दादी के जन्मोत्सव का बेसब्री से इंतजार रहता है। दादी मां के प्यार, पालना और स्नेह से हर कोई उनका मुरीद है।











99वां जन्मोत्सव समारोह

सम्मेलन में देशभर से आए संत-महात्मा

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी के 99वें जन्मोत्सव पर शांतिवन मुख्यालय में विशाल संत समागम का आयोजन किया गया। इसमें देशभर से महामंडलेश्वर, संत, महात्माओं ने भाग लिया। सभी ने दादी की सेवा साधना, त्याग, तपस्या को सराहा। दादी को नारी शक्ति की मिसाल बताते हुए विश्व कल्याण में उनकी सेवाओं को उल्लेखनीय बताया। इस मौके पर शांतिवन में शोभायात्रा निकाली गई।







उत्सव का दिन

दादी के 99वें जन्मदिवस का उत्साह...



दादी का 99वां जन्मदिवस मुख्यालय शांतिवन में धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर उनके निवास से डायमंड हॉल तक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें भाई नाचते गाते चल रहे थे तो बहनें सिर पर कलश धारण कर चल रहीं थीं। संत-महात्माओं की मौजूदगी में केक काटकर जन्मदिन मनाया गया।









इस विद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक की साक्षी रही हूं: दादी







शताब्दी महोत्सव
20 हजार लोगों की मौजूदगी में मनाया गया



आबू रोड/राजस्थान। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की जन्म शताब्दी पूर्ण होने पर मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय शताब्दी महोत्सव मनाया गया। इसमें देश-विदेश से 20 हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। महोत्सव में विशेष रूप से ड्राईफ्रूट से बनी 150 किलो की माला पहनाकर दादी का सम्मान किया गया। इसे 15 लोगों ने दस दिन में तैयार किया। यह माला कानपुर सबजोन द्वारा बनाई गई थी। शुभारंभ पर दादी कॉलेज से डायमंड हाल तक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे परमात्मा के कार्य में सेवा का मौका मिला। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थापना से लेकर आज तक इसकी साक्षी रही हूं। दूसरों के लिए जीना ही असली जीवन है।







दादी को डॉ. अब्दुल कलाम वर्ल्ड पीस और महाकरुणा अवार्ड से नवाजा

महिलाओं में दया और प्यार की भावना कर सकती है विश्व का नेतृत्व: भिक्खू संघसेना



आबू रोड। शताब्दी महोत्सव के दूसरे दिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को अखिल भारतीय मानवाधिकार परिषद द्वारा डॉ. अब्दुल कलाम वर्ल्ड पीस अवार्ड और महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर लेह लददाख द्वारा महाकरुणा अवार्ड से सम्मानित किया गया।

महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर के संस्थापक अध्यक्ष भिक्खू संघसेना ने कहा कि पुरुष प्रधान देश में महिलाओं को सम्मान देने का काम ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने किया है। यहां की बहनें पूरे विश्व के 140 देशों में अध्यात्म और राजयोग का परचम फहराया है। इनमें परिवार, समाज और देश को चलाने की शक्ति है। यहां आने के बाद एक अलग ही ऊर्जा की महसूसता होती है। संस्था की प्रमुख दादी ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा में लगाया है। महात्मा बुद्ध ने भी समाज में एकता और समरसता के लिए काम किया। यदि व्यक्ति खुद को मानव बनाना सीख जाये तो इस दुनिया से दरिद्रता मिट जायेगी।

नई दिल्ली के अखिल भारतीय मानवाधिकार परिषद के अध्यक्ष डॉ. एन्थोनी राजू ने कहा कि दादी एक नारी शक्ति की मिसाल हैं। उनके सानिध्य में आज एक ऐसी फौज तैयार है कि पूरे जगत में मानवता का दीपक जगाया जा सके। मानवाधिकार परिषद को दादी को सम्मानित करके गौरवान्वित महसूस कर रहा है।



शताब्दी महोत्सव

दादी का जीवन नारी शक्ति और अध्यात्म शक्ति की मिसाल है

आबू रोड। शताब्दी महोत्सव में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि दादी ने अपना पूरा जीवन विश्व कल्याण और लोगों की भलाई के लिए लगा दिया। आज दादी जी के मार्गदर्शन में एक दो नहीं बल्कि हजारों बहनें विश्व कल्याण में जुटी हैं। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि परमात्मा और ब्रह्मा बाबा ने जिस विश्वास और भरोसे के साथ दादी जी को जिम्मेदारी सौंपी उन्होंने उससे कई गुना बढ़कर अपने कर्मों से उदाहरण पेश किया। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि दादी का जीवन नारी शक्ति की मिसाल है। कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज यह विश्व विद्यालय देश सहित विदेश में अध्यात्म का शक्तिपुंज बनकर लोगों को जीने की नई राह दिखा रहा है। इसे आज यहां तक पहुंचाने में दादी जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

महासचिव बीके निर्वैर भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी दीदी, बीके संतोष दीदी और बीके शशि दीदी, मीडिया निदेशक अध्यक्ष बीके करुणा भाई, मुंबई घाटकोपर सबजोन की निदेशिका बीके नलिनी दीदी, मलेशिया की बीके मीरा दीदी, रशिया सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका बीके संतोष दीदी, हैदराबाद शांति सरोवर की निदेशिका बीके कुलदीप दीदी, युवा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके चंद्रिका दीदी, जयपुर सबजोन निदेशिका बीके सुषमा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन जयपुर की बीके चंद्रकला दीदी और भोपाल से आईं डॉ. बीके रीना दीदी ने किया।









कलाकारों की जुगलबंदी से जीवंत हुए पात्र



शताब्दी महोत्सव

शताब्दी महोत्सव में चार दिन तक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें मुंबई घाटकोपर सबजोन से आए कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया तो भोपाल ब्लैसिंग हाउस से आए कलाकारों ने डॉ. बीके रीना दीदी के मार्गदर्शन में ऐसी प्रस्तुति दी कि सभी देखते रह गए। कलाकारों की जुगलबंदी से पात्र जीवंत हो उठे और दर्शक भाव-विभोर हो गए। रशिया से आए कलाकारों ने भारतीय गीतों पर अपनी प्रतिभा दिखाई।





राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी गौतमी दीदी, सहायक राष्ट्रीय संयोजिका, नाइजीरिया

दादी को देखकर लगता है कि टीचर हो तो आपके जैसी

दादी जी के साथ बहुत सूक्ष्म बातें सीखने को मिलीं

नाईजीरिया, अफ्रीका लेगोस में लाईट हाऊस ब्रह्माकुमारीज़ का सेन्टर 35 सालों से है। जब दादी जानकी जी ने अनेक सिंधी भाई-बहनों की रिक्वेस्ट पर रीवा दीदी को लंदन से भेजा। रीवा दीदी की पालना में हम 13 साल से सेवा कर रहे हैं। वैसे तो 24 साल से राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। बाबा की सेवाओं में समर्पित रूप से बाबा जहां भेजे वहां सब जाकर सीखना और अनुभव मिल रहा है, आगे बढ़ा रहा है। दादी रतनमोहिनी जी के साथ बहुत सूक्ष्म, बहुत सारी बातें सीखने का मुझे मौका मिला।

जब पहली बार दादी जी से मुलाकात की तब हम योगिनी दीदी के सेन्टर विलेपार्ले में थे। दादी विदेश की सेवा करके मधुबन जा रहे थे। तो ऑन द वे उनका मुम्बई में स्टॉप ऑवर था। सेन्टर पर आये, और उनकी सेवा करने का भाग्य मिला। हमने देखा दादी अपने सूटकेस को कितना अच्छा पैक करते हैं। चाहे वो सफाई करने वाले कपड़े होंगे, चाहे साफ कपड़े होंगे या जरूरत का सामान होगा।

उस समय लीला दीदी भी उनके साथ थे परन्तु वो पर्सनली सब चीज का ख्याल खुद रखते थे। दादी बोली गौतमी मेरे पेटी से टॉवल निकालो। मैं देख रही थी टॉवल कहां है, शायद ऊपर ही होगा या नीचे होगा या फिर सूटकेस में कहीं दिखेगा करके। जैसे शोरूम में ऐसे रैप करके रखते हैं ना, ऐसे दादी ने साईड में अच्छे से रैप करके रखा हुआ है। बहुत छोटी-छोटी चीजें हैं।



इतनी अच्छी तरह से उन्होंने पैक करके रखा। सूटकेस पैकिंग अगर सीखना है तो दादी से सीखना पड़ेगा। इतनी सुन्दर, इतनी व्यवस्थित, इतना सारा सामान और इतने से छोटे सूटकेस में। जब हम मधुबन आए बाबा मिलन पर और हर बाबा मिलन पर चार्ज हो जाते थे। परन्तु बाबा मिलन के बाद जो गीत बजता था, और सभी दादियां अपने शरीर की अवस्था के अनुसार धीरे-धीरे चले जाते, लेकिन रत्तनमोहिनी दादी जी ने वेट करके हम सबको जो पालना दी बहुत अमेजिंग, जिसे कभी हम भूल नहीं सकते।

दादी बहुत स्पेशल फील कराती हैं...

जब भी हम मधुबन को याद करते, बाबा मिलन को याद करते, दादीजी की यादों की और पालना मिली है, इतनी खुशी से, इतना आधा घण्टा तक भी खड़ा रहकर के ताली बजाते, उमंग-उत्साह बढ़ाते और वो गीतों पर जो झूमते थे। हम सब इतनी भीड़ में रहते थे और किसी को ये नहीं लगता था, कि हमको कोई वैल्यू नहीं करते। दादी हम सबको बहुत स्पेशल फील कराती थीं। इतनी बड़ी भीड़ और हर एक को देखकर ताली बजाकर, उनके चेहरे पर रूहानियत, आँखों में जो रूहानी प्यार, चेहरे पर जो मुस्कुराहट, आनन्द और उमंग-उत्साह, हर्षोल्लास का जो अनुभव होता था। दादीजी को देखते-देखते, हम कभी नहीं भूल सकते। अभी भी वो गीत जब भी बजता है हमारे सेन्टर पर, नाईजीरियन भी झूम उठते हैं हमारे यहाँ तालियाँ बजाते-बजाते।

दादी बहुत स्पेशल फील कराती हैं...

दादी नहीं होती है तो बहुत मिसिंग होती है। परन्तु अभी मधुबन में जब वो गीत बजता है तो दादी शांति से देखते रहते हैं। ऐसा लगता है कि दादी ताली बजाते हुए मुस्कुराते शांति से बैठे हैं। मानो एक लाईट हाऊस है खुशी का। जो देखते-देखते हम सबके अन्दर एक उमंग-उत्साह की लहर भरती है। मेरा अनुभव है जब हमें नाईजीरिया में बाबा ने सेवा के लिए भेजा था। तो वहां से अनेक गेस्ट को मधुबन पावन धरती पर लाने का बहुत सुन्दर मौका मिला। और सबसे पहले मम्मा इलाका नाम करके एक 80 साल की, उस समय वो 82 साल की थी। तो वे मधुबन आये। वह एक महिला संगठन की अध्यक्षा थीं जिसमें चार हजार महिलाएं जुड़ी हैं। जब भी उनकी मीटिंग होती थी, उसमें हम सबको बुलाते थे और बोलने का मौका देते थे। बड़े प्यार से ज्ञान सुनते थे और उनको ज्ञान से बहुत प्यार था।

जब दादी ने इंग्लिश में बात की...

जब मैंने उनको निमन्त्रण दिया मधुबन चलने का तो उनको बहुत अच्छा लगा और कहा कि मेरे साथ कोई चलना चाहिए। तो एक नाईजीरियन माता को तैयार किया। उन माता का नाम बासी है और काफी समय से राजयोग का अभ्यास कर रहे थे। तो उन्होंने सहज ही मान लिया ओर उस माता का पूरा खर्चा भी मम्मा इलाका ने लिया। मम्मा इलाका तो बहुत खुश हो गए मधुबन आकर। वहां पर उस समय बड़ी दादी नहीं थे तो रतन मोहिनी दादीजी ने समय दिया। अपॉइन्टमेंट का टाईम फिक्स होने के बाद हम मम्मा इलाका को वहां लेकर गए। जैसे ही दादी आए मुझे लगा शायद दादी दृष्टि देंगे, पूछेंगे, टोली ब्लेसिंग देंगे। परन्तु पांच मिनट का जो अपॉइन्टमेंट था।

वह पल अविस्मणीय था...

45 मिनट दादी ने इंग्लिश में बोला। पूरा ज्ञान दादी ने इंग्लिश में सुनाया। वो अनुभव मेरे लिए और मम्मा इलाका के लिए अविस्मणीय था। मम्मा इलाका अभी भी नहीं भूलती हैं। दादी को मम्मा-मम्मा बुलाती हूं और दादी को सुनते-सुनते एकटक, बिना इधर-उधर झाँके। दोनों एक- दूसरे को देख दृष्टि भी दे रहे थे, और इंग्लिश में पूरा ज्ञान सुनया दादी ने। मम्मा इलाका आज भी उस अनुभव को हर गैदरिंग में सुनाती हैं। दादीजी को देखकर लगता है टीचर हो तो ऐसी हों।

आदर्श ब्रह्माकुमारी की प्रेरणास्त्रोत हैं दादी रतन मोहिनी

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चंद्रिका दीदी, निदेशिका,
महादेव नगर सबजोन, अहमदाबाद, गुजरात



मैं अपना परम सौभाग्य समझती हूं कि आदरणीय दादी रतनमोहिनी जी का संग मुझे 58 वर्षों से प्राप्त है। दादी जी का बेहद का प्यार, आगे बढाने की श्रेष्ठ भावना एवं श्रेष्ठ शिक्षा का अनुभव मैंने हमेशा किया है। कुमारी जीवन से एक आदर्श ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग मुझे दादीजी से प्राप्त हुई। जीवन को समर्पण करने के बाद एक सफल सेवाकेन्द्र संचालन का व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण भी मैंने दादी जी से प्राप्त किया है। मेरा यह भी परम सौभाग्य रहा कि संस्था द्वारा शुरू की गई यूथ विंग में दादीजी के साथ मुझे नेशनल लेवल पर काम करने का श्रेष्ठ अवसर प्राप्त हुआ। दादी जी ने मुझे यूथ विंग में नेशनल कोऑर्डिनेटर के रूप में युवाओं की सेवा के लिए निमित्त बनाया। जिसके फलस्वरुप आज भी मैं युवाओं सी ऊर्जा का अनुभव करती हूं। शरीर की अपनी मर्यादा होने के बावजूद भी शरीर को चलाने की कला भी दादी जी से ही सीखी। समय प्रति समय दादी जी से मिले मार्गदर्शन के कारण मैं जिम्मेवारी को बखूबी निभा पाई। ईश्वरीय विद्यालय द्वारा प्राप्त कोई भी जिम्मेवारी हो, दादी जी ने उमंग-उत्साह के साथ एक्यूरेट निभाई है। इसी विशेषता ने हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों को आदर्श ब्रह्माकुमारी बनने के लिए प्रेरित किया। आप हमेशा यज्ञ स्नेही के साथ यज्ञ रक्षक भी हैं। आपका यथार्थ मार्गदर्शन अनेक ब्रह्मा वत्सों के लिए मिलता रहा है। पैड ऑफिस यज्ञ की विशेष जिम्मेवारी का श्रेष्ठ उदाहरण आपसे प्राप्त ट्रेनिंग एवं समय प्रति समय रीफ्रेशन कोर्स ने हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों की बहुमुखी प्रतिभा को निखारा है। आपके ही अथक प्रयास से 50 हजार से भी अधिक ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रूप से विश्व की सेवा में तत्पर हैं। शांतिवन में आपके नाम से पहचाने जाने वाले पैड ऑफिस यज्ञ की विशेष जिम्मेवारी का श्रेष्ठ उदाहरण है।

दादी ने मुझे राजयोग कोर्स कराना सिखाया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी भारती दीदी,
सबजोन निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, राजकोट, गुजरात



हम ज्ञान में मुंबई में 1952 से पूरा परिवार तीनों बहनें (नीमू दीदी, सरला दीदी और मैं) आए। उस समय दादी रतन मोहीनी जी भी मुंबई (कोलाबा) में फ्लैट में सेवा पर थे। उस समय मैं 11 साल की थी और पढ़ाई चल रही थी। जब भी दादी जी से मिलना होता था तो मैंने देखा कि वह बहुत चुस्त और एक्यूरेट रहते। बाबा का ज्ञान सहज रूप से सुनाने का दादीजी को बहुत शौक रहा। उस समय सेवाएं धीरे-धीरे चारो ओर फैलती जा रहीं थी। दादी जी कन्याओं को ट्रेनिंग देते थे। कैसे प्रदर्शनी समझना, कोर्स कराना, स्टूडेंट को हैंडल करना आदि।

सन 1957 - 58 में बाबा की आज्ञा अनुसार जब मेरा कोलकाता सेवा अर्थ जाना हुआ तो मीठी मम्मा वहां थे। दादी भी मम्मा के साथ कोलकाता सेवा पर थे। मैंने देखा कैसे मम्मा और दादीजी एक धर्मशाला में रहकर सेवा करते थे। मेरी लौकिक मौसी वहां पर थीं। मेरा जब जाना हुआ तो मैंने बहुत सादगी से दादी जी को रहते देखा। हम भी नए-नए जिज्ञासुओं की सेवा करते थे। फिर दादी जी से मुलाकात करवाते। ऐसे सेवा की वृद्धि होती गई।

मई 1969 में बाबा की श्रीमत से दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे राजकोट सेवार्थ भेजा। तब प्रथम सेवा सितंबर 1969 में राजकोट रेसकोर्स भवन हॉल में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई जो बहुत ही सफल रही। दादी रतन मोहिनी, निर्वैर भाई, सरला दीदी आदि का आना हुआ। प्रदर्शनी से बाबा के कई सारे बच्चे निकले। राजकोट में प्रथम सेवा की नींव रखने में दादी रतन मोहिनीजी का बहुत बड़ा रोल रहा है। आज भी जब दादी को देखती हूं तो पुराने दिन याद आ जाते हैं।

दादी के साथ रहकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। दादी हमेशा एक्यूरेट और अलर्ट रहती हैं। सेवा में कभी उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं थक गई हूं। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं सो जाती हूं। यह शब्द जीवन में दादी ने कभी नहीं बोला है। दादी हमेशा, चाहे रात हो या दिन हो उनसे कभी भी कहा कि दादी आज क्लास कराना है तो तुरंत तैयार हो जाती हैं। कोई वीआईपी कभी भी मिलने आएं रात हो या दिन हमेशा तैयार रहती हैं। मैंने भी अपने जीवन में दादी से बहुत प्रेरणा ली है। मेरे लिए दादी सिर्फ मां ही नहीं, एक पिता के समान भी उन्होंने हमेशा मेरी परवाह की है, मेरी जरूरतों का ध्यान रखा है। मेरा ख्याल रखती हैं। मैंने उनका प्यार देखा और बस प्यार में मैं चलती रही। हर मर्यादा में, हर नियम में दादी बहुत पक्की हैं । मैंने इतने वर्षों से देखा है कि दादी कभी भी परचिंतन, परदर्शन में अपना समय बर्बाद नहीं करती हैं। जब मैं शुरू-शुरू में आई तो मेरे साथ भी दादी सब स्थूल काम कराती थीं। बर्तन भी साफ कराती थीं, सेवा भी कराती थीं, सब कुछ कराती थीं। कभी भी यह नहीं सोचा मैं दादी हूँ, बड़ी हूं, कभी अपने आप को बड़ा नहीं समझा और आज भी अपने को कभी भी बड़ा नहीं समझती हैं। दादी जब भी जाती थी कहीं भी, काम छोटा हो या बड़ा हो वह आंगन में बोलकर जाती, बिना बताए कभी नहीं जाती। दादी ने हमेशा मेरा ख्याल बेटी की तरह रखा है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी लीला दीदी, निज सचिव (दादी रतनमोहिनी)

दादी ने हमेशा बेटी की तरह ध्यान रखा





दादी ने कभी भी अपने लिए खर्च नहीं किया। कभी यह नहीं बोला मुझे यह चाहिए। कहीं भी जाती थी तो अपनी एक डायरी रखती थी। नोट करती थी, मैंने क्या खर्च किया, मैं किधर गई, कितने पैसे लाई थी, कितना पैसा मेरे पास बचत है। यह सबकुछ दादी लिख करके अपने डायरी में रखती थी। कहीं से कोई सौगात आदि मिला है सब कुछ बड़ी दादी को देती थी। दादी टीचर्स को हमेशा संतुष्ट करती थीं। कभी उन्होंने किसी को नाराज नहीं किया। जो भी समस्या हो टीचर्स का सब सुनती हैं। उसका समाधान करती हैं। जब दादी अफ्रीका की सेवा पर गए तीसरे दिन ही वहां बहुत बड़ा बम ब्लास्ट हुआ । अफ्रीका में हुआ फिर दारेस्लाम में हुआ फिर जिम्बाब्वे में हुआ, एक ही टाइम पर आठ बजे बम ब्लास्ट हुआ। फिर दादी ने सब जगह हॉस्पिटल में चक्कर लगाया, सबसे पर्सनली मिली। सब बहुत खुश हुए। जितने भी इंडियन लोग थे सभी की हॉस्पिटल में मदद की। दादी अपने सारे कार्य खुद ही करती थी।

दादी को देखकर सदा प्रसन्नचित्त, निर्विघ्न तपस्वीमूर्त बनने की प्रेरणा मिलती है

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी गोदावरी दीदी, निदेशिका, मुलुंड सबज़ोन, ब्रह्माकुमारीज़, मुंबई



प्यारी दादी जी प्रारंभ से ही त्यागी, तपस्वी एवं इकोनॉमी वाली मिलनसार स्वभाव की हैं। दादीजी को मैंने मुंबई में कई बार गांमदेवी कुलाबा सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान देते हुए देखा है। उनकी मधुर वाणी में इतनी शक्ति भरी हुई रहती थी कि सुनने वाले भाई-बहनें इस ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग को अपनाकर सतपथ पर चलने लग पड़ते थे। जीवन को ईश्वरीय स्नेह-युक्त अपनाने लग पड़ते। दादीजी का व्यक्तित्व कई आत्माओं को अंतर्रात्मा से जागृत करने में अग्रसर हुआ है। दादीजी में ईश्वरीय एवं आध्यात्मिक शक्ति का स्त्रोत निरंतर बहता हुआ देखा, क्योंकि दादी जी निराकार शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के सदा संग रहती हैं। प्यारे शिव बाबा ने दादी जी को जैसे अमर लाइट माइट का वरदान बचपन से ही दिया हुआ है, ऐसा अनुभव होता है। दादीजी के साथ उनकी लौकिक माताजी भी सभी आत्माओं के प्रति आगे बढ़ाने की शुभभावना रखती थीं। आपकी विरक्त भावना एवं बाबा को प्रत्यक्ष करने का उमंग-उत्साह आज चाल-चलन चेहरे द्वारा प्रत्यक्ष कर रही हैं। 100 वर्ष की आयु में भी सदा प्रसन्नचित्त, निर्विघ्न और तपस्वीमूर्त देख करके आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहती है। लगता है मैं एक शक्ति स्वरूप आत्मा हूं। निरंतर शिव बाबा की याद में रहकर पूरे विश्व की आत्माओं को पवित्रता की शक्ति एवं साइलेंस की शक्ति प्रदान कर रही हैं।

आपकी श्रेष्ठ पालना, प्राप्तियां एवं जीवन को परिवर्तन करने की पराकाष्ठा, सतोप्रधान जीवन बनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। दादी जी अपने शांत और सरल स्वभाव के कारण सभी को ईश्वर के समीप लाने में सदा ही तत्पर रहती हैं। उस जलधारा से अनेकानेक आत्माओं को पवित्र पावन बनाने की प्रेरणा देती रहती हैं। प्यारी दादी जी यूथ विंग की चेयरपर्सन होने के कारण मुंबई-मुलुंड में कई बार आ चुकी हैं। उनके अंग-संग रहने का मौका कई बार मिला है। दादी जी के अंग-संग बाबा की याद और सेवा की झलक दिखाई देती है, जो सभी को पॉवरफुल बना देती है। आप सदा अपने आप को निमित्त समझती हैं और ईश्वरीय कार्य में सदा ही अथक, अलर्ट, एवररेडी एवं एक्यूरेट रहती हैं। दादी जी सभी ब्राह्मण बच्चों के लिए प्रेरणामूर्त हैं। आप अपनी पवित्रता एवं शांति की शक्ति द्वारा विश्व की चारों ओर की आत्माओं को ईश्वरीय शक्ति द्वारा पालना, परवरिश और प्राप्तियों का अनुभव करा रही हैं।

आदरणीय दादी जी के शताब्दी वर्ष की कोटी-कोटी बधाइयां...

जब स्वयं दादीजी ने बैठा कर मुझे भोजन कराया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कमल दीदी, निदेशिका, बीकानेर सबजोन, ब्रह्माकुमारीज़, राजस्थान



मेरे स्मृति पटल पर दादी जी की रूहानी अमिट छवि सदा बनी रहती है। जब भी स्मृति का झरोखा खुलता है तो अनेक दिव्य संस्मरण चलचित्र की तरह आंखों के चारों ओर घूमने लगते हैं। बात वर्ष 1975 की है। सेन्टर पर रहते थोड़ा ही समय हुआ था। हमारे सेवाकेन्द्र पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन हुआ था, जिसमें दादी जी का आना हुआ। कार्यक्रम के बाद रात्रि 11 बजे एक माता के साथ जब मैं सेन्टर पहुंची, तो स्वयं दादी जी ने गेट खोला एवं भंडारे में जाकर हमारे लिए भोजन की व्यवस्था की और पास बिठाकर भोजन करवाया। दादी जी का ये ममतामयी स्वरूप मैं कभी भूल नहीं सकती हूं।

सरल हृदय दादी जी का बीकानेर आगमन पर स्वागत करते समय उनकी साड़ी पर कुमकुम लग गया। थोड़ी देर बाद उन्हें किसी कार्यक्रम की अध्यक्षता करनी थी। इस पर मैंने चैंज करने के लिए दादी जी को दूसरी साड़ी दी और कहा ये हम धुलाई कर देंगे। आप दूसरी साड़ी पहन लें, लेकिन उन्होंने स्वयं ही साड़ी का कुमकुम लगा हिस्सा साफ कर लिया और कहा पूरी साड़ी धोने में साबुन, पानी, समय व धन, शक्ति व्यर्थ होगा। दादी जी का स्थूल सूक्ष्म इकॉनोमी पर कितना गहराई से अटेन्शन है। दादी का निरंतर स्वयं पर अटेन्शन रहता था। एक दिन रात्रि को 9.30 बजे मैं मिलने पहुंची तो देखा दादी जी डायरी में कुछ लिख रहे थे। मैने सहज ही जानना चाहा की आप क्या लिख रही हैं? दादी ने कहा मैं अपना चार्ट लिख रही हूं। मुझे आश्चर्य हुआ कि सारा दिन ज्ञान रत्न बांटने वाली दादी किस बात का चार्ट लिख रही होंगी? दादी ने कहा दिनभर जिन आत्माओं से मिलना हुआ उनके स्वभाव संस्कार जानते हुए भी उनके प्रति मेरे मन में कौन सा भाव इमर्ज हुआ, मेरे मन में कहीं व्यर्थ तो नहीं आया, हम मूर्ति बन रहे हैं, तो हमारा चेहरा भी सदा श्रेष्ठ भाव से भरा रहना चाहिए। दादी का आजीवन सूक्ष्म पुरुषार्थ रहा।

दादी ने प्रेरणामूरत, सहयोगी बनकर मेरे जीवन को धन्य-धन्य कर दिया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदी ,
निदेशिका, मुलुंद सबजोन



अति मीठी, हमारी दादी रतन मोहिनी जी को 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर हृदयपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, स्नेहपूर्वक और अंतरात्मा की दुआएं। उन दुआओं के अनेकानेक हार लेकर और उनको पहनाते हुए उनको स्नेह के अनेकानेक पुष्पों का बनाया हुआ पुष्पगुच्छ अर्पण करते हुए और हृदय में एक ऐसी आशा और अनुभूति हो रही है कि इनको हम क्या दें, इनको देने के लिए हम समर्थ नहीं, परंतु फिर भी स्नेह के साथ उनके उपकारों को मानते हुए, जानते हुए और प्रैक्टिकल में उन्होंने जो साथ दिया, सहयोग दिया, स्नेह किया और हमारी उन्नति की, हमारे प्रगति पथ पर हर कदम में प्रभु के कदम के पदम हमारे कदम में उन्होंने भरे तो उनको मैं बहुत-बहुत जन्मदिन की बधाई देती हूं। अभिनंदन करती हूं और शत-शत बार उनको मैं गुरु स्थान पर रखते हुए प्रणाम करती हूँ।

ऐसी मेरी प्रेरणा मूरत, मेरी रुहानी स्नेह करने वाली सर्वोत्तम स्नेही आत्मा, सर्वोत्तम सहयोग देकर सदा मेरे जीवन में गाने योग्य एक सखी कहो, मित्र कहो, यह एक गुरु के समान, शिक्षक के समान उन्होंने मेरे जीवन में पार्ट प्ले किया और मुझे धन्य-धन्य कर दिया। मैं फिर से एक बार उनको उनके जन्मदिन का अभिनंदन करते हुए उनका बहुत-बहुत शुक्रिया, शुक्रिया, शुक्रिया करती हैं। ओम शांति।

आज भी दादी जी मेरे पुरुषार्थ की जांच जरूर करती हैं

राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज भाई, राष्ट्रीय संयोजक,
मीडिया प्रभाग, घाटकोपर, मुंबई

मैं बहुत भाग्यशाली रहा हूं कि मैं अपने आध्यात्मिक जीवन में हमारी पूज्य दादी रतन मोहिनी समेत अन्य दीदियों के प्यार, सीख और आशीर्वाद की छत्रछाया में पला बढ़ा हूं। मेरे आध्यात्मिक जीवन के शुरुआती दिनों में उनसे मिले पारिवारिक प्रेम ने मुझे विश्व परिवर्तन के लिए प्रतिबद्धता और समर्पण का जीवन जीने के निर्णय लेने का निश्चय दिलाया। उनमें से एक हैं दादी रतन मोहिनी जी।



जब मैंने राजयोग ध्यान पाठ्यक्रम शुरू किया और इस आध्यात्मिक ज्ञान का पालन करना शुरू किया तो वर्ष 1990 में मेरी पहली मुलाकात दादी रतन मोहिनी जी से हुई। यह मुलाकात उनकी मुंबई घाटकोपर यात्रा के दौरान हुई थीं। तब से दादी रतन मोहिनी जी कई बार घाटकोपर आईं। इसलिए मैंने हंसकर उन्हें कई बार 'घाटकोपर की दादी' भी कहा।

घाट कोपर की उनकी यात्रा के दौरान, मुझे उनसे ज्ञान के अनमोल रत्न प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो मेरी किशोरावस्था से लेकर आज तक मेरे जीवन और मेरे आध्यात्मिक प्रयासों में मूल्यवान साबित हुए हैं। मुझे अब भी वे दिन याद हैं जब मैं उनके एडमिनिस्ट्रेशन में चल रहे अकाउंट ऑफिस में अकाउंट लिखता था। वह एक आदर्श शिक्षिका हैं और आज तक जब भी मैं उनसे मिलता हूं, वह एक आध्यात्मिक छात्र के रूप में मेरे पुरुषार्थ की जांच जरूर करती हैं।

वह उन सभी उतार-चढ़ावों की साक्षी रही हैं, जिनका मैंने मानवता के प्रति सेवाओं के लिए स्वयं को समर्पित करने के बाद सामना किया और हर सुख-सुविधा में हमेशा मेरा साथ देने के लिए मैं उनका ऋणी रहूंगा।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं कि वह दीर्घायु होकर अच्छे स्वास्थ्य में रहें।

दिव्यगुण संपन्न धीरज, शांति और प्रेम का भंडार हैं दादी

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कानन दीदी,
सबजोन निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, कोलकाता

बचपन से ही साकार ब्रह्मा बाबा की स्नेह भरी पालना के साथ दीदी-दादियों के साथ रहने और बहुत कुछ सीखने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। यज्ञ के कारोबार निमित्त कई बार दादी रतन मोहिनी जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने देखा दादी जी विशेष रूप से धीरज, शांति और प्रेम के गुण का भंडार हैं। जब भी कभी दादी जी के साथ ऑफीशियल कारोबार के लिए मिलते और अपनी बातें सुनाते तो विभिन्न प्रकार की समस्याओं को बहुत एकाग्रता से सुनकर युक्ति-युक्त जवाब देतीं। बिना किसी पक्षपात के ना अधिक, ना कम, बिल्कुल यथार्थ उत्तर मिलता था। ऐसी साक्षी दृष्टा, क्लीन एवं क्लीयर बुद्धि है। अंदर स्वच्छता और एक्यूरेसी का गुण भी बहुत देखा। दादीजी के सामने रखी टेबल को अगर कोई गंदे कपड़े से साफ करते तो दादी कहतीं कि गंदे कपड़े से कोई चीज तो और ही गंदी होगी ना कि स्वच्छ। उन्हें अपने समक्ष रखी हुई सभी वस्तुओं को सही तरीके से सजाकर रखते भी देखा! भले ही हम उनसे मिलते अथवा वार्तालाप करते, परंतु उस बीच आसपास खड़े और लोगों के प्रति भी ध्यान रखते देखा। अगर कोई सीधा ना खड़ा हो तो उनको भी अटेंशन दिलाते। इसलिए दादी जी को सदा युवा अवस्था में ही देखा। 90 वर्ष के उपरांत भी युवाओं का नेतृत्व करते देखा। अभी हाल ही में नवंबर-2023 माह में दादी जी से मिली तो उन्होंने मुरली की पॉइंट प्यार से सुनाई, टोली भी खिलाई और हाल-चाल पूछा। कौन कहता है कि दादी कुछ कहती नहीं? दादी तो मंद मुस्कान से थोड़े शब्दों में वरदान स्वरुप हमें सब कुछ दे देती हैं। ऐसी अलौकिक मां के समान, लाखों दिव्य गुण संपन्न, फरिश्ता समान हमारी प्यारी दादी जी सदा स्वस्थ रहें और हमारे में बल भरती रहें।



इन्हीं शुभकामनाओं के साथ दादी जी के प्रति दिल की दुआएं अर्पण हों....

अपने सारे निजी काम खुद करती थीं दादी

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी पुष्पा दीदी,
पांडव भवन, ब्रह्माकुमारीज़, दिल्ली

प्यारे दादी जी से जीवन में बहुत कुछ सीखने को मिलता ही रहता है। शुरू से मधुबन पांडव भवन में बहुत समीपता से और सदा ही मिलना जुलना रहा है। विशेष जब दादी जी दिल्ली आते तो अक्सर पांडव भवन, दिल्ली रहते। काफी सेवा और बहुत नजदीकी से रूहरिहान भी होती है। कितनी भी सेवा हो दादी की दिनचर्या एकदम एक्यूरेट रहती है। प्रोग्राम करके रात को 10-11 बजे सो जाते और सुबह 3:30 बजे से रात्रि तक दादी बिजी होते भी हल्की दिखाई देतीं। यहां तक की रात को देरी होने पर भी अपना चार्ट लिखतीं। हम कितना भी कहें दादी आप थक गए होंगे अब विश्राम कीजिए। नियम-मर्यादा से खुद भी चलना औरों को भी चलाना। हर बात पर ध्यान देना, हर एक की विशेषता को देखना और उसे उमंग-उत्साह में लाना। एक बार दादी पांडव में क्लास करा रहे थे और शिवकुमार भाई जो माइक आदि संभालते तो कहा शिवकुमार आपने गीत बहुत अच्छा बजाया, देखो सब उड़ गए। दादी जी को इतना सदा एक्टिव देखा, सुस्ती का नामो निशान नहीं। अपना काम स्वयं करना, दादी को अच्छा लगता। हम कई बार दादी को कहते यह हम कर देंगे पर अपनी ड्रेस, मेडिसिन अन्य भी कोई छोटे-छोटे काम, कौन सी चीज कहां रखनी है, कैसे रखनी, सिखाती और कहती मुझे अच्छा लगता है और सहज भी रहता है। दादी कहती मुझे डिपेंडेंसी अच्छी नहीं लगती। दादी मुझे कहती कि पुष्पा तुम कैसे भी स्वभाव व संस्कार वाले के साथ एडजस्ट कर सकती हो। दादी सबको पहचान लेती हैं, कौन क्या है, कैसा है? साथ-साथ इशारा भी देती कि किसको कैसे चलाना है। दादी बहुत निर्माणचित्त हैं। कोई भी अपने दिल की बात सहज कर सकता है। मैंने देखा छोटी-छोटी कुमारियां दादी के साथ सहज बात कर रही हैं। स्वयं भी निमित्त बहनों से बहुत हमजिन्स की तरह मिलना-जुलना करती हैं। हर एक के गुण को देख, उसे उमंग-उत्साह से भर देतीं है। दादी जी की जितनी महिमा की जाए उतनी कम है। वह तो गुणों की खान हैं।



दादी से मिली प्रेरणा

सदा शान्त व शीतल स्वभाव देखा

राजयोगी ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल, अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग, शांतिवन

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी से मेरा पहला परिचय मुंबई में हुआ। जब वह अपनी लौकिक माता जी (देवी माता) के साथ अपने फ्लैट में रहती थीं। यद्यपि वह सारा दिन ईश्वरीय सेवा में सेवाकेन्द्र पर और अन्य सेवाओं में व्यतीत करती थी। मात्र रात्रि विश्राम के लिए ही अपने फ्लैट पर जाती थी। युवावस्था में उनका सेवा के अतिरिक्त काफी समय स्व सेवा और मुरली, ईश्वरीय साहित्य के अध्ययन में ही व्यतीत होता था। वह सदैव से ही दूसरे अन्य ईश्वरीय विधार्थियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहीं हैं।

दादी जी से मेरा घनिष्ट परिचय 1970 के बाद हुआ। जब मेरा गुजरात, अहमदाबाद में ट्रांसफर हुआ और नारायणपुरा सेन्टर पर क्लास करना प्रारंभ किया। दादी जी मुंबई आते-जाते थे और अहमदाबाद रुकते थे। इस कारण सेवा समाचारों की लेन-देन भी बढ़ती गई और उनके अनुभवों से बहुत लाभ मिला। आध्यामिक मेले में उनका मार्गदर्शन मिला। इसके बाद जब राजयोग शिविर की सेवाओं का विस्तार हुआ और आबू में नियमित शिविर चलने लगे तब दादीजी व शीलू बहन के सम्पर्क में विशेष आना हुआ।

1985 में अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में जब हमें निमित्त पूरे भारत में पदयात्राएं निकालने का कार्य दिया गया, तब हमारा लगभग एक वर्ष तक प्रति सप्ताह अहमदाबाद से आबू जाना होता रहा। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी और दादी रतनमोहनी जी के निर्देशन में यह विशाल कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आबू में प्रति वर्ष होने वाली राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय



कॉन्फ्रेंस में भी भ्राता जगदीश जी के सान्निध्य और दादी जी के मार्गदर्शन में कॉन्फ्रेंस के आयोजन में विशिष्ट अनुभव प्राप्त करने का मौका मिला। दादी रतनमोहनी जी को मैंने सदा ही एक्टिव देखा। उनका शान्त व शीतल स्वभाव सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। साथ ही सभी के प्रति स्नेह-प्यार का व्यवहार सीखने को मिलता है। दादी जी ने भाई-बहनों को एक-एक बात को सिखाया है।

उनके 100वें जन्म उत्सव पर मेरी हृदय से उनके प्रति हार्दिक बधाईयां हैं। उनके अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना करते हुए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। उनका मार्गदर्शन मुख्य प्रशासिका के रूप में हमें आने वाले वर्षों में मिलता रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

दादी के साथ के अनुभव

ज्ञान को गहराई से सुनातीं थीं

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वेदांती दीदी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, अफ्रीका

हमारी मीठी प्यारी आदरणीया राजयोगिनी डॉ. दादी रतन मोहिनी जी, अपने जीवन यात्रा के 100 वर्ष तक पहुंच गईं हैं, यह बहुत ही वंडलफुल बात है। जब मैं ज्ञान में आई उस समय दादी जी को मैंने युवा रूप में देखा था। तब से अब तक सदा ही दादी जी में युवाओं की तरह उत्साह देखा है। आप कोई भी कार्य बड़े उमंग-उत्साह से करतीं और जब भी हमारा मिलना होता था, तब वे उमंग-उत्साह भरती थीं। ज्ञान -रत्नों से सम्पन्न दादीजी ज्ञान को बहुत ही गहराई से सुनातीं थी। एक-एक पॉइंट को बहुत डिटेल में अच्छी तरह से समझातीं थी।

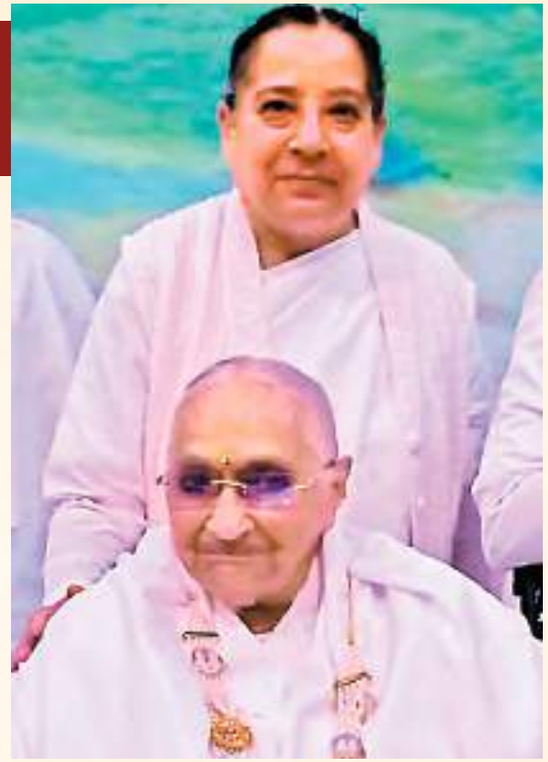
हमें याद है जब दादी जी अफ्रीका आए तो यहां भी अलग-अलग स्थानों में जाकर बड़े ही हिम्मत और उत्साह के साथ सेवाएं करते हुए बहुत आत्माओं को प्रेरणाएं दी। उस समय यहां अमेरिकन एम्बेसी के ऊपर में बम गिरा था, जिससे शहर के बड़े हिस्से में प्रभाव पड़ा था। उस समय सभी स्प्रीचुअल लीडर को बुलाया गया था और भारत से सत्यनित्यानंद स्वामी जी भी पहुंचे थे। तब हम भी दादी जी के साथ वहां गए। हमने देखा कि किस प्रकार दादी जी ने वहां पर सभी को बहुत हिम्मत दी थी। उस समय दादी ने सभी को कहा कि जो भी परिस्थिति आई है उसे परमात्मा की याद से पार कर सकेंगे और सब कुछ बहुत अच्छा हो जाएगा। इस प्रकार कैसी भी परिस्थिति हो दादी जी सदा ही निश्चिन्त और उत्साह में रहकर सभी को प्रेरणा देती रहीं। वे प्रेरणाएं ही अफ्रीका की 50 वर्षों की सेवाओं में हमारे अन्दर उमंग भरती रहीं।



आपको सभी यूथ दादी कहते हैं। टीचर्स की ट्रेनिंग की जिम्मेवारी भी दादी जी ने बहुत प्यार से संभाली और उस समय तैयार हुई बहनें आज भारत सहित विश्व के अनेकों स्थानों में ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलाने के निमित्त बनीं हुईं हैं। दादी जी ने अपने जीवनकाल में ली हुई सभी जिम्मेवारियों को अच्छे से पूरा किया। वर्तमान में भी मुख्य प्रशासिका के रूप में हमारा निर्देशन कर रही हैं। अब भी अपनी पावरफुल स्टेज से सभी को प्रेरणा देती रहतीं हैं। उनके नेतृत्व में सभी आगे बढ़ते जा रहे हैं। हमें बड़ा ही हर्ष है कि दादी जी का शतायु महोत्सव मनाया जा रहा है। दादी जी को उनके 100वें जन्मदिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देते हैं।

और ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प किया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. सविता दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, शांतिवन



परम आदरणीया रतनमोहिनी दादी जी का हम शताब्दी वर्ष मना रहे हैं। आप बाबा के महायज्ञ की शान, ज्ञान रत्नों की खान हो। आपमें 100 वर्ष की आयु में भी युवाओं जैसा उमंग-उत्साह है, जो सबको प्रेरित करता है। दादी जी के संपर्क में कॉलेज टाइम में आई और जब मुझे कुछ प्रश्न थे तो मैंने एक विद्यालय के नाम पत्र लिखा था। क्योंकि मैं उदयपुर कॉलेज में पढ़ रही थी। आप राजस्थान जोन के हेड हैं इसलिए दादीजी ने मुझे पत्र का उत्तर दिया। बहुत ही प्यार से समझाया, जिसका मेरे ऊपर काफी प्रभाव पड़ा। जब मैं अपने कॉलेज की क्लास की एक दोस्त के साथ मधुबन आई (जो विदेश से थी) तो दादी जी ने हमें स्पेशल पालना दी। हमारे घूमने और क्लासेस का प्रबंध किया। उस पालना ने मेरा ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प पक्का किया।

वर्ष 1990 में ग्लोबल हॉस्पिटल के कारण जब मधुबन में परमानेंट आ गई थी तब दादी जी विशेष कुमारियों का ध्यान रखते थे, क्योंकि मैंने टीचर ट्रेनिंग नहीं की थी तो दादी जी ने मुझे टीचर ट्रेनिंग कराई। बाद में जब टीचर्स भट्टी मधुबन में हो रही थी तो हमारा नाम दिया। जबकि मैं हॉस्पिटल में थी फिर भी दादी ने बहनों का ध्यान रखा और हमें अनुमति दी। दादी जी के साथ बाहर सेवाओं में जाने का भी सौभाग्य मिला। आप बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, धुलिया, दाहोद आदि स्थानों पर गईं और वहां मुझसे पूरी सेवा ली। दादी आने के पहले मुझे क्लास कराने के लिए भेजते थे या कोई भी वीआईपी प्रोग्राम होता था तो पहले मुझे भाषण करना होता था। इस तरह से मैंने दादी जी के साथ उस यात्रा में बहुत कुछ सीखा। जब कई बार मुझे दादी जी की पर्सनल सेवा का चांस मिला तो मैंने देखा कि आप इतने एक्यूरेट, एक्टिव, अर्लट थे। बाबा की श्रीमत अनुसार ही उनका पूरा जीवन था। दादी 3.30 बजे अमृतवेले उठ जाते थे और सुबह 4 बजे हॉल में आकर सभी को योग कराते थे। उसके बाद मुरली पढ़कर तैयार होकर मुरली भी सुनाते थे। बाबा की सेवाओं के प्रति सदा उमंग-उत्साह देखा। दादी जी के कनेक्शन के सेंटर्स पर मुझे कई बार भेजा तो ऐसे दादी जी हमेशा बाबा की सेवा के लिए हमे आगे बढ़ाते रहे और आज हम जो भी सेवाए कर रहे हैं यज्ञ में उसमे दादी जी की पालना का काफी योगदान है और अपनी दादी जी के लिए मैं कहूंगी कि आप हजारों साल जीये, पूरा ही संगमयुग ऐसे ही बाबा को प्रत्यक्ष करते रहें आपके सदा स्वस्थ्य रहने की मंगल कामना करते हैं।

दादी ने सदा मेरा मार्गदर्शन किया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी लता दीदी, राष्ट्रीय संयोजिका, न्यायविद प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

कहते हैं विद्यार्थी जीवन सर्वोत्तम जीवन होता है और इस विद्यार्थी जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हमारे शिक्षक की होती है। यहां हम अध्यात्म का अध्ययन कर रहे हैं जहां सर्वोच्च शिक्षक हमें पढ़ा रहे हैं, उसी तरह हमारी दादी रतन मोहिनी साकार में हमारी प्रिय शिक्षिका हैं, जो न केवल हमें पढ़ा रही हैं और उपदेश दे रही हैं बल्कि हमें अपने जैसा योग्य शिक्षक भी बना रही हैं।

हम ब्राह्मण आत्मायें परम आनंदित हैं कि परमपिता अव्यक्त बापदादा और परम पूज्य दादियों से हमें पालना मिल रही है। मैं सबसे भाग्यशाली हूं कि मुझे मधुबन में सभी दादियों से पालना मिली। दादी रतन मोहिनी जी प्यारी दादी हैं। वह ज्ञान रत्न हैं जो सदैव सभी को ज्ञान के रत्न और खजाने बांटती रहती हैं। यदि आप उनसे मुरली सुनेंगे तो पाएंगे कि वे मुरली में प्रयुक्त शब्दों के लिए पर्यायवाची शब्द का प्रयोग करती हैं। वह न केवल मुरली पढ़ती हैं बल्कि पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करके हमें मुरली को बड़ी आसानी से समझाती हैं जो सीधे हमारे मन में उतर जाता है। एक कानूनी व्यक्ति होने के नाते हमें प्रेम और कानून के बीच संतुलन बनाए रखना होगा। वर्तमान समय में दादीजी प्रेम और कानून में संतुलन बनाए रखने का सबसे अच्छा उदाहरण हैं। वह एक महान प्रशासक और सरल शिक्षिका हैं। मुझे याद है कि वह पढ़ाई में कितनी होशियार थी। मधुबन में वह ध्यान, मुरली और कक्षाओं की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करती थीं। जब वह पांडव भवन में रहती थीं, तो दादी जी हिस्ट्री हॉल में अमृतवेला ध्यान कभी नहीं भूलती थीं। यदि हम चूक जाते थे तो वह हमारा ध्यान आकर्षित करती थीं और बताती थीं कि अमृतवेला, मुरली और संध्या ध्यान कितना महत्वपूर्ण है।



यज्ञ में वकालत करने वाली इकलौती बहन होने के कारण दादी जी मुझे बहुत प्यार और सम्मान देती थीं। कई बार जब मैं दादीजी से मिलने जाती हूं और मामलों के बारे में चर्चा करती हूं तो उन्होंने अपनी दृष्टि के माध्यम से सटीक मार्गदर्शन और आंतरिक शक्ति देकर मेरी मदद की और इसके परिणामस्वरूप मामले जीतने में मदद मिली। उन्होंने मुझे यह भी मार्गदर्शन दिया कि अदालतों के नकारात्मक माहौल में कैसे सुरक्षित रहा जा सकता है और मध्यस्थता के माध्यम से एक शक्तिशाली मंच बनाया जा सकता है। उनका युवा मन, जोशीला और उत्साही स्वभाव मुझे हमेशा सेवाओं में उत्साही बने रहने के लिए प्रेरित करता है। यज्ञ के कार्मिक प्रशासन विभाग की प्रभारी होने के नाते, मैंने उन्हें देखा कि कैसे सभी आंतरिक समस्याओं को इतने संतुलित तरीके से संभाला और हर आत्मा के साथ न्याय किया। दादी जी ने हमें यह भी सिखाया कि ब्राह्मण परिवार में एकता, प्रेम से और न्यारे कैसे रहना है। दादी जी की शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर मैं उनके स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएं देती हूं।

जब दादी ने भाई-बहनों से कहा- सदा अपनी टीचर और बाबा से वफादार रहना

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रेम दीदी,
निदेशिका,
ब्रह्माकुमारीज़, पंजाब जोन



मुझे गर्व है कि आदरणीय दादी जी से पालना लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। दादी जी से मैं प्रथम बार सन 1965 में मधुबन में मिली थी। तब से मैंने अनुभव किया कि आप अलर्ट, एक्टिव और एक्यूरेट हैं। बाबा की क्लास के बाद दादी जी सभी भाई-बहनों से मुरली रिपीट कराया करती थीं। दादी इतने सुन्दर ढंग से मुरली रिपीट कराती थीं कि हमें सारी मुरली याद हो जाती थी। दादी में रूहानियत की ऐसी शक्ति है कि बूढ़े को भी जवान बना देती हैं। दादी जी कहती तन की एक्साइज करो जिससे शरीर एक्टिव रहता है, साथ-साथ मन की भी एक्साइज करो अर्थात अभी-अभी हम यहां है अभी-अभी हम परमधाम में हैं तो मन एक्टिव रहेगा। 1966 में मुझे चन्द्रमणि दादी के साथ मधुबन में 20 दिन रहने का मौका मिला। तब दादी जी ने कहा प्रेम दो भाई आए हैं क्या तुम उन्हें कोर्स कराएगी, मैंने कहा हां जी। लेकिन मुझे उन भाइयों को क्या सुनाना है। इस पर रतन मोहिनी दादी जी ने कहा तुम आज आत्मा का पाठ सुनाओ। दादी जी ने बाबा से कहा कि आज प्रेम ने दो भाईयों को आत्मा के पाठ का कोर्स कराया है। बाबा बहुत खुश हुए और मेरा उमंग-उत्साह और बढ़ गया।

दादी जी अपनी निर्मल वाणी से ज्ञान सुनाना शुरु करतीं तो ज्ञान सुनाते कभी थकती नहीं। घंटों तक ज्ञान सुनाती रहतीं। इतनी लगन बाबा से और बाबा के ज्ञान से कि सबको आज ही सम्पूर्ण बना दें। दादी जी हमेशा प्रेरणा देतीं कि हम कभी बाप की शिक्षाओं को भूले नहीं। सदा उनकी शिक्षाओं पर चलते अपने में परिवर्तन अनुभव करें। दादी जी फरीदकोट में हमारे पास आए,सभी भाई-बहनों से मिले और क्लास कराई, क्लास में बड़ी प्रेरणादायी बातें बताई। उन्होंने कहा- मन में जब कोई बात हो, मन भारी हो तो अपनी टीचर बहन से कभी भी छिपाना नहीं- योग में बैठकर बाबा को भी सुनाया तो मन हल्का हो जाएगा। अपनी टीचर बहन से वफादार रहना। आज भी भाई-बहनें सुनाते हैं कि हमने दादी जी की बात पल्ले बांध ली कि हर बात बाबा को और अपनी टीचर बहन को सुनाकर हल्के रहते हैं। दादी जी की आवाज में सदा जोश और उमंग-उत्साह रहता। दादी जी कहती जब हम योग करते थे तो बाबा की याद में 4-4 घंटे बैठे रहते। इतना नशा चढ़ जाता बस यही याद रहता था मैं शुद्ध आत्मा हूं और शरीर भान से परे हो जाते थे। दादी हमेशा कहती कि बाबा ने जो हमें शिक्षाएं दी उन शिक्षाओं को हम इतना पक्का कर लें, धारण कर लें, जो हमारे जीवन में उतर जाएं। बाबा ने जो समय प्रति समय हमें शिक्षाएं दी हैं उनको अपने जीवन में उतार लें। सदा रूहानी पढ़ाई करते रहो- मुरली कभी मिस नहीं करो। सुबह-शाम मुरली पढ़ो तो आपको गाइडेंस मिलेगी।

ज्ञान रत्नों की खान दादी का अलौकिक व्यक्तित्व

राजयोगी ब्रह्माकुमार राजू भाई, उपाध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, शांतिवन, आबू रोड

दादी रतनमोहिनी जी के सान्निध्य में रहने का सुअवसर मुझे 1972 से ही मुख्यालय पाण्डव भवन में समय प्रति समय मिलता रहा है। दादी जी का विशेष रूझान मुरली (परमात्म महावाक्यों) से रहा है। वे ज्ञान मुरली का बहुत गहरा अभ्यास करतीं और शुरू से ही बाबा के महावाक्यों को लिपिबद्ध करती रहीं। उनके हस्तों से सिन्धी में लिखे हुए महावाक्य पढ़ने और उन्हें टाइप करने का सौभाग्य मुझे मिला है। दादी जी ने करांची में चले हुए आलमाइटी पिता के पार्ट को और उनकी दिव्य वाणी को अपनी डायरियों में बहुत सुन्दर ढंग से कहानी के रूप में लिखा है, जो पढ़ते हुए अति हर्ष होता है। जैसे कोई लेखक आंखों देखा समाचार लिखता है, ऐसे आपने भी उस समय के दृश्यों का समाचार अपनी लेखनी से प्रस्तुत किया है। धन्य हैं दादी जी का यह पार्ट जो साकार मम्मा-बाबा के साथ रहकर उनकी अलौकिक पालना ली है। एक धनाढ्य परिवार की होते हुए भी आप अति साधारण, त्याग-तपस्या का जीवन अपनाकर प्रेरणा का स्रोत बनी हैं।

दादी प्रकाशमणि जी द्वारा जब सर्व ब्राह्मण परिवार की उन्नति के लिए कोई भी योग की गहराई वा ज्ञान की प्वाइंटस भेजने के लिए मुझे कहा जाता, तो दादी कहती तुम यह मैटर



तैयार करके दादी रतनमोहिनी को दिखाओ, उनसे पास करा लो। दादी जी उसे बहुत ध्यान से पढ़ती और उसमें जो जरूरी करेक्शन होते वह भी हमें गाइड करतीं। दादीजी विशेष समर्पित भाई-बहिनों को, ब्रह्माकुमारी बहिनों को ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नियम और मर्यादाओं पर पूर्ण रूप से चलने के लिए प्रेरित करतीं। उनके लिए ट्रेनिंग के कार्यक्रम रखवाती। दादी जी का सदा ही ध्यान रहता कि ब्राह्मण जीवन की शान हमारी ईश्वरीय मर्यादायें हैं, जो हर ब्रह्मा वत्स को पूर्णता पालन करना अनिवार्य है। दादी जी शुरू से बेहद यज्ञ में पवित्रता की देवी बनकर रही हैं। दादी जी ने मन-वचन और कर्म की सम्पूर्ण पवित्रता के बल से, सच्चाई और सफाई के विशेष गुण से परमात्मा पिता के दिल को जीत लिया।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. राज दीदी, निदेशिका, काठमांडू, नेपाल

दया और करुणा की धनी हैं दादी

दादीजी का ओजस्वी, तेजस्वी सम्पूर्ण व्यक्तित्व हम सभी को शक्ति, गुण और वरदानों से भरपूर कर रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल के सभी ब्राह्मण परिवार ओर से दादी जी के शताब्दी शुभ जन्मोत्सव की लख-लख बधाइया हों।

मेरी प्रथम मुलाकात दादी से मुंबई में हुई थी, जब वहां पर नई चित्र प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ था। साकार ब्रह्मा बाबा ने मुझे भी वहां भेजा था। मुम्बई में दादी के अंग-संग रहीं। उनके सानिध्य में रहकर मुझे यही अनुभव हुआ कि दादी सरल चित्त, निर्मल स्वभाव, दया, करुणा की धनी हैं। दादी जी का ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के प्रति जो समर्पणता, आज्ञाकारिता, अटल निश्चय रहा यही गुण आज उनको यज्ञ के इस महान शिखर तक ले आया है। बाद में दादीजी का मधुबन मुख्यालय में ही बड़ी दादी प्रकाशमणि के साथ ही रहना हुआ।

जैसे हमारे ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती (मम्मा) अन्य बड़ी दादियों की विशेषता रही है कि वह महान होते हुए भी निर्मान





रहे, नम्र रहे, निरहंकारी रहे, सदा उपकारी परोपकारी और अथक विश्व सेवाधारी रहें। ऐसे ही गुणमूर्ति हमारी दादी रतन मोहिनी जी भी हैं। जिनके हृदय में सर्व के प्रति कल्याण की भावना है। सभी सुखी बनें, खुश रहें, सभी की उन्नति हो, सब बाबा के विजयी रत्न बनें, उच्च पद के अधिकारी बनें। संगमयुग में बाबा ने इतने जो अनमोल ज्ञान, गुण और शक्तियों का खजाना दिया है, उसका आनन्द लेकर अतीन्द्रीय सुख का अनुभव करें। किसी भी प्रकार की चिन्ता फिक्र न हो, सब बोझ, बन्धन, समस्याओं को बाबा हवाले कर बेफिक्र बादशाह बनें। एक बाबा मिला तो सारा जहां मिला, इसी ईश्वरीय नशे की मस्ती में रहें। इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति, वस्तु, वैभव मन को आकर्षित न करें। एक शिव बाबा ही आर्कषण का केन्द्र बिंदू बना रहे। दिल दिमाग में सदा बाबा बाबा की ही धुन बजती रहे। बाबा ही मेरा संसार है, सम्पूर्ण, सम्पन्न कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करें।

कई जिम्मेदारी निभाईं

यज्ञ स्थापना के आदिकाल में 12 वर्ष कि अल्प आयु में ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में आकर दादी रतन मोहिनी जी ने 14 वर्ष तक राजयोग साधना की गहन तपस्या से आध्यात्मिक ऊंचाई के शिखर को स्पर्श कर लिया था। 1950 में यज्ञ माउण्ट आबू में स्थानांतरण के बाद आपने ज्ञान वाणी के प्रखर प्रवचन से हजारों नर-नारियों को ईश्वरीय ज्ञान सन्देश देने का सफल कार्य किया। सेवा के दौरान 1954 में आप ने जापान में आयोजित वर्ल्ड रिलीजियस कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। एक वर्ष तक एशिया के हांगकांग, सिंगापुर, मलेशिया आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा का कार्य किया। दो वर्ष तक इंग्लैंड की सेवा के लिए भी आप निमित्त बनीं। ब्रह्माकुमारी संस्था के युवा प्रभाग की अध्यक्षा रहकर आपने युवाओं को बेहतर जीवन के द्वारा बेहतर समाज व संसार निर्माण करने की प्रेरणा दी। राजस्थान जोन की जिम्मेवारी भी सम्भाली। 2006 में भारत एकता युवा पद यात्रा का नेतृत्व कर सफतापूर्वक सम्पन्न किया। दादी जी ने खास कर के ब्रह्माकुमारी संस्था के राजयोग प्रशिक्षिका बहनों को प्रशिक्षण देकर योग्य टीचर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। साथ ही संस्था के आन्तरिक प्रशासन डिर्पाटमेन्ट (पैड) का भी कुशलता पूर्वक संचालन किया है। अब तो दादी जी संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में सब को छत्रछाया दे रहीं हैं।

नेपाल की यात्रा पर दो बार गईं दादी रतन मोहिनी

दादी रत्नमोहिनीजी का नेपाल धरती में दो बार आना हुआ और इस धरती के प्रति आपका अथाह स्नेह प्यार है। नेपाल धरती में बाबा की सेवा निरन्तर वृद्धि को प्राप्त करे, ऐसी आप की दिल की भावना है। नेपाल में खास नारायणगढ़ सेवा केन्द्र के रजत जयन्ती सेलिब्रेशन पर आपका आना हुआ। बहुत बड़े प्रोग्राम के बीच दादी जी ने सिल्वर जुबली समारोह का उद्घाटन किया था।

मेरा विशेष अनुभव है कि दादी के प्रभावशाली वाणी ने अनेक वीआईपी एवं समस्त ब्राह्मण परिवार को भी जीवन के हर मोड़ पर आने वाली परिस्थिति और समस्याओं के बीच स्वस्थिति को प्राप्त कर धैर्यवत, अचल, अडोल बनकर प्रतिकूल परिस्थिति को समाधान करने की प्रेरणा एवं शक्ति प्राप्त हुई।

हमारे दिल में दादी जी के प्रति अथाह सम्मान है कि उनका सानिध्य सदा हमें मिलता रहे। उनकी पर्सनालिटी से सबको महान जीवन बनाने की प्रेरणा मिलती रहे। जैसे दादी जी इतने बड़ी आयु में भी मग्न मस्त रहती हैं, वैसे सभी की स्थिति बने।

बापदादा समान दादी अब ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं। उनके तपोबल, योगबल, पवित्रता के बल से यज्ञ की कारोबार सकुशल अनवरत चल रही है। आपके द्वारा सब कुछ बाबा करा रहे हैं। आपकी उपस्थिति यज्ञ एकता के लिए, संगठन को मजबूत और अखंड रखने के लिए आवाश्यक है। अतः दिल की भावना रखती हूं कि दादी की आयु लम्बी हो, स्वस्थ जीवन हो, आप की तपस्या का सभी को लाभ मिलता रहे। यही शताब्दी वर्षगांठ की फिर से शुभ बधाई हो, बधाई हो।

अनुभव

सेवा और स्व पुरुषार्थ का बैलेंस है

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शीला दीदी, ब्रह्माकुमारीज़, गुवाहाटी



जब मैं दस वर्ष की थी तब पहली बार दादी रतन मोहिनी जी से मुलाकात हुई। उस समय दादीजी का कोलकाता आना हुआ और उनका प्रथम प्रवचन सुनने का मौका मिला, तब से ऐसा अनुभव हुआ कि दादी जी से मेरा पुराना परिचय, संबंध है। तभी से मैं शिव बाबा की बन गई और प्रतिदिन सेवाकेंद्र पर आने लगी। दादी जी के मीठे बोल, स्नेहमयी दृष्टि और प्रेमपूर्वक व्यवहार ने बहुत ही आकर्षित किया।

दादी जी का जैसा नाम है रतन मोहिनी वैसे ही आप ज्ञान रत्नों की खान हैं और अपनी मधुर वाणी, व्यवहार, नम्रता से सभी का मन मोह लेती हैं। दादी जी का असम की राजधानी गुवाहाटी में आना हुआ। वहां कई स्थानों पर युवा प्रभाग के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें दादीजी ने युवाओं में बहुत ही उमंग-उत्साह भर दिया। आपका ओजस्वी प्रवचन सभी का मन मोह लेता था। जब आप संबोधन शुरू करतीं तो कार्यक्रम में मौजूद लोग एकटक सुनते रह जाते थे। साथ ही ब्रह्माकुमारी परिवार के भाई-बहनों ने भी योग-तपस्या के प्रति सदा ही आपने बहुत उमंग भरा है। सबको बाबा की शिक्षाओं का पूरा पालन करने और यज्ञ की मर्यादाओं का अक्षरश: पालन करने के लिए आप सदा ही प्रेरित करती रहीं हैं। आपके जीवन से सीख मिलती है कि कैसे सेवा और स्व पुरुषार्थ का बैलेंस बना सकते हैं।

सीख

दादी का संदेश-आचरण ही उपदेश है

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शुक्ला दीदी, निदेशिका, दिल्ली हरिनगर सबजोन



रतन मोहिनी दादी का जीवन स्वच्छ दर्पण की तरह है। आप सदा ही उमंग उत्साह में रहने वाली युवा शक्ति महान है। आज आप 100 वर्ष की होने जा रही हैं। परंतु आपको देखने से ऐसा अनुभव होता है कि आप एक होवनहार युवा शक्ति हैं। आप सदा ज्ञान, गुणों और शक्तियों से खुद को भी श्रृंगारित करती रहती हैं और हम सबको भी रूहानी आभा से भी सजाती रहती हैं। शुरू से लेकर यज्ञ सेवाओं में भी आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है। बाप दादा का संदेश देने के लिए देश-विदेश में भ्रमण करती रहती हैं। आप सदा ही व्यक्तिगत आत्मसात करने के और दिव्य गुणों की विभूति बनने के पुरुषार्थ में तत्पर रहती हैं। सबको भी यही प्रेरणा देती हैं कि आत्मसात करने के लिए या ईश्वरीय संबंधों का रस्सा स्वाद करने के लिए अंतर्मन में चले जाओ। जितना अंतर्मन में जाएंगे उतना ही आपका मनोबल भी बढ़ेगा और ज्ञान, गुणों और शक्तियों से संपन्न होंगे। जब भी हम दादी जी से मिलते हैं उनकी रूहानी दृष्टि, मुस्कुराता हुआ चेहरा और बोल यही प्रेरणा देता है कि गुलाब की तरह खिले भी रहो और खुशबूदार भी बनो। आप सदा ही रूहानियत की आभा से ओतप्रोत रहती हैं। आप हम सबकी ट्रेनिंग टीचर भी हैं और आपने अपने जीवन की धारणा से यही शिक्षा दी हैं कि आचरण ही उपदेश है। जीवन ही संदेश है और धर्म ही धारणा है।

जब दादी से मिली सीख

ज्ञान के नवरत्नों में से एक साकार रत्न हैं दादी

राजयोगी ब्रह्माकुमार बसवराज राजऋषि, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक,हुबली सबजोन

हीरा केवल रोशनी में ही चमकता है। रत्न की विशेषता यह है कि वह अंधेरे में भी रोशनी देता है, वह स्वप्रकाश सहित है। प्राणप्यारे बापदादा ने दादी जी को रतन मोहिनी कहके नामकरण किया था। रत्न का स्वतंत्र प्रकाश होता है और यह नवरत्नों में से एक है। दादी रतन मोहिनी जी का आदर बहुत से ज्ञानी-जन और भक्तजन भी करते हैं। और उनसे बहुत प्यार भी करते हैं। सर्वप्रिय दादी जी अपने विशेष दैवी मूल्यों से, दैवी मर्यादाओं से, ज्ञान सौरभ से सर्व को अपनी ओर आकर्षित करने वाली ज्ञानरत्न हैं, गुणरत्न हैं।

ज्ञान के नवरत्नों में से एक साकार रत्न भी हैं। दादी जी में जो निर्णय शक्ति है, वह बिल्कुल निर्मल, निश्चल, निष्पक्षपात् और अपूर्व है। जब से मैं मधुबन जा रहा हूँ। तब से साकार में उनके संबंध-संपर्क में रहा हूँ। कन्याओं को यज्ञ में समर्पित कराने वाली दादी जी को मैं हुबली सबजोन की ओर से समर्पित होने वाली कन्याओं का परिचय और उनकी विशेषताओं का परिचय कराता था। जब भी सेवाकेन्द्र और उप-सेवाकेन्द्र की स्थापना करनी होती थी तब दादी जी उन स्थानों का परिचय और विशेषताओं के बारे में पूछकर ही प्रमाण पत्र देती थीं। दादी जी ने एक बार मुझसे पूछा – बसवराज भाई, आपको केवल हस्ताक्षर करना आता है या पढ़ना भी आता है? क्योंकि एक उप-सेवाकेन्द्र के फार्म पर मैंने हस्ताक्षर किया था। परन्तु वह फार्म अपूर्ण था, पता आदि का विवरण नहीं था। निमित्त टीचर्स बहनों ने मुझसे यह कहके हस्ताक्षर करवाया था कि हम बाद में फार्म पूरा भर देंगे। मगर उन टीचर्स बहनों ने उस फार्म को पूरा न भरके ऐसे ही दादी जी को भेज दिया था। तब मैंने जो घटना घटी थी, उसे पूरा सुना दिया। तब दादी जी ने प्यार से शिक्षा दी कि किसी पर जिम्मेवारी देकर हस्ताक्षर नहीं



करने हैं। तब से मैंने उस शिक्षा को जीवन में धारण कर लिया है। भारत में पहली बार कर्नाटक सरकार की ओर से स्कूल टीचर्स और स्नातक पूर्व कॉलेजों के प्राध्यापकों को मूल्य शिक्षा के 21 दिन का कोर्स यल्लापुर में प्रारंभ किया गया था। तब हमने दादी जी को उस कार्यक्रम के लिए निमंत्रण दिया था। दादी जी ने कहा था - मुझे अब और कोई कार्यक्रम है, इस बार मैं नहीं आ पाऊंगी, अगली बार तो जरूर आऊंगी। एक बार मैं मधुबन में दादी जी से मिला, तब दादी जी ने पूछा - अब नया क्या किया है? दादी जी को मैंने ईश्वरीय पढ़ाई का लक्ष्य और उद्देश्य नामक पुस्तक भेंट में दी। दादी जी ने पूछा यह क्या है? मैंने कहा दादीजी इसमें 21 पीढ़ी की राजाई और पद का विवरण है। दादी जी ने पुस्तक पढ़कर बहुत ही खुशी का अनुभव किया और आश्चर्य भी व्यक्त किया। फिर एक बार हमने दादी को हुबली आने के लिए निमंत्रण दिया था।

दादी की पालना

सदा हमें जीवन में आगे बढ़ाया

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चक्रधारी दीदी, अध्यक्षा, महिला प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

एक समय था जब इस दिव्य गुलशन में दादियों की चहक-महक और रौनक थी। हर तरफ मधुर मुस्कान से रुहानियत की खुशबू से ये बगिया की शोभा को चार चांद लगाती थीं। आज एक न्यारा और प्यारे पुष्प के रूप में हमारे बीच अतिप्रिय आदरणीया राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी हैं। आप शतायु वर्ष में प्रवेश करने के बाद भी आज अपनी दिव्य आभा और मुस्कान से सभी के मन को मोह लेती हैं।

मैं अपने आध्यात्मिक जीवन के प्रारंभ से ही दादीजी को जानती हूं। वे हमें यज्ञ की कहानियों से और निजी अनुभवों से पालना देती हुई हमें सदा आगे बढ़ाने की कोशिश में रहीं। अधिकतर अपने सारे काम काज से फारिक होकर रात्रि 10 बजे के बाद, हमें लेकर बैठ जातीं और 12 बजे तक चाहे हमें निद्रा भी घेरती, फिर भी हमें रुहानी पाठ पढ़ाने में कभी चूकती नहीं थीं। ऐसी आदर्श प्यारी दादी की पालना क्या हम कभी भूल सकते हैं? दादी जी हम बहनों को एक-एक बात सिखाती थीं कि आपको कैसे ज्ञान सुनाना है, कैसे भाई-बहनों की पालना करनी है। दादीजी का ज्ञान बहुत गहराई पूर्ण और तार्किक होता है।

हमें योग्य बनाए बाबा से मिलने भेज देती और बाबा हमें कई बार दिव्य साक्षात्कार में जाने वाले अनुभवी जान बहुत पालना देते और हम पर अमूल्य समय भी लगाते। ये सब हमारी आदरणीया रतनमोहिनी दादी जी के अलौकिक दिव्य ज्ञान रत्नों से सजाने का परिणाम ही तो था। दादी जी का पूरा ही जीवन आदर्श ब्रह्माकुमारी, श्रेष्ठ प्रशासक, प्रखर वक्ता के रूप में रहा है। आपने अपने जीवन से, कर्म से श्रेष्ठ और महान कर्मों की एक नई लकीर खींच दी है। जिस पर



चलकर हम अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। खुद को भाग्यशाली समझती हूं कि मुझे दादी का सान्निध्य मिला। दादीजी से जीवन में बहुत कुछ सीखा है, जाना है।

दादी जी आपकी आयु शत वर्ष नहीं शत-शत वर्ष हो यही हमारी शुभ मंगल कामना है। आपके यह पल हमारे साथ हमेशा बने रहे. कभी हमारी पलकों से ओझल ना हो जाए ऐसी हमारी मंगल कामना है। लीला बहन और अन्य बहनें आपकी पलना में पलती हुईं आपका हर प्रकार से ध्यान देती हैं तो हमें बहुत खुशी होती है। धन्यवाद है मेरी प्यारी बहनों, ऐसे अनमोल हीरे की संभाल का आपको सौभाग्य मिला है।

राजयोगी ब्रह्माकुमार शांता कृष्णा भाई, पैड ऑफिस, शांतिवन

दादी ने यज्ञ सेवा से जुड़ी हर जिम्मेदारी को बखूबी निभाया



आदरणीया राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी के साथ वर्षों से सेवा प्रदान करने का परम सौभाग्य मुझे मिला है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा सभी तरह का ऑफिशियली कारोबार दादी ही संभालती हैं। शुरू से ही यज्ञ से जुड़ा कोई काम रहा हो, सभी दादियां दादी रतन मोहिनी के पास ही भेजती थीं और उनका मार्गदर्शन जरूर लेती थीं। दादी ने हर पल हमारा मार्गदर्शन किया।

दादी एक आदर्श शिक्षिका के रूप में हर बात को बहुत बारीकी से सिखाती हैं। इसी तरह दादी एक बेस्ट स्टूडेंट भी हैं। उनकी डायरी को देखकर हम जान सकते हैं कि कैसे दादी एक-एक बात को नोट करती हैं। जिस कार्य से जुड़ी बात हो वह उस डायरी में नोट करती हैं। लिखने में भी सिंधी भाषा में भी क्वालिटी है एक दम हमको प्रिंट जैसा और एक जगह में भी काट-पीट नहीं रहता है तो इससे मुझे भी सीखने को मिला। किसी का भी हैंडराइटिंग देखते ही उसका करेक्टर हम एनालिसिस कर सकते हैं। बाबा ने दादी को यह कार्य सौंपा क्योंकि ये क्वालिटी कि कोई भी कार्य दिया जाए तो कैसे उसको संपन्नता तक लेकर जाना है।

एक बार राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी बोल रहे थे कि किसी व्यक्ति को काम दिया जाए वह काम अधूरा छोड़ दे, उसका नाम मैं बोलूं? बोलूं? दादी प्यार से पूछती थी उसका नाम बोलूं? एक टाइटल बाबा ने दिया है मैं बोलूं ? उसको अनाड़ी बोलते हैं। माना कोई भी काम दिया उसको अधूरा छोड़कर दूसरा काम में बिजी हो जाए। तो ऐसा दादी के लिए कभी सोच भी नहीं सकते। कोई भी कार्य जो दादी को सौंपा दादी अंत तक उसको संपन्न बनाने तक पूर्ण रीति से अंत तक करती थीं। साथ ही उस कार्य को परफेक्शन के साथ करतीं थीं। यह विशेषता सदा दादी जी से सीखने को मिली है।

खुद को सदा मानती रहीं हैं छोटा



मैं बड़ी हूं ऐसा दादीजी ने कभी भी शो नहीं किया है। बड़े जो बोलेंगे तो मैं करूंगी नहीं तो नहीं। हम कहें दादी आप भी बड़े हैं न । लेकिन नहीं कोई ना कोई बड़ा बोलना चाहिए। कोई बड़ा कहे तो उसको करें, बाकी मैं बड़ी हूं तो मैं कर सकती हूं ऐसे करके कोई कार्य करूं वह बात ही नहीं । बचपन से लेकर दादी जब यज्ञ में आई थीं हमेशा कहती मैं छोटी हूं। सभी दादियों के सामने भी छोटी। अभी भी अपने आप को छोटी ही समझती हैं। यह विशेषता बाबा ने दादी के अंदर देखा।

बाबा ने हर बात में दादी को आगे रखा और यह सवाल बहुत अच्छा था कि बाबा ने दादी को बहनों की जिम्मेवारी लेना,एचआरडी या पर्सनल है, तो इन सब के बारे में दादी कहीं भी जाकर पढ़ कर नहीं आईं लेकिन दादी का जो लिखने का तरीका, डेवलपमेंट करने का, एनालिसिस करने का तरीका, फिर कौन सी बात को किस तरह से प्रस्तुति देना है, कौन सा शब्द यूज करना है या नहीं सभी दादी के अंदर था।

दादी के अंदर बहनों के प्रति बड़ा सम्मान था। व्यक्ति और उसके लाइफ के प्रति दादी बहुत रिस्पेक्ट देती हैं। एक-एक व्यक्ति को भी बहुत रेस्पेक्ट भले किसी के अंदर कोई गुण ज्यादा रहता है, कोई कम रहता है। उसको सूक्ष्मता से समझने के लिए कौन सी युक्ति चाहिए वह दादी के अंदर थी। इसीलिए शुरू से ब्रह्मा बाबा के साथ स्टेज पर भी बैठती थी। बाबा ने उनको निमित्त बनाया। दादी ने पूरे जीवन अपनी सोच, कर्म व्यवहार से नजीर पेश की है। दादी का छोटे से लेकर बड़ा हर कर्म उदाहरणमूर्त रहा है। एक आदर्श व्यक्तित्व के उनके अंदर सारे गुण हैं।

जीवनभर बाबा के बनाए नियम-मर्यादाओं का पालन किया

राजयोगी ब्रह्माकुमार ललित भाई,
चार्टर्ड एकाउंटेंट,
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन



दादी जी ईश्वरीय नियमों, मर्यादाओं में अपने को बहुत चुस्त रीति से चलाते रहे हैं और हर सम्भव प्रयास करके उनका पालन करते थे। मुझे याद है आज भी मैं जब दादी जी से मिलता हूं, तब वो घटना मेरे मानस पटल पर आ जाती है।

बात वर्ष 2009 की है, जब पांडव भवन (माउंट आबू) ओम शांति भवन में उन दिनों दादी जी प्रातः मुरली सुनाते थे। उन्हीं दिनों में दादी जी की आंख' का ऑपरेशन हुआ था और दादी जी काला चश्मा पहनते थे। ऑपरेशन के कारण डॉक्टर ने उन्हें पढ़ने के लिए थोड़े दिनों के लिए मना किया था तो शशि दीदी जी ओम शांति भवन में मुरली सुना रहे थे। हमने देखा कि आदरणीया दादी जी ओम शांति भवन में आए और जहां हम सब स्टूडेंट बैठते हैं, वहां आगे आकर प्रथम पंक्ति में स्थान ग्रहण किया। शशि दीदी जी ने उन्हें आदरपूर्वक स्टेज पर आने का निमंत्रण दिया, पर दादी जी बोले आप मुरली पढ़िए मैं यहीं बैठ कर सुनूंगी। दादी जी ने पूरी मुरली सुनी। मुरली क्लास पूरी हुई और दादी जी पांडव भवन में अपने ऑफिस में जाकर बैठे। मुझे भी कुछ सेवार्थ दादी से मिलना था। तब मैंने दादी जी को एक प्रश्न पूछा। मैंने कहा साकार ब्रह्मा बाबा ने जब यह मुरली चलाई, तब भी आपने बाबा के स्वमुख से यह मुरली सुनी थी। उसके बाद कई बार ये मुरली रिपीट हुई है तब भी आपने ये मुरली खुद पढ़ी है। आज आपकी तबीयत तंदुरुस्त न होते हुए भी आप इतना जल्दी तैयार होकर हॉल में आकर मुरली सुन रहे हैं। इसके पीछे कारण क्या है? आप चाहते तो अपने ऑफिस में बैठकर, रूम में भी स्पीकर पर सुन सकते थे? तब दादी जी ने बताया कि बाबा ने जो मुरली क्लास में मुरली सुनने का नियम बनाया है, उसके पीछे भी बहुत बड़ा राज है और वह नियम पालन करना भी बहुत जरूरी है। अगर आज मैं मन को बहाना दूंगी कि चलो मेरे आंखों का ऑपरेशन हुआ है तो में दो-तीन दिन क्लास में नहीं जाऊं तो चार दिन बाद मन अपने आप ही दूसरा कोई बहाना ढूंढ लेगा कि आज रात को देर से सोई लेट हो गई, मुरली क्लास में नहीं जाते हैं, आज थोड़ा बुखार लग रहा है, क्लास में नहीं जाते हैं। इस प्रकार ये मन को कोई न कोई बहाना मिल जाएगा और मुरली मिस करते रहेंगे। अतः हमें नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन उन नियमों पर चलना चाहिए, मन को कोई बहाना ढूंढने का मौका नहीं देना चाहिए, नहीं तो मन की एक बार खिड़की खुलती है तो दरवाजे खुल जाते हैं और नियमों मर्यादाओं की अवज्ञा होना शुरू हो जाती है। दादी जी स्वयं नियमों पर चलकर उदाहरण प्रस्तुत किया है कि इस ज्ञान मार्ग में आंगे बढ़ना है, आत्मा को सम्पूर्ण सतोप्रधान बनाना है तो सभी नियमों को, मर्यादाओं को अच्छी तरह से हमें अपने जीवन मे पालन करना होगा।

जब दादी ने 20 हजार की सभा को शांति की अनुभूति कराई

राजयोगी ब्रह्माकुमार प्रेम भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक,
ब्रह्माकुमारीज़, गुलबर्गा

मैं ज्ञान में वर्ष 1969 में आया। 1969 में ही गुलबर्गा में केंद्र का शुभारम्भ हुआ। 1973 तक मुरली बैंगलुरु से मिलती रही। 1974 में मैंने प्रकाशमणि दादी के पास मुरली की बात रखी तो दादी जी ने पांच की चिटकी दे रही थी। उसी समय दादी रतनमोहिनी आईं और कहा कि यह तो हमारा डिपार्टमेंट है तो बड़ी दादी ने कहा कि इसको मालूम नहीं है? यहां से दादी रतनमोहिनी से पहचान हो गई। उसके बाद दादीजी के स्नेह के कारण गत 30-35 वर्षो से केंद्र व उपसेवाकेंद्र की सर्टिफिकेट गुलबर्गा से प्रिंट होती रही हैं। दादीजी ने गुलबर्गा की दो कन्याएं बीके लक्ष्मी एवं बीके सरस्वती आज उनके साथ यज्ञ सेवा में उपस्थित हैं।

वर्ष 2003 में गुलबर्गा में मेगा प्रोग्राम और लातूर सेवाकेंद्र के नए भवन के उद्घाटन के लिए दादी जी का आना हुआ। करीब 20 हजार की सभा के बीच दादी जी ने अद्भुत शांति का अनुभव कराया। वर्ष 2011 में पांच एकड़ में बनने जा रहे अमृत सरोवर रिट्रीट सेंटर के शिलान्यास के कार्यक्रम में भी दादी जी का आना हुआ।

2014 में गुलबर्गा विश्व विद्यालय द्वारा आदरणीया दादी जी को डॉक्टरेट की मानद



उपाधि से सम्मानित किया गया। साथ में दादी जी ने अमृत सरोवर परिसर के फेस का उद्घाटन भी किया। इस प्रकार शतायु दादी जी का स्नेह बना रहा है। सभी वरिष्ठ दादियों में दादी रतन मोहिनी ही हमारे बीच आधार स्तंभ के रूप में दैवी स्वरूपा हैं। आपकी उपस्थिति मात्र ही हमारे लिए सम्मान, गर्व का विषय है। आपका पूरा जीवन त्याग-तपस्या और सेवा की मिसाल रहा। धन्य है हम ऐसी दादी मां का सान्निध्य पाकर।

पर्सोनल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट (पेड) टीम

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में समर्पित ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के समर्पण की प्रक्रिया के लिए पर्सोनल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट (पेड)बनाया गया है। इसमें प्रत्येक भाई-बहन की संपूर्ण जानकारी होने के साथ देश-विदेश में स्थित सेवाकेंद्रों का रिकार्ड मैंटेन किया जाता है। नए सेवाकेंद्र की स्वीकृति प्रदान की जाती है। यहां से सभी को आई कार्ड जारी किए जाते हैं। इसकी जिम्मेदारी भी दादी रतन मोहिनी संस्थान के स्थापना से लेकर आज तक निभा रहीं हैं।











दादी की महिमा में कविता-

पावनता की देवी हो, ममतामयी मां की मूरत हो...

सबसे बड़े साहब की लाड़ली!
सबसे बड़े साहब की लाड़ली साहबजादी है
ज्ञान रतन से मोहती रतन मोहिनी दादी हैं
दादियों में इकलौती न्यारी प्यारी दादी हैं
मत पूछो अनमोल हमारी कितनी प्यारी दादी हैं।

बसे धरा पर स्वर्णिम भारत दैवी राजस्थान अपना
एक बने सब नेक बनें यही विश्व एकता का सपना
महायज्ञ में स्वाहा होना सबको सिखाती दादी हैं।

सपने वो नहीं जिनको देखते हैं सोते-सोते
सपने वो होते जो हमको चैन से ना सोने देते
स्वर्णिम युग को रचने वाली स्वप्नदर्शी दादी हैं।

हिम्मत सदा जवां रखती युवाओं की दादी युवा
ज्ञान गुण शक्तियों से भरती हर दिल देता तुम्हें दुआ
सेंचुरी पार करने वाली चिरायु अपनी दादी हैं।

राजयोगिनी डॉ. दादी रतन मोहिनी जी का
मना रहे मंगल महोत्सव जन्म शताब्दी का
कि युग-युग जीती रहो, वो दादी अमर रहो
सभी मिल यही कहो, वो दादी अमर रहो।

आदि रतन हे वरदानी वरदाता से वरदान लिया
ज्ञान रत्न खान लुटाते जीवन आलीशान किया
विश्व के कल्याण लिए स्वयं का बलिदान किया
प्रभु गुणगान किया कभी नहीं अभिमान किया
ज्ञान गंगा योग यमुना रूप है महा नदी का।

पावनता की देवी हो, ममतामयी मां की मूरत हो
आस्था के शिखर पे हो आज की बड़ी जरूरत हो
अगणित युवाओं की प्रेरणा शिक्षाओं की सूरत हो
समय, सांस, संकल्प से दादी तुम सतत सेवारत हो
शिव शक्ति हो, देवी हो, तुम मानवता की मसीहा हो।

युगों-युगों में धरती पर ऐसी विभूतियां आती हैं
मरणासन्न मानवता में नया प्राण भर जाती हैं
दसों दिशाएं झूम रही हैं, देव फरिश्ते गा रहे हैं
परमात्मा भी प्रसन्न होकर प्रेम पुष्प बरसा रहे हैं
मंदिरों में गूंज रहा जयकारा शिव शक्ति का।

सौ साल की कहानी वाह-वाह जिंदगानी!
जग में जिएं तो ऐसे जन-जन की है जुबानी
विश्व वंदनीया दादी जी पलकों में हमें पालती
अपनी दादी हो गई हैं पूरे ही सौ साल की
वाह-वाह दादी वाह रे दादी सेवा बेमिसाल की
तुमने तो कमाल की तुम तो हो कमाल की।

अल्पायु में ही मां संग तुम ओम मंडली आईं
दादा के द्वारा शिव की वरदानी दृष्टि पाई
ज्ञान रत्नों से मोह लेना रहा शुरू से काम यही
रतन मोहिनी बाबा ने दिया अलौकिक नाम तभी
रत्नों की खान रत्न लुटाते विश्व को मालामाल की।

ओ आदिरत्न शिव शक्ति नहीं तुम सा हमने देखा
ब्रह्मा बाबा के संग में लिखती हो भाग्य लेखा
प्रेरक नेतृत्व देकर नेतृत्व करना सिखाया
अध्यात्म से जोड़ युवा का जीवन दिव्य बनाया
सात समंदर पार भी जाकर सबको खुशहाल किया।

हे पावनता की देवी! सबका भला ही चाहा
विश्व एकता यज्ञ में संपूर्ण हो गई स्वाहा
हैं धन्य अपनी आंखें देखें मुस्कान लुटाती
मंदिर वाली देवी को साक्षात धरा पर पाती
दुआ है नजरें रहें ये हम पर जिन्होंने जग को निहाल की।

ओ दादी शताब्दी बधाई हो!
चमन के फूल गा रहे सितारे गुनगुना रहे
सौ-सौ बसंत की सदी बधाई हो बधाई हो
ओ दादी ये शताब्दी बधाई हो बधाई हो।

आदर्श हो पावनता की, सेवा की मानवता की
युवा हो तुम युवाओं की धड़कने दुआओं की
तपस्वी तुम, मनस्वी तुम, ओजस्वी हो, तेजस्वी तुम
यशस्वी यश फैला रही बधाई हो बधाई हो
ओ दादी ये शताब्दी बधाई हो बधाई हो।

बाबा है कमाल का तो दादी तुम कमाल की
सौ बरस की जिंदगी गजब की बेमिसाल की
दानी हो वरदानी हो कल्याणी महाज्ञानी हो
ब्रह्म पुत्र महानदी बधाई हो बधाई हो
ओ दादी ये शताब्दी बधाई हो बधाई हो।

शमा यूं ही रोशन रहे महफिल ये सजती रहें
परवाने कह रहे मचल आंखें सदा हंसती रहें
रतन से मोहती रहो युवा सी सोहती रहो
दिलों की है दुआ यही बधाई हो बधाई हो
ओ दादी ये शताब्दी बधाई हो बधाई हो।

दादी रतन मोहिनी प्यारी!
याद करें सब प्रभु को पर प्रभु याद उन्हें करते हैं।
विश्व सेवा में स्वयं को जो बलिहार किया करते हैं।।

भगवान भी गुणगान करे वो इक विभूति है न्यारी
वो शिव शक्ति अवतारी दादी रतन मोहिनी प्यारी
ऐसी वो दादी हमारी।।

स्वर्णिम सृष्टि सृजन हेतु निराकार हुए साकार
नारी को शिव शक्ति किया, लिया ब्रह्मा तन आधार
रतन पारखी ने नजरों से जिनकी सूरत संवारी।।

ज्ञान, गुण, शक्ति की मूर्ति जीभर जिनको पूजा
यही देवियां मंदिरों वाली और न कोई दूजा
दर्शन कर लो, झोली भर लो यही असुर संघारी।।

विश्व एकता महायज्ञ में जो हो गईं बलिहार
त्याग, तपस्या, सेवा से करती सबका श्रृंगार
शताब्दी की बधाइयां दीर्घायु हो दादी तुम्हारी।।

ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया





100 शताब्दी की प्रकाशमय विरासत

राजयोगिनी डॉ. दादी रतनमोहिनी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

जीवन यात्रा... 1925 से अब तक का दिव्य सफर



प्रकाशक : ब्रह्माकुमारीज़, शिक्षा प्रभाग, शांतिवन, तलहटी, सिरोही, राजस्थान- 307510

मुद्रक : न्यू ज्ञानामृत प्रेस, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान- 307510

WWW. brahmakumaris.com